मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई – पत्रिका

वर्ष:3 । अंक:15 । पृष्ठ:44 । मूल्य:निःशुल्क । इंदौर–उज्जैन । रविवार 1 अक्टूबर 2023 । आश्विन (क्वॉर) / कार्तिक मास (8), विक्रम संवत् 2080 । इ.संस्करण

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय (हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)

सम्पादक
डॉ. अलका शर्मा (दिल्ली)

उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

• गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
• पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
• समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादक की कलम से	डॉ. अलका शर्मा	03
2	रक्तदान महादान	श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा	06
3	यह भारत देश है मेरा!	डॉ. सन्तोष खन्ना	09
4	अंग्रेजों की आँख में धूल...	आकांक्षा यादव	13
5	हे रघुनाथ राम रघु कुलमणि	डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक	15
6	पर्यावरण चिन्तन 9	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	16
7	कर्म योगी कृष्ण	डॉ. अलका यतींद्र यादव	17
8	प्रगटे कंस निकन्दन	ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र	18
9	सभ्यता संस्कृति एवं विरासत का...	कृष्ण कुमार यादव	19
10	बेटी कभी न बोझ	प्रो. डॉ. आरद नारायण खरे	22
11	शक्ति आराधना का पर्व नवरात्रि	डॉ. अर्चना प्रकाश	23
12	प्रेरणादायी प्रस्तुतीकरण के...	डॉ. अजय शुक्ला	26
13	भीड़ लघुकथा	श्रीमती शोभा रानी तिवारी	28
14	विजयोत्सव का पर्व विजयादशमी	सुजाता प्रसाद	29
15	सामाजिक संपर्को का महत्त्व	भावना दामले	31
16	लंदन मेरी दृष्टि में	डॉ. अलका शर्मा	33
17	मेड़ता की मीरा	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	36
18	रखवाली (लघुकथा)	दया शर्मा	37
19	राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार...	श्रीमती शांति तिवारी	38
20	चरित्र एक सर्वोच्च संपदा	योगी शिवनन्दन नाथ	39
21	लोभ पाप का बाप हैं	डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)	40
22	माँ पीतांबरा पीठ (दतिया) दर्शन	मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	42
23	गीत	भीम सिंह नेगी	43
24	बहकते कदम	मधुबाला शांडिल्य	44

संपादक की कलम से

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

ये लहर है बदलाव की
ये समय है भारत के स्वर्णिम अतीत के पहचान की।
आज छोड़ दिये हमने चाँद परअपने निशां।
चाँद पर जाकर लिख दिया
जय हिंदुस्तान
आज हम जहाँ खड़े है
अब वही से ही सब कुछ होगा शुरू
भारत अब बन चुका विश्व गुरु।

भारत द्वारा G-20 की अत्यंत कुशलता के साथ की गई अध्यक्षता के दौरान विश्व के राष्ट्राध्यक्षो को भारत के गौरवशाली अतीत से जिस आत्मविश्वास व दक्षता से परिचित कराया गया ।उस पर प्रत्येक भारत वासी गौरवान्वित महसूस कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के नेतृत्व में विश्व की महा शक्तियों के विचार मंथन से समूचे विश्व को एक नई दिशा देने में भारत सफल रहा ।

युद्ध कि विभिषिका से जूझते हुए राष्ट्रों के समक्ष महात्मा गांधी के द्वारा बताया गया मार्ग ही एकमात्र प्रशस्त मार्ग है। दूसरी ओर युद्ध की कगार पर खड़े राष्ट्रों के लिए महात्मा बुद्ध व गांधी के द्वारा बताया गया अहिंसा का मार्ग आज भी कितना प्रासंगिक है व मानवता के अस्तित्व को बचाये रखने का एक मात्र विकल्प है। इसी के माध्यम से भारतीय संस्कृति की धमक सम्पूर्ण विश्व में सुनाई पड़ी।

आज इसी कारण भारत समूचे विश्व की आंख में आंख मिलाकर बात करके अपना स्पष्ट संदेश देने में कैसे सक्षम है। अब सभी जान चुके है। मोदी के नेतृत्व मे चाँद पर चंद्रयान 3 के सफलता पूर्वक प्रक्षेपण से विश्व मे भारत का यशोगान होना, G-20 की सफलतापूर्वक अध्यक्षता के दौरान अपने कुशल नेतृत्व का लोहा मनवा लेना, चिरप्रतीक्षित महिला आरक्षण बिल को निर्विवाद पास करवाकर महिला सशक्तिकरण के स्वप्न को हकीकत में बदल देना कुल मिलाकर अपार उपलब्धियों से भरे इस समय के बाद- अक्टूबर मास का प्रारंभ महान विभूतियो की जयंती उत्सवो, भारतीय संस्कृति के मुख्य पर्वो से हो रहा है।

2 अक्टूबर सत्य व अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जयंती के रूप में तो मनाया ही जाता है इस दिन को। 'विश्व अहिंसा' दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। आज ही के दिन स्वतंत्र भारत के दूसरे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती का पर्व भी है। उनकी स्वच्छ छवि, सादगी, देशभक्ति, ईमानदारी के लिए शास्त्री जी को मरणोपरांत 'भारतरत्न' देकर सम्मानित

किया ।

नभः स्पर्श दीप्तम अर्थात (Touch the sky with Glory) यह वायुसेना का आदर्शवाक्य है।

8 अक्टूबर को वायुसेना की स्थापना हुई थी इसी कारण ये दिन वायु सेना दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन भव्य परेड का आयोजन किया जाता है। आकाश में वायु सेना का शक्ति प्रदर्शन किया जाता है।

12 अक्टूबर विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के वैश्विक स्तर पर अभियान चलाए जाते है। वैश्विक स्तर पर यह पाया गया कि काम काज के दबाब के कारण, जीवन की आपाधापी, जीवन स्तर को उन्नत बनाने के लिए नैतिकता को ताक पर रखकर धनोपार्जन करने के कारण हर 20 में से 1 व्यक्ति टेंशन डिप्रेशन या अन्य मानसिक बीमारी से पीड़ित है।

14 अक्टूबर पितृ मोक्ष अमावस्या है। भारतीय संस्कृति में पितृ पक्ष का बड़ा ही महत्व है। इन 15 दिनों में अपने पूर्वजों के निमित्त श्राद्ध तर्पण, पिंड दान आदि करना सभी के लिए अनिवार्य माना गया है। ताकि प्रसन्न व तृप्त पितृगण आशीर्वाद की वर्षा करें। पितृ पक्ष का समापन पितृ मोक्ष अमावस्या को होता है।

15 अक्टूबर से संपूर्ण ब्रह्मांड की अधिष्ठात्री, शक्ति स्वरूपा देवी भगवती के नवरात्रि का महापर्व प्रारम्भ होगा। जिसे देवी के चिंतन, मनन स्मरण द्वारा अपनी चेतना को ऊर्ध्वगामी बनाने का सर्वोत्तम समय माना जाता है।

24 अक्टूबर को अधर्म पर धर्म, असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक विजयदशमी का पर्व मनाया जाएगा। जो आज भी हमे यही याद दिलाने के लिए मनाया जाता की अधर्म असत्य, झूठ, फरेब, धोखाधड़ी का साम्राज्य कितना ही विशाल क्यों हो, उसका अंत निश्चित है। जिस प्रकार राम के हाथों महा- अहंकारी लंकापति रावण का अंत हुआ।

28 अक्टूबर को हिन्दू धर्म के विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ रामायण के रचनाकार महर्षि बाल्मीकि जयंती का पर्व मनाया जाएगा। सम्पूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय ऐसे उच्च कोटि के ग्रंथ रामायण की रचना के लिए महर्षि बाल्मीकि को कोटि कोटि नमन।

31 अक्टूबर को स्वतंत्रता प्राप्ति हेतू देशव्यापी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले लौह पुरुष सरदार पटेल की जयंती का पर्व मनाया जाएगा। सरदार पटेल स्वतंत्र भारत के उप प्रधानमंत्री, प्रथम गृह मंत्री, सूचना मंत्री, व रियासत विभाग के मंत्री पद पर भी आसीन रहे। उन्होंने 562 छोटी रियासतों का भारतीय संघ में विलय करके भारतीय एकता का निर्माण करने जैसा असाधारण कार्य किया था।

पत्रिका के हर अंक में हम जनमानस को आध्यात्म की ओर दो कदम आगे ले जाने के लिए कटिबद्ध हैं। अतः विभिन्न पर्वो, जयंती व उत्सवों की जानकारी से भर-पूर अक्टूबर मास का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। खुशी के इन क्षणों में मैं उन सभी विद्वानों विदुषियों का आभार व्यक्त करती हूं जिन के रोचक लेखों के सहयोग से पत्रिका मूर्त रूप ले सकी। आशा है कि भविष्य में भी आप सभी सुधी जनों का स्नेह पत्रिका के प्रति सदैव बना रहेगा।

संपादक

-डॉ. अलका शर्मा

आपकी प्रतिक्रियाऐं

सितम्बर माह की अध्यात्म सन्देश मेरे सामने ई फॉर्म में है। चन्द्रयान 3 का चित्र और उससे निकलता हुआ विक्रम रोवर, भारत की विजय का इससे अच्छा उद्घोष हो ही नहीं सकता। पत्रिका सभी सामयिक विषयों, हिंदी शिक्षक, पर्यावरण, प्रकृति धरा अध्यात्म आदि सभी विषयों को समेटे हुए हैं ।

*डॉ. श्याम सुन्दर पाठक जी का लेख **'भारत की बात सुनाता हूँ'** बहुत ही ज्ञानवर्धक व सराहनीय है। सच में भारत वेद उपनिषदों की ऐसी भूमि है जहाँ अनेको विदेशियों के कदम सत्य धर्म, अध्यात्म के ज्ञान की लालसा में भारत की ओर बढ़ते हैं। श्री व्यग्र पांडे जी का हनुमान भजन एवम डॉ. विष्णु पाठक जी की **युगद्रष्टा तुलसी** कविता सराहनीय है। पत्रिका का भविष्य अति भव्य एवम तेजोमयी है।*

– डॉ. अर्चना प्रकाश
लखनऊ

बहुत बहुत धन्यवाद
*सारगर्भित **चन्द्रयान** पर विशेष आलेख **पर्यावरण** पर डॉ. मेहता नागेन्द्र को पढ़ना और भी बहुत सी विविधता से पूर्ण सामग्री का संकलन*
बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ

– डॉ. अ. कीर्ति वर्द्धन
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

बहुत अच्छा संदेश है समय पर मैं अपना आलेख भी आपको दूंगा।

– डॉ. रमन सोलंकी
पुराविद
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन (मध्य प्रदेश)

*योगी शिवनन्दन नाथ जी की रचना जिसमें, भारत के **चंद्रयान–3** मानो स्वर्ण–अक्षरों में लिखी गई है जो सदा अमर रहेगी। इसरो द्वारा चन्द्रमा पर उतारा गया चंद्रयान–3 विक्रम एक ऐतिहासिक क्षणों और घटना के साथ – साथ चाँद के दक्षिणी क्षेत्र को शिव–शक्ति पॉइंट से नामकरण करना और 23 अगस्त राष्ट्रीय –अंतरिक्ष –दिवस के नाम से सदा के लिए प्रसिद्ध हो गया है, बताया जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण है।*

*डॉ. श्याम सुन्दर पाठक 'अनन्त' द्वारा रचित **'भारत की बात सुनाता हूँ भाग –1'** भारत देश को देवोभूमि बताने के साक्ष्य देकर बहुत ही रोचक रचना लिखी है बताते हुए कि हम भारतीय कितने धन्य हैं कि जिस भूमि पर हमने जन्म लिया है वहां देवता भी बार–बार जन्म लेने को लालायित रहते हैं।*

*श्री कृष्ण कुमार यादव जी के द्वारा हिंदी–दिवस पर लिखा लेख **'विश्व–पटल पर हिंदी के बढ़ते कदम'** स्वतः ही सबको अपनी और पढ़ने के लिए आकर्षित ही नहीं वरन हिंदी भाषा के प्रति प्रेरित भी करता है।*

***प्रारब्ध से ही हिंदी सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा रही है।** कबीर, सूफी संतों, तुलसी की अवधि से मिलती–जुलती हिंदी को एक समृद्ध भाषा बनाने में काफी सहयोग दिया है। यादव जी ने हिंदी की लोकप्रियता दूसरे देशों में भी कितनी बड़ी है बताया जैसे जर्मनी, अमेरिका, फ्रांस, ग्रीस, सऊदी अरब, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि।*

*मान्य व्यग्र पांडेय जी का भजन **'हे हनुमान'** में हनुमानजी की भूरी–भूरी प्रशंसा, आस्था और सहायक के रूप में बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है।*

– रेनू माथुर
जोधपुर

01 अक्टूबर पर विशेष

राष्ट्रीय रक्तदान दिवस के उपलक्ष्य पर

रक्तदान महादान

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय विद्यालय, लखनऊ

मानव जीवन ईश्वर प्रदत्त सर्वश्रेष्ठ उपहार है। साथ ही यह भी सत्य है कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु भी निश्चित है, अर्थात मानव शरीर क्षणभंगुर है और यदि इस शरीर के माध्यम से कोई अन्य व्यक्ति मृत्यु से जीवन की ओर बढ़ सकता है तो इससे बड़ा कोई परोपकार नहीं है। हमारा इतिहास गवाह है कि समय-समय पर मानव हित और देश की रक्षा के लिए ऋषि एवं मुनियों ने अपने शरीर के विभिन्न अंगों का दान कर मानवता की रक्षा की है। उदाहरण के लिए महर्षि दधीचि ने वृत्तासुर नामक राक्षस के संहार हेतु अपनी अस्थियों का दान कर दिया था, जिससे बनने वाले शस्त्र से वह मारा गया था, राजा शिवि एक कबूतर के जीवन की रक्षा हेतु अपने शरीर को काट काट कर सारा मांस धीरे धीरे तराजू के पलड़े पर रखते चले गए, दानवीर कर्ण ने अपने पिता सूर्यदेव द्वारा प्रदत्त कवच और कुंडल छल से मांगने पर भी स्वर्ग के राजा इंद्रदेव को दान कर दिए थे। इन सभी उदाहरण से समाज को प्रेरणा मिलती है कि हम सभी अपने पूर्वजों की दानशीलता एवं परोपकारिता को अपना कर अपने शरीर के किसी भी अंग को दान कर किसी का जीवन बचा सकते हैं भले ही वह नेत्रदान हो, किडनी दान हो, रक्तदान हो अथवा संपूर्ण देह दान ही क्यों न करना पड़े।

उक्त सभी दानों में रक्तदान को महादान कहा जाता है क्योंकि आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी हादसों से भरी हुई है, जिसमें व्यक्ति घायल होने से लेकर अधिक रक्त प्रवाह के कारण मौत के मुंह में भी समा सकता हैं, ऐसी स्थिति में यदि उसे समय पर रक्त मिल जाए तो उसके जीवन को बचाया जा सकता है। रक्तदान से रक्त दाता के स्वास्थ्य पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है, परंतु रक्तग्राही का जीवन बचाया जा सकता है जिससे उसके पूरे परिवार को खुशियों के रंग में रंगने का परम सौभाग्य प्राप्त होता है। यह कल्पना ही स्वयं में सुखद है कि कोई व्यक्ति रक्त के अभाव में जीवन और मृत्यु की लड़ाई लड़ रहा हो और एकाएक आप आशा की किरण बनकर उसके सामने आते हैं और आपके द्वारा किए हुए रक्तदान से उस बीमार व्यक्ति का जीवन बच जाता है तो ऐसी स्थिति में आपको एक सुखद आनंद की अनुभूति होगी और आप स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगे। जिंदगी बचाने के लिए,चाहे वह अपना हो या

पराया अथवा किसी भी धर्म जाति का हो स्वेच्छा से रक्त दान करना मानव का परम कर्तव्य है ।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की ही देन है कि रक्तदान के माध्यम से असंख्य लोग काल के ग्रास में समाने से बच जाते हैं, यद्यपि रक्तदान की महत्ता को सभी जानते हैं और सभी समझते हैं परंतु विडंबना यह है कि आज भी लोग रक्तदान करने से डरते हैं, इससे बचते हैं, उनको संदेह रहता है कि रक्तदान कर वह स्वयं किसी बीमारी अथवा संक्रमण से ग्रसित तो नहीं हो जाएंगे जो की मात्र एक भ्रम है, सच कहें तो जागरूकता की कमी के कारण ऐसी सोच आती है। वास्तविकता यह है कि रक्तदान करने से शरीर में किसी भी तरह का नुकसान नहीं होता है बल्कि अनेकों लाभ होते हैं बशर्ते रक्तदान के समय 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' द्वारा निर्धारित किए गए मानक तरीकों को अपनाया जाए। एक स्वस्थ एवं व्यस्क व्यक्ति के शरीर में औसतन दस यूनिट रक्त होता है जिसमें से वह एक बार में एक यूनिट रक्त दान कर सकता है। उसके अनुसार 18 वर्ष से अधिक और 45 किलोग्राम वाला कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से वर्ष में तीन बार रक्तदान कर सकता है। रक्तदान से पूर्व रक्तदाता के निम्न परीक्षण करवाना आवश्यक है –

- **एचआईवी–एड्स,**
- **टी बी**
- **हेपेपटाइटस बी और सी**
- **संक्रामक बीमारी से ग्रसित न हो,**
- **उसके रक्त में हीमोग्लोबिन भी पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए।**

रक्तदान से रक्त लेने वाले व्यक्ति को जीवन मिलता ही है साथ ही रक्त देने वाले व्यक्ति को भी अनेकों लाभ मिलते हैं जिनसे वह अनजान रहता है जो कि निम्नांकित हैं

- **रक्तदान के पश्चात दाता का रक्त पतला हो जाता है जिससे उसका हृदयाघात से बचाव होता है।**
- **शरीर में नई कोशिकाओं का निर्माण होता है जिससे बीमारियों से लड़ने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक हो जाती है।**
- **नवनिर्मित रक्त शरीर के विषैले तत्वों को बाहर निकालने में सहायक सिद्ध होता है।**
- **रक्तदान से न केवल कोलेस्ट्रॉल और रक्तचाप नियंत्रित होता है बल्कि कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से भी बचाव होता है।**
- **आधुनिक समाज में आम समस्या बन चुकी मोटापा जैसी व्याधि को भी नियंत्रित करता है।**
- **रक्त में आयरन की मात्रा नियंत्रित होने से लीवर की कार्य क्षमता बढ़ जाती है।**
- **रक्त में आक्सीजन की मात्रा स्थिर रहती है।**
- **रक्त परिसंचरण तंत्र को संतुलित रखता है।**
- **रक्त दान करने वाले व्यक्ति को असीम संतुष्टि का एहसास होता है।**

रक्त शरीर का महत्वपूर्ण तरल तत्व है इसके अभाव में जीवन की कल्पना ही असम्भव है यदि इसकी संरचना पर ध्यान दें तो वैज्ञानिकों के अनुसार रक्त में चार प्रकार के घटक पाए जाते हैं जो कि निम्नांकित हैं

- **लाल रक्त कणिकाएं**
- **श्वेत रक्त कणिकाएं**
- **प्लेटलेट्स**
- **प्लाज्मा**

रक्त के उक्त चारों अवयव किसी रोगी को एक साथ दिए जा सकते हैं साथ ही साथ अलग–अलग मरीजों को भी आवश्यकता अनुसार घटक के रूप में दिए जा सकते हैं जैसे हीमोग्लोबिन की कमी से लाल रक्त कणिकाएं, किसी बाहरी संक्रमण से बचाव हेतु श्वेत रक्त कणिकाएं, डेंगू जैसी गंभीर बीमारी के लिए प्लेटलेट्स, तो करोना जैसी गंभीर बीमारियों में प्लाज्मा दिया जा सकता है अर्थात एक व्यक्ति अपने रक्तदान द्वारा चार लोगों का जीवन बचा सकता है इसीलिए रक्तदान को महादान कहा जाता है रक्तदान रूपी पुण्यदान के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इस दिशा में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किया जा रहे हैं मगर इसे सफल बनाने हेतु आमजन को रक्तदान के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है जिसके लिए सामाजिक साधनों द्वारा, सरकारी एवं गैर– सरकारी संस्थाओं द्वारा विभिन्न प्रयासों को अपनाने की आवश्यकता है, जिससे रक्तदान से होने वाले शारीरिक लाभ से आम जनता अवगत हो सके और स्वयं आगे बढ़ कर इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग दे कर मानव को नवजीवन दे सके इसी कड़ी में भारत सरकार ने एक अक्टूबर को 'राष्ट्रीय रक्तदान दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की थी। इसकी शुरुआत 1 अक्टूबर 1975 से हुई थी, इस पुनीत अवसर पर एक नहीं बल्कि कई संस्थाएं एवं संगठन अपना भागीरथ योगदान देते रहे हैं और राष्ट्रीय रक्तदान दिवस के उद्देश्य को सफल बना रहे हैं। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य है देश के सभी लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक कर उन्हें सुरक्षित रक्तदान हेतु प्रोत्साहित करना है।

- **जरूरतमंद रोगियों को तत्काल रक्त आपूर्ति करवाने का लक्ष्य प्रदान करना**
- **ब्लड बैंक में रक्त को किसी भी तत्काल आवश्यकता हेतु संग्रह करना**
- **बहुत सारे धन्यवाद के माध्यम से रक्तदाताओं को प्रोत्साहित करना एवं सम्मानित करना।**

देश भर में रक्तदान हेतु नाकों (राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन) एवं रेड क्रॉस जैसी सरकारी संस्थाएं भी लोगों में रक्तदान हेतु जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं परंतु इन सब का प्रयास सफल तभी होगा जब हम स्वयं रक्तदान हेतु आगे आएंगे और अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों को भी इस के लिए प्रेरित करेंगे। किसी ने सच ही कहा है

एक बार अवसर दीजिए अपने रक्त को किसी की रगो में बहने का,

सच मानिए एक लाभदायक तरीका है जिस्मों में जिंदा रहने का।

वृन्दावन की भूमि पर सारस्वत सम्मान

तृतीय
अखिल भारतीय
सारस्वत सम्मान समारोह

3 दिसंबर 2023 | **वृन्दावन**

यह सम्मान राष्ट्र निर्माण एवं जनकल्याण को समर्पित हिंदी भाषी साहित्यकारों, शिक्षकों, चिकित्सकों, समाज–सेवकों, वैज्ञानिकों, लघु उद्यमियों, लेखकों, कवियों, पत्रकारों, शोधार्थियों अथवा अन्य विधाओं की प्रतिभाओं को प्रदान किया जाएगा, जो अपनी प्रतिभा–सेवा के द्वारा राष्ट्र की शैक्षणिक, आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक, कला एवं संस्कृति की उन्नति में अपना निरंतर योगदान दे रहे हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड– 2023

(आवेदक के लिए न्यूनतम आयु सीमा : 55 वर्ष)

यह अवार्ड विश्व में आध्यात्मिक योग ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी की स्मृति का सम्मानित प्रतीक चिन्ह है। यह प्रतिष्ठित अवार्ड योग्य व्यक्तियों को सम्मानित कर उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देता है, जिन्होंने अपने जीवन में संबंधित कार्य क्षेत्रों में असाधारण योगदान देकर उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

सारस्वत सम्मान एवं लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्तकर्ताओं को फाउण्डेशन द्वारा आयोजित भव्य समारोह में उनके सम्मान के अनुरूप एक प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा ।

भारतवर्ष के समस्त प्रांतों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं | **प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 30 अक्टूबर 2023**

For application form : Please type : "name" - "place" -"Award Name" and send it to 7415410516

मुख्य प्रायोजक
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

E-mail : award.gssfoundation@gmail.com
Website : www.gssfoundation.org
संपर्क सूत्र : योगी शिवनंदन नाथ | Ph. : 6266441148

यह भारत देश है मेरा !

डॉ. सन्तोष खन्ना
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
वरिष्ठ सम्पादक (अध्यात्म संदेश)
वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादक :
महिला विधि भारती त्रैमासिक पत्रिका
दिल्ली–110088

वर्ष 1965 में एक में मशहूर फिल्म आई थी जिसका नाम था 'सिकंदर–ए–आजम'. उस फिल्म का देशभक्ति की भावनाओं से ओत–प्रोत एक गीत था, 'जहां डाल–डाल पर सोने की चिड़ियां करतीं हैं बसेरा, वह भारत देश है मेरा।' हालांकि यह फिल्म सिकंदर की कहानी से आरंभ होती है परंतु भारत के लिए इसका अधिक महत्व है इसमें सम्राट पुरु अर्थात् पोरस से संबंधित गाथा के कारण। सिकंदर – पोरस युद्ध में पोरस का बेटा शहीद हो जाता है और पोरस को बंदी बना लिया जाता है। बंदी के रूप में सम्राट पोरस के पराक्रमी वार्तालाप से सिकंदर प्रभावित हो मित्रता की पेशकश करता है। बाद में सिकंदर भारत से वापस प्रस्थान कर जाता है।

इसी फिल्म में 'जहां डाल डाल पर सोने की चिड़ियां करतीं हैं बसेरा/वह भारत देश है मेरा' गीत पोरस के माध्यम से भारत दर्शन कराने का सुंदर प्रयास है। इस कालजयी गीत की रचना प्रसिद्ध गीतकार राजेन्द्र कृष्ण ने की है और संगीत निर्देशक रवि बहल और इसकी लाजवाब प्रस्तुति की है स्वर सम्राट मोहम्मद रफी ने। लगभग छः दशक पुराना यह गीत जब भी बजता है कौन भारतीय होगा, जिसका मन, प्राण और आत्मा देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत न हो जाता हो। यहीं नहीं, इस गीत के प्रारंभ में जो गुरु– स्त्रोतम मोहम्मद रफी ने अपनी बुलंद और आत्मा को सम्मोहित करने वाले स्वर में प्रस्तुत किया है, वह भी सबको आध्यात्मिक रूप से आह्लादित करता है :

'गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णु ; गुरुर्देवो महेश्वरः गुरुः साक्षात परब्रह्मा तस्मै श्री गुरवे नमः।। ' यह गुरु –स्त्रोतम स्कंद पुराण के गुरु गीता अध्याय में है और जिसका अर्थ है कि गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु हैं और गुरु ही शिव शंकर है, गुरु साक्षात परब्रह्म है और मेरा उनके चरणों में प्रणाम है।' संस्कृत में गुरु का अर्थ है अंधेरे से उजाले की राह दिखाने वाला। मोहम्मद रफी की आवाज में इस गुरु – स्त्रोतम की पावन और उदात्त गूंजायमान स्वरलहरियां जब धरती

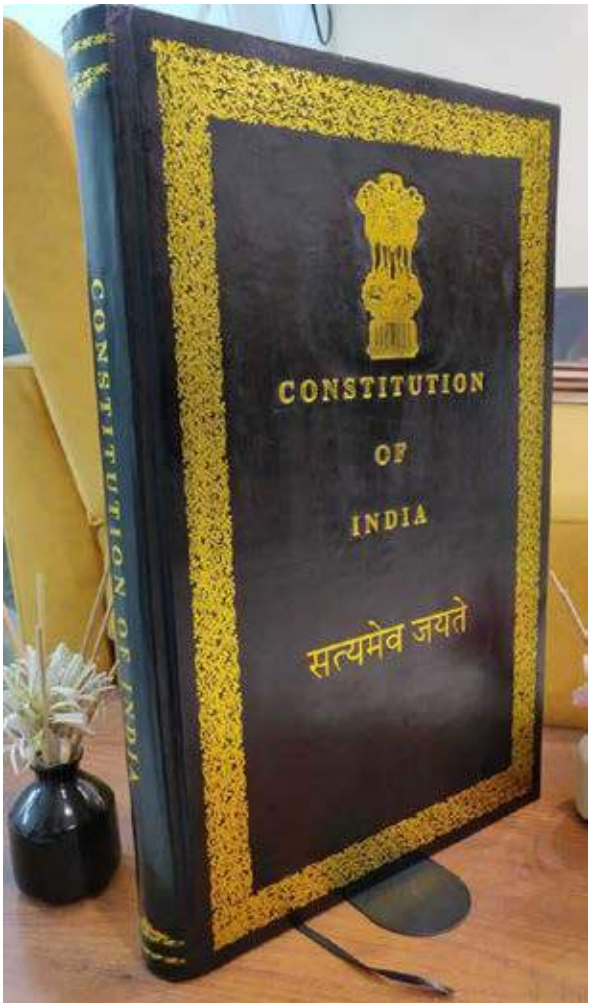

और आकाश के प्रांगण के समूचे परिवेश का उन्मेश कर रही होती हैं कि यह गीत अपने सम्पूर्ण माधुर्य के साथ समां बांधना आरम्भ कर देता है :

जहां डाल–डाल पर सोने की चिड़ियां करतीं हैं बसेरा/वहीं भारत देश है मेरा। जहां सत्य, अहिंसा का पग पग लगता डेरा/वहीं भारत देश है मेरा।

इस समूचे गीत को सुन कर हर हदय तंत्री का नाद भी चारों दिशाओं में गूंज उठता है, 'यह भारत देश है मेरा, यह भारत देश है मेरा।' इस गीत में गूंज रहे 'भारत' शब्द के कारण ही मैंने अपने भारत देश के लिए यह भूमिका बांधी है। भारत देश हमारा सर्वस्व है, हमारी आन, बान और शान है, हमारी अस्मिता और हमारी पहचान है। इस जैसा अनमोल शब्द विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं हो सकता। इसी के लिए हमारे ऋषियों मुनियों ने गाया है, 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' अर्थात् माता और मातृभूमि स्वर्ग भी बढ़ कर है। इसी जन्मभूमि के लिए अनेकानेक संतानों ने अपना जीवन इस पर न्योछावर कर दिया और भविष्य में भी भारत देश की संतान उसकी अखंडता और सुरक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देती रहेंगी।

भारत एक ऐसा बहुत पुरातन और उदात्त संस्कृति सम्पन्न देश है। इसी के लिए अल्लामा इकबाल ने लिखा था,

'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी/
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा/
सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा।'

भारत के लिए हिंदुस्तान शब्द का इस्तेमाल भी सदियों से किया जा रहा है पर इसके लिए 'इंडिया' शब्द का इस्तेमाल भारत पर अंग्रेजी साम्राज्य के दौरान शुरू हुआ और हमने अंग्रेजी साम्राज्य की पराधीनता से मुक्ति के बाद भी अधिकांशतः इंडिया शब्द ही अपना रखा है क्योंकि हम गुलामी की मानसिकता से बाहर आना ही नहीं चाहते। यहां तक कि जब स्वतंत्र भारत के लिए संविधान का निर्माण किया जा रहा था तो उस संविधान में जैसे ही उसकी उद्देशिका के बाद संविधान का मुख्य भाग शुरू होता है तो उसके पहले अनुच्छेद की पहली पंक्ति ही इंडिया शब्द से ही प्रारंभ होती है। संविधान की पहली पंक्ति में भारत को परिभाषित करते हुए कहा गया है 'India that is Bharat shall be a Union of States-' इंडिया अर्थात् भारत राज्यों का संघ है। चूंकि भारत के संविधान की रचना अपनी किसी भारतीय भाषा में नहीं, आक्रांताओं की भाषा अंग्रेजी में की गई है, इसलिए उसमें जहां जहां भी भारत का उल्लेख आया है, वहां 'इंडिया' शब्द का ही इस्तेमाल किया गया है। 'भारत' शब्द का भारत के इस बृहत संविधान में ले दे कर पहली पंक्ति में केवल एक बार ही उल्लेख है। अब भारत के संविधान को बने और लागू हुए लगभग पचतहर वर्ष होने को हैं, परंतु गुलामी की मानसिकता की प्रतीक इस व्यवस्था को बदलने का कोई विशेष प्रयास नहीं किया गया।

जब भारत का यह संविधान बनाया जा रहा था तो उस संविधान सभा के अध्यक्ष थे प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जिनकी उत्कट इच्छा थी कि जब संविधान बन रहा था उसे अंग्रेजी भाषा के साथ–साथ हिंदी भाषा में भी बनाया जाये। उन्होंने उसके लिए एक समिति भी बनाई थी परंतु भारत का संविधान उस समय हिंदी में नहीं बन सका था और उस संविधान सभा से भारत का संविधान 'कांस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया' 19 नवंबर, 1949 को केवल अंग्रेजी में ही पारित हो सका, हिंदी में नहीं, बाद में इस संविधान का 'भारत का संविधान' शीर्षक से हिंदी में अनुवाद तो किया गया परंतु वर्षों तक उसका प्राधिकृत पाठ संसद से पारित हो कर नहीं आ सका, जिसका एक परिणाम यह हुआ कि देश का शासन चलाने के लिए अंग्रेजी में लिखित 'कांस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया' का ही प्रयोग किया जाता रहा। वह तो बहुत बाद में वर्ष 1987 में भारत की संसद से 'कांस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया' से हिंदी में अनुवाद कर भारत के संविधान को हिंदी में प्राधिकृत करवाया गया। किंतु 'कंस्टीटयूशन ऑफ इंडिया' में अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को ले कर कई संवैधानिक प्रावधानों के कारण भारत के शासन का कामकाज अंग्रेजी में ही किया जाता रहा है और अभी भी देश की राजभाषा हिंदी में शासन का कामकाज कम ही किया जाता है और अंग्रेजी का धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है। चूंकि 'कांस्टीट्यूशन ऑफ

इंडिया' में देश की न्याय संस्थाओं विशेष रूप से उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में कार्यवाही अनिवार्यतया अंग्रेजी में करने के प्रावधान कर दिये गये थे, अब जब देश अपनी स्वतंत्रता की सतहत्तरवीं वर्षगांठ मना रहा है, देश की जनता को देश की न्याय संस्थाओं से न्याय अपनी भाषा अथवा भाषाओं में नहीं बल्कि अंग्रेजी भाषा में ही मिल रहा है और इस तरह हम भारतवासी अंग्रेजी भाषा के रुप में गुलामी के इस प्रतीक को ढोने को अभिशप्त हैं और इस मायने में देश की जनता को कहीं भी सच्चे अर्थों में न्याय नहीं मिल पाता,बस जिसके बस में है अर्थात् तथाकथित पैसेवाले, रसूखदार या बाहुबली न्याय खरीद लेते हैं या अप्रत्यक्ष रूप से हथिया लेते हैं और आम जनता न केवल न्याय से वंचित हैं बल्कि अंग्रेजी भाषा में लिखित मूल अधिकार तथा समानता के अधिकार से, गरिमापूर्ण जीवन जीने के अधिकार से वंचित हैं चाहे हम कितना ही इस बात का दम भरते रहे कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है । जब तक हम गुलामी के प्रतीकों से स्वयं को मुक्त नहीं करते, तब तक हम सही मायनों में स्वतंत्र होने का दम नहीं भर सकते हैं। यह बात शत प्रतिशत सही है कि किसी देश की संस्कृति उसकी अपनी भाषा अथवा भाषाओं के माध्यम से ही पीढ़ी –दर– पीढ़ी में अंतरित होती है। आप जिस भाषा के माध्यम से बचपन से आरंभ होकर छात्र जीवन में शिक्षा ग्रहण करते हैं, उसी भाषा की संस्कृति आपके रोम रोम में, आपके संस्कारों में, आपकी जीवन शैली में व्याप्त होती रहेगी। चूंकि स्वतंत्र भारत की पीढ़ी– दर –पीढ़ी शिक्षा अब तक अंग्रेजी भाषा में होती आई है और देश का संविधान भी अंग्रेजी भाषा में निर्मित हुआ, शासन का कामकाज अंग्रेजी में किया जाता रहा है, न्याय आपको अंग्रेजी भाषा में दिया जा रहा है शिक्षा आप अंग्रेजी माध्यम से ग्रहण करते आ रहे हैं, आपने देश को भारत के रूप में नहीं, इंडिया के रूप में जाना है, स्वाभाविक है कि आपके संस्कारों में, आपकी जीवनशैली में भारतीयता कम हो, पश्चिम संस्कृति अधिक हो। आजकल हम अपने उपर ओढ़ी हुई पश्चिमी संस्कृति के दुष्प्रभाव को देखते हैं फिर भी पश्चिमी अपसंस्कृति के जाल में ऐसे संलिप्त हैं कि न तो हम अपने पारिवारिक मूल्यों को निभा रहे हैं और न ही समाज में एक सुदृढ़ व्यवस्था कर पा रहे हैं।

आज कल हम भारतीय गाहे बगाहे अपनी प्राचीन संस्कृति की बात कर रहे हैं परंतु उसे अपनाने के लिए हमें अपने देश की जड़ों की ओर लौटना होगा। उसके लिए सबसे पहले अपनी स्वदेशी भाषाओं की ओर लौटना होगा। उसके लिए हमें सबसे पहले भारत के सबसे बड़े कानून अर्थात् भारत के संविधान में देश के नाम की परिभाषा को बदलना होगा जो वर्तमान में देश को परिभाषित करती है 'इंडिया दैट एस भारत'। इसे इंडिया से बदल कर भारत करना होगा।

भारत के संविधान का निर्माण वर्ष 1946 से ले कर 1949 के बीच के कार्यकाल में हुआ था। जब संविधान सभा में संविधान में देश को परिभाषित करने के विषय पर चर्चा हो रही थी तो संविधान सभा के उस समय के कुछ राष्ट्रवादी सदस्यों ने 'इंडिया' शब्द के इस्तेमाल पर अपना विरोध व्यक्त किया था परंतु उस समय के विदेश पलट अंग्रेजी भक्त सद्स्यों ने इसे स्वीकार नहीं किया। जब संविधान सभा में कुछ सदस्यों ने देश का नाम इंडिया रखे जाने का विरोध किया, उनकी आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह दब गई। संविधान सभा के सदस्य एचवी कामथ ने कहा था कि संविधान सभा को देश के नाम को गंभीरता से लेना चाहिए। उनका विचार था कि मुख्य नाम भारत ही होना चाहिए। संविधान सभा के एक और सदस्य सेठ गोविंद दास ने वेद, पुराण, महाभारत का हवाला देकर यह सिद्ध करने की कोशिश की कि इस देश को हमेशा से भारत के नाम से ही जाना जाता रहा है। उन्होंने 'इंडिया दैट इज भारत' के स्थान पर 'भारत नोन एज इंडिया इन फारेन कंट्रीज' का प्रयोग करने की सलाह भी दी थी। दस्तावेज बताते हैं कि इस मुद्दे पर कमलापति त्रिपाठी और डॉ. भीमराव आंबेडकर के बीच नोंकझोंक भी हुई थी। आखिरकार, एचवी कामथ के प्रस्ताव पर वोटिंग हुई। उनके समर्थन में 38 सदस्य थे, जबकि 51 ने उसका विरोध किया। परिणास्वरूप उनका प्रस्ताव पास नहीं हो पाया और 'इंडिया दैट इज भारत' को ही स्वीकार कर लिया गया और तब से हम इंडिया शब्द को अधिक जानते हैं और भारत को कम।

संविधान सभा में भारत के संविधान में 'भारत' नाम रखने के बारे में बहुत लंबी चर्चा हुई, उस सबका उल्लेख यहां संभव नहीं, उस बहस के एक दो उदाहरण देना यहां पर्याप्त होगा जिससे पता चलता है कि विश्व में सभी देशों का एक ही नाम हैं और हमने देश के सर्वोच्च कानून अर्थात् भारत के संविधान में देश के दो नाम रखे परंतु उसमें भी इंडिया को प्रथम स्थान पर रखा है।

संविधान सभा के एक माननीय सदस्य ने अपने स्वतंत्र हो रहे देश का नाम केवल भारत रखने की वकालत करते हुए कहा:–

'हमें वास्तव में अपने देश को ऐसा नाम देना चाहिए जो हमारे इतिहास और संस्कृति के अनुरूप हो। यह बहुत खुशी की बात है कि हम आज अपने देश का नाम भारत रख रहे हैं। मैंने पहले भी कई बार कहा है कि यदि हम इस मामले में सही निर्णय पर नहीं पहुंचे तो इस देश की जनता स्वशासन का महत्व नहीं समझ पाएगी।'

भारत के संविधान में केवल भारत नामकरण के बारे में तर्क देते हुए एक माननीय सदस्य का यह कहना था :

'यह भी कहा गया जब कोई देश गुलामी में होता है तो वह अपनी आत्मा को खो देता है। हजार साल की गुलामी के दौरान हमारे देश ने भी अपना सब कुछ खो दिया। हमने अपनी संस्कृति खो दी, हमने अपना इतिहास खो दिया, हमने अपनी प्रतिष्ठा खो दी और वास्तव में हमने अपना रूप और नाम खो दिया। आज हजार वर्ष तक परतंत्र रहने के बाद यह स्वतंत्र देश अपना नाम पुनः प्राप्त करेगा और हमें आशा है कि यह अपना खोया हुआ नाम प्राप्त करेगा। अपनी आंतरिक चेतना पुनः प्राप्त करेगा।'

एक अन्य माननीय सदस्य हर गोविंद पंत का भी दृष्टिकोण था :–

'जहां तक 'इंडिया' शब्द का सवाल है ऐसा लगता है कि

सदस्यों को और वास्तव में मैं भी यह समझने में असफल हूं कि हमारा इस शब्द के प्रति इतना लगाव क्यों है? हमें यह जानना चाहिए कि हमें यह नाम हमारे देश को विदेशियों द्वारा दिया गया था जो इस भूमि की समृद्धि के बारे में सुनकर इसके प्रति आकर्षित हुए थे और हमारे देश की संपत्ति हासिल करने के लिए इन्होंने हमसे हमारे स्वतंत्रता छीन ली। यदि हम इंडिया नाम से चिपके रहते हैं तो इससे यह पता तो चलेगा कि हमें इसमें कोई शर्म नहीं है जो विदेशी शासकों द्वारा हम पर नाम थोपा था हम उससे मुक्त होने के लिए तैयार नहीं हैं। मुझे यह समझ नहीं आ रहा कि हम इस शब्द 'इंडिया' को स्वीकार क्यों कर रहे हैं?

संविधान लागू होने के बाद भी समय समय पर यह आवाज उठती रही है कि संविधान से इंडिया शब्द हटा कर केवल भारत रहने दिया जाये। वर्ष 2020 में उच्चतम न्यायालय में इस आशय की याचिका दायर की गई थी तो उच्चतम न्यायालय की मुख्य न्यायाधीश एसए बोबडे की अध्यक्षता वाली तीन– सदस्यीय बेंच ने याचिका को ख़ारिज करते हुए इस मामले में दख़ल देने से इन्कार कर दिया। अदालत ने कहा कि संविधान में पहले से ही भारत का जिक्र है। संविधान में लिखा है 'इंडिया डैट इज भारत।' उच्चतम न्यायालय ने अपने फैसले में यह भी कहा कि इस याचिका को संबंधित मंत्रालय में भेजा जाना चाहिए और याचिकाकर्ता सरकार के सामने अपनी मांग रख सकते हैं। यह कोई नई बात नहीं है कई देश अपना नाम बदल चुके हैं।'

इसी वर्ष संसद के मौनसून सत्र में 27 जुलाई, 2023 को राज्य सभा में भारतीय जनता पार्टी के एक सांसद श्री नरेश बंसल ने विशेष उल्लेख के माध्यम से यह मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि भारत के संविधान के अनुच्छेद एक में देश का नाम इंडिया दैट इज भारत हटा कर केवल भारत होना चाहिए। आजादी के अमृतलाल में अंग्रेजी गुलामी के प्रतीक को हटा कर इस पावन पुण्य धरा का नाम केवल भारत किया जाना चाहिए।

संविधान निर्माण काल से ऐसी मांग होती आई है। इस मांग को देर सवेर पूरा करना ही होगा। उल्लेखनीय यह भी है कि भारत के संविधान में केवल यहीं गुलामी का प्रतीक नहीं हैं जिसका संशोधन किया जाना चाहिए, इससे अधिक भी ऐसे कुछ और प्रावधान हैं जिनकी ओर आम तौर पर किसी का ध्यान नहीं गया है। सबसे बड़ा प्रावधान जिसका संशोधन जरूरी है वह है देश के शासन की भाषा केवल भारत भाषा ही हो, अंग्रेजी अब बिल्कुल नहीं रहनी चाहिए। दूसरा, देश की जनता को उसकी भाषा में न्याय दिलाने के लिए देश की विधि और न्याय भाषा अब अंग्रेजी नहीं रहनी चाहिए। ऐसा तभी संभव है जब अनुच्छेद 348 में संशोधन किया जाये। यहीं वह प्रावधान है जो देश की जनता को उसकी भाषा में न्याय दिलाने में बहुत बड़ी बाधा बना है। ऐसा प्रतीत होता है कि अभी तक किसी राजनीतिक दल का इस ओर ध्यान ही नहीं गया है। क्या कोई इस बात पर शोध करके बतायेगा कि कभी किसी राजनीतिक दल ने अपने चुनाव घोषणापत्र में कभी यह मुद्दा रखा है? वैसे भी हमारे देश में जितने भी सरकारी और गैर– सरकारी विधि स्कूल और विश्वविद्यालय हैं उसमें कानून की शिक्षा अनिवार्यतया अंग्रेजी में दी जाती है और इस तरह जो वकील और न्यायाधीश तैयार होते हैं वह अंग्रेजी में तैयार होते हैं मानों वह स्वयं को इंग्लैंड अमरीका के लिए तैयार कर रहे होते हैं। भारत के संविधान का अनुच्छेद 348 सबसे बड़ा औपनिवेशिक मानसिक गुलामी का प्रतीक है। उसमें तत्काल प्रभाव से संशोधन होना चाहिए। यह तभी संभव होगा जब इसके लिए देश की जनता आवाज उठायेगी।

वैसे भारत के बारे में यह जान लिया भी आवश्यक है प्राचीनकाल से भारतभूमि के अलग–अलग नाम रहे हैं मसलन जम्बूद्वीप, भारतखण्ड, हिमवर्ष, अजनाभवर्ष, भारतवर्ष, आर्यावर्त, हिन्द, हिन्दुस्तान और इंडिया मगर इनमें भारत सबसे ज्यादा लोकमान्य और प्रचलित रहा है। इस के बाद देश हिंदुस्थान के नाम से भी जाना जाता है। इसके बारे में एक प्राचीन मंत्र देखिये:–

''हिमालयात् समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरम्। तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थान प्रचक्षते "– (बृहस्पति आगम)

अर्थात् रू हिमालय से प्रारंभ होकर इन्दु सरोवर (हिन्द महासागर) तक यह देव निर्मित देश हिन्दुस्थान कहलाता है।

'हिमालय' संस्कृत के 'हिम' तथा 'आलय' दो शब्दों से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ 'बर्फ का घर' होता है। हिमालय को भारत का ताज कहा जाता है। हिमालय की क्रोड़ में कई देश हैं पर मुख्यतः भारत का बहुत बड़ा भाग हिमाचल की क्रोड़ में है। जहां तक हिंदूस्थान शब्द का संबंध है दुर्भाग्यवश बहुत सारे लोग इस नाम को भी अब संप्रदायिक बताने लगे हैं। ■

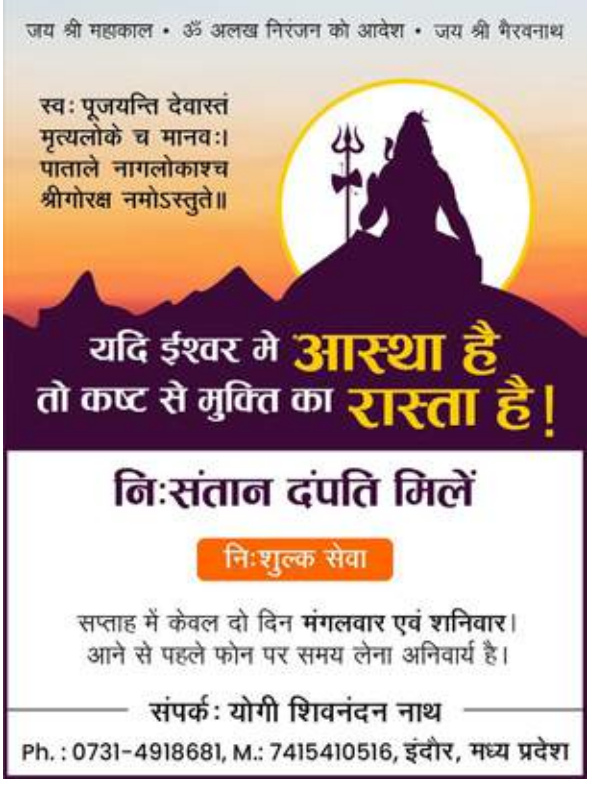

07 अक्टूबर पर विशेष

दुर्गा भाभी की जयन्ती

अंग्रेजों की आँख में धूल झोंक क्रांतिकारियों की रक्षक बनीं दुर्गा भाभी

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास नदेसर, कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी

वर्ष 1927 का दौर। साइमन कमीशन का विरोध करने पर लाहौर में प्रदर्शन का नेतृत्व करने वाले शेरे-पंजाब लाला लाजपत राय पर पुलिस ने निर्ममतापूर्वक लाठी चार्ज किया, जिससे 17 नवम्बर 1928 को उनकी मौत हो गयी। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में यह एक गम्भीर क्षति थी। पूरे देश विशेषकर नौजवानों की पीढ़ी को इस घटना ने झकझोर कर रख दिया। लाला लाजपत राय की मौत को क्रान्तिकारियों ने राष्ट्रीय अपमान के रूप में लिया और उनके मासिक श्राद्ध पर लाठी चार्ज करने वाले लाहौर के सहायक पुलिस कप्तान साण्डर्स को 17 दिसम्बर 1928 को भगत सिंह, चन्द्रशेखर व राजगुरु ने खत्म कर दिया। यह घटना अंग्रेजी सरकार को सीधी चुनौती थी, सो पुलिस ने क्रान्तिकारियों पर अपना घेरा बढ़ाना आरम्भ कर दिया। ऐसे में भगत सिंह व राजगुरु को लाहौर से सुरक्षित बाहर निकालना क्रान्तिकारियों के लिये टेढ़ी खीर थी। ऐसे समय में एक क्रान्तिकारी महिला ने सुखदेव की सलाह पर भगतसिंह और राजगुरु को लाहौर से कलकत्ता बाहर निकालने की योजना बनायी और फलस्वरूप एक सुनियोजित रणनीति के तहत यूरोपीय अधिकारी के वेश में भगत सिंह पति, वह क्रान्तिकारी महिला अपने बच्चे को लेकर उनकी पत्नी और राजगुरु नौकर बनकर अंग्रेजी सरकार की आँखों में धूल झोंकते वहाँ से निकल लिये। यह क्रान्तिकारी महिला कोई और नहीं बल्कि चन्द्रशेखर आजाद के अनुरोध पर 'दि फिलॉसाफी ऑफ बम' दस्तावेज तैयार करने वाले क्रान्तिकारी भगवतीचरण वोहरा की पत्नी दुर्गा देवी वोहरा थीं, जो क्रान्तिकारियों में 'दुर्गा भाभी' के नाम से प्रसिद्ध थीं।

7 अक्टूबर 1907 को रिटायर्ड जज पं. बाँके बिहारी लाल नागर की सुपुत्री रूप में इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में दुर्गा देवी का जन्म हुआ। कुछ समय पश्चात ही पिताजी

संन्यासी हो गये और बचपन में ही माँ भी गुजर गयीं। दुर्गा देवी का लालन-पालन उनकी चाची ने किया। जब दुर्गादेवी कक्षा 5वीं की छात्रा थीं तो मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में ही उनका विवाह भग. वतीचरण वोहरा से हो गया, जो कि लाहौर के पंडित शिवचरण लाल वोहरा के पुत्र थे। दुर्गा देवी के पति भगवतीचरण वोहरा 1921 के असहयोग आन्दोलन में काफी सक्रिय रहे और लगभग एक ही साथ भगतसिंह, धनवन्तरी और भगवतीचरण ने पढ़ाई बीच में ही छोड़कर देश सेवा में जुट जाने का संकलप लिया। असहयोग आन्दोलन के दिनों में गाँधी जी से प्रभावित होकर दुर्गा देवी और उनके पति स्वयं खादी के कपड़े पहनते और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करते। असहयोग आन्दोलन जब अपने चरम पर था, ऐसे में चौरी-चौरा काण्ड के बाद अकस्मात इसको वापस ले लिया जाना नौजवान क्रान्तिकारियों को उचित न लगा और वे स्वयं का संगठन बनाने की ओर प्रेरित हुये। असहयोग आन्दोलन के बाद भगवतीचरण वोहरा ने लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज से 1923 में बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की। दुर्गा देवी ने इसी दौरान प्रभाकर की परीक्षा उतीर्ण की।

1924 में तमाम क्रान्तिकारी 'कानपुर सम्मेलन' के बहाने इकट्ठा हुये और भावी क्रान्तिकारी गतिविधियों की योजना बनायी। इसी के फलस्वरूप 1928 में 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन' का गठन किया गया, जो कि बाद में 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन' में परिवर्तित हो गया। भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, राजगुरु, भगवतीचरण वोहरा, बटुकेश्वर दत्त, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह व अशफाक उल्ला खान, शचीन्द्र नाथ सान्याल इत्यादि जैसे तमाम क्रान्तिकारियों ने इस दौरान अपनी जान हथेली पर रखकर अंग्रेजी सरकार को कड़ी चुनौती दी। भगवतीचरण वोहरा के लगातार क्रान्तिकारी गतिविधयों में सक्रिय होने के साथ-साथ दुर्गा देवी भी पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रहीं। 3 दिसम्बर 1925 को अपने प्रथम व एकमात्र पुत्र के जन्म पर दुर्गा देवी ने उसका नाम प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल के नाम पर शचीन्द्रनाथ वोहरा रखा।

वक्त के साथ दुर्गा देवी क्रान्तिकारियों की लगभग हर गुप्त बैठक का हिस्सा बनती गयीं। इसी दौरान वे तमाम क्रातिकारियों के सम्पर्क में आइं। कभी-कभी जब नौजवान क्रांन्तिकारी किसी समस्या का हल नहीं ढूँढ़ पाते थे तो शान्तचित्त होकर उन्हें सुनने वाली दुर्गा देवी कोई नया आईडिया बताती थीं। यही कारण था कि वे क्रान्तिकारियों में बहुत लोकप्रिय और 'दुर्गा भाभी' के नाम से प्रसिद्ध थीं। महिला होने के चलते पुलिस उन पर जल्दी शक नहीं करती थी, सो वे गुप्त सूचनायें एकत्र करने से लेकर गोला-बारूद तथा क्रान्तिकारी साहित्य व पर्चे एक जगह से दूसरी जगह ले जाने हेतु क्रान्तिकारियों की काफी सहायता करती थीं। 1927 में लाला लाजपतराय की मौत का बदला लेने के लिये लाहौर में बुलायी गई बैठक की अध्यक्षता दुर्गा देवी ने ही की। बैठक में अंग्रेज पुलिस अधीक्षक जे.ए. स्कॉट को मारने का जिम्मा वे खुद लेना चाहती थीं, पर संगठन ने उन्हें यह जिम्मेदारी नहीं दी।

8 अप्रैल 1929 को सरदार भगत सिंह ने बटुकेश्वर दत्त के साथ आजादी की गूँज सुनाने के लिए दिल्ली में केन्द्रीय विधान सभा भवन में खाली बेंचों पर बम फेंका और कहा कि -''बधिरों को सुनाने के लिए अत्यधिक कोलाहल करना पड़ता है।'' इस घटना से अंग्रेजी सरकार अन्दर तक हिल गयी और आनन-फानन में 'साण्डर्स हत्याकाण्ड' से भगत सिंह इत्यादि का नाम जोड़कर फांसी की सजा सुना दी। भगत सिंह को फांसी की सजा क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिये बड़ा सदमा थी। अतः क्रान्तिकारियों ने भगत सिंह को छुड़ाने के लिये तमाम प्रयास किये। मई 1930 में इस हेतु सेन्ट्रल जेल लाहौर के पास बहावलपुर मार्ग पर एक घर किराये पर लिया गया, पर इन्हीं प्रयासों के दौरान लाहौर में रावी तट पर 28 मई 1930 को बम का परीक्षण करते समय दुर्गा देवी के पति भगवतीचरण वोहरा आकस्मिक विस्फोट से शहीद हो गये। इस घटना से दुर्गा देवी की जिन्दगी में अंधेरा सा छा गया, पर वे अपने पति और अन्य क्रान्तिकारियों की शहादत को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहती थीं। अतः, इससे उबरकर वे पुनः क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय हो गईं।

लाहौर व दिल्ली षडयंत्र मामलों में पुलिस ने पहले से ही दुर्गा देवी के विरुद्ध वारण्ट जारी कर रखा था। ऐसे में जब क्रान्तिकारियों ने बम्बई के गर्वनर मेल्कम हेली को मारने की रणनीति बनायी, तो दुर्गा देवी अग्रिम पंक्ति में रहीं। 9 अक्टूबर 1930 को इस घटनाक्रम में हेली को मारने की रणनीति तो सफल नहीं हुयी पर लैमिग्टन रोड पर पुलिस स्टेशन के सामने अंग्रेज सार्जेन्ट टेलर को दुर्गा देवी ने अवश्य गोली चलाकर घायल कर दिया। क्रान्तिकारी गतिविधियों से पहले से ही परेशान अंग्रेज सर. कार ने इस केस में दुर्गा देवी सहित 15 लोगों के नाम वारण्ट जारी कर दिया, जिसमें 12 लोग गिरफ्तार हुये पर दुर्गा देवी, सुखदेव लाल व पृथ्वीसिंह फरार हो गये। अन्ततः अंग्रेजी सरकार ने मुख्य अभियुक्तों के पकड़ में न आने के कारण 4 मई 1931 को यह मुक. दमा ही उठा लिया। मुकदमा उठते ही दुर्गा देवी पुनः सक्रिय हो गयीं और शायद अंग्रेजी सरकार को भी इसी का इन्तजार था। अन्ततः 12 सितम्बर 1931 को लाहौर में पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया, पर उस समय तक लाहौर व दिल्ली षड्यंत्र मामले खत्म हो चुके थे और लैमिग्टन रोड केस भी उठाया जा चुका था, अतः कोई ठोस आधार न मिलने पर 15 दिन बाद मजिस्ट्रेट ने उन्हें रिहा करने के आदेश दे दिये। अंग्रेजी सरकार चूँकि दुर्गा देवी की क्रान्तिकारी गतिविधियों से वाकिफ थी, अतः उनकी गतिविधियों को निष्क्रिय करने के लिये रिहाई के तत्काल बाद उन्हें 6 माह और पुनः 6 माह हेतु नजरबंद कर दिया। दिसम्बर 1932 में अंग्रेजी सरकार ने पुनः उन्हें 3 साल तक लाहौर नगर की सीमा में नजरबंद रखा।

तीन साल की लम्बी नजरबन्दी के बाद जब दुर्गा देवी रिहा हुयीं तो 1936 में दिल्ली से सटे गाजियाबाद के प्यारेलाल गर्ल्स स्कूल में लगभग एक वर्ष तक अध्यापक की नौकरी की। 1937 में वे जबरदस्त रूप से बीमार पड़ी और दिल्ली की हरिजन बस्ती में स्थित सैनीटोरियम में उन्होंने अपनी बीमारी का इलाज कराया। उस समय तक विभिन्न प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार बन चुकी थी

और इसी दौरान 1937 में ही दुर्गादेवी ने भी कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर राजनीति में अपनी सक्रियता पुनः आरम्भ की। अंग्रेज अफसर टेलर को मारने के बाद फरार रहने के दौरान ही उनकी मुलाकात महात्मा गाँधी से हो चुकी थी। 1937 में वे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी दिल्ली की अध्यक्षा चुनी गयीं एवं 1938 में कांग्रेस द्वारा आयोजित हड़ताल में भाग लेने के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। 1938 के अन्त में उन्होंने अपना ठिकाना लखनऊ में बनाया और अपनी कांग्रेस सदस्यता उत्तर प्रदेश स्थानान्तरित कराकर यहाँ सक्रिय हुयीं। सुभाषचन्द्र बोस की अध्यक्षता में आयोजित जनवरी 1939 के त्रिपुरी (मध्यप्रदेश) के कांग्रेस अधिवेशन में दुर्गा देवी ने पूर्वांचल स्थित आजमगढ़ जनपद की प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

दुर्गा देवी का झुकाव राजनीति के साथ–साथ समाज सेवा और अध्यापन की ओर भी था। 1939 में उन्होंने अड्यार, मद्रास में मांटेसरी शिक्षा पद्धति का प्रशिक्षण ग्रहण किया और लखनऊ आकर जुलाई 1940 में शहर के प्रथम मांटेसरी स्कूल की स्थापना की, जो वर्तमान में इण्टर कश्वलेज के रूप में तब्दील हो चुका है। मांटेसरी स्कूल लखनऊ की प्रबन्ध समिति में तो आचार्य नरेन्द्र देव, रफी अहमद किदवई व चन्द्रभानु गुप्ता जैसे दिग्गज शामिल रहे। 1940 के बाद दुर्गादेवी ने राजनीति से किनारा कर लिया पर समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को काफी सराहा गया।

दुर्गा देवी ने सदैव से क्रान्तिकारियों के साथ कार्य किया था और उनके पति की दर्दनाक मौत भी एक क्रान्तिकारी गतिविधि का ही परिणाम थी। क्रान्तिकारियों के तेवरों से परे उनके दुख–दर्द और कठिनाइयों को नजदीक से देखने व महसूस करने वाली दुर्गा देवी ने जीवन के अन्तिम वर्षा में अपने निवास को ''शहीद स्मारक शोध केन्द्र'' में तब्दील कर दिया। इस केन्द्र में उन शहीदों के चित्र, विवरण व साहित्य मौजूद हैं, जिन्होंने राष्ट्रभक्ति का परिचय देते हुये या तो अपने को कुर्बान कर दिया अथवा राष्ट्रभक्ति के समक्ष अपने हितों को तिलांजलि दे दी। एक तरह से दुर्गा देवी की यह शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि थी तो आगामी पीढ़ियों को आजादी की यादों से जोड़ने का सत्साहस भरा जुनून भी। पारिवारिक गतिविधियों से लेकर क्रान्तिकारी, कांग्रेसी, शिक्षाविद् और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में आजीवन सक्रिय दुर्गा देवी 92 साल की आयु में 14 अक्टूबर 1999 को इस संसार को अलविदा कह गयीं। दुर्गा देवी उन विरले लोगों में से थीं जिन्होंने गाँधी जी के दौर से लेकर क्रान्तिकारी गतिविधियों तक को नजदीक से देखा, पराधीन भारत को स्वाधीन होते देखा, राष्ट्र की प्रगति व विकास को स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के दौर के साथ देखा..... आज दुर्गा देवी हमारे बीच नहीं हैं, पर हमें उनके सपनों, मूल्यों और जज्बातों का अहसास है। आज देश के विभिन्न क्षेत्रों में तमाम महिलायें अपनी गतिविधियों से नाम कमा रही हैं, पर दुर्गा देवी ने तो उस दौर में अलख जगायी जब महिलाओं की भूमिका प्रायः घर की चहरदीवारियों तक ही सीमित थी।

हे रघुनाथ राम रघुकुलमणि

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

त्रेतायुग में असुर संहारे सुर नर मुनि भय मुक्त करे,
हे भयभंजन रघुकुलनंदन पृथ्वी पाप से रहित करे।
मुक्त किए गौतम नारी को भव बंधन से पार करे,
उद्धारे तड़कासुबाहु को गिद्ध को निजपद भेंट करे।
हे दुखभंजन सुर मुनि रंजन भय भक्तों के दूर करे,
गले लगाकर निषादपति को दीनानाथ सनाथ करे।
बांह गहे प्रभु वानरपति को मित्रधर्म निर्वाह करे,
जूठे बेर शबरी के खाए सायुज मुक्ति प्रदान करे।
भ्रातृप्रेम भाइयों से करके बंधु धर्म का मान करे,
भायपभक्ति भरतलक्ष्मण के प्रेमभाव स्वीकार करे।
शरणागत जब हुए विभीषण दीनबंधु अनुराग करे,
महापातकी रावण को प्रभु भवसागर से पार करे।
वानर यक्ष गिद्ध सचराचर सबका बेड़ा पार करे,
रामभक्त हनुमान प्रभू को भक्तराज महराज करे।
हे करुणामय नाथ दयामय जगबंधन से मुक्त करें,
शरणागत मैं आर्त पुकारु
भवतापों का शमन करें।
हे रघुनंदन दया के सागर त्रिविधताप निर्मूल करें,
हे रघुनाथ राम रघुकुलमणि मेरा भी उद्धार करें।

आपका कर्तव्य ही धर्म है, प्रेम ही ईश्वर है, सेवा ही पूजा है, और सत्य ही भक्ति है।

स्थायी स्तम्भ

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
भू–वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्
एवं हिन्दी रचनाकार, पटना

पर्यावरण चिन्तन 9

विशेषतौर पर कूड़ा–कचरा हरित और पवित्र वसुन्धरा पर 'कोढ़' कहलाता है। कोढ़धारित सेहत ताजन्म कष्टदायक होती है। इस परिप्रेक्ष्य में कूड़ा– कचरा का जनन, विस्तरण एवं सड़न पर्यावरणीय दृष्टिकोण से वर्जना की कोटि में रखा गया है। क्योंकि जहाँ कूड़ा–कचरा मौजूद रहता है, वह स्थान, वह परिसर गंदा दिखता है। परिवेश प्रदूषित रहता है। यहाँ से महामारी फैलने की सम्भावना बनी रहती है।

यह अनुपयोगी पदार्थ होता है। केवल जगह छेकता है, बदरंग बनाता है। अन्तोगत्वा समस्या पैदा करता रहता है। खासकर स्वास्थ्य की समस्या अधिक मात्रा में उत्पन्न हुआ करती है। कूड़ा–कचरा प्रतिदिन उत्पन्न होता है। इसे उत्पन्न करने वाले कोई और नहीं, बल्कि हम–आप हैं। इसके जनन यानी उत्पन्न होने की मात्रा हम उपभोक्ताओं की संख्या पर निर्भर करती है। कूड़ा–कचरा को तकनीकी भाषा में अवशिष्ट या अपशिष्ट कहा जाता है। इन दोनों शब्दों में 'शिष्ट' के साथ 'अव' और 'अप' उपसर्ग, जिसका अर्थ बुरा और गंदा है,जुड़ा रहता है। अवशिष्ट और अवशेष में कोई खास अन्तर नहीं है। लेकिन यहाँ अवशिष्ट का ही सटीक व्यवहार मान्य है। अवशिष्ट, पदार्थ की भौतिक और उपयोगी अवस्था के आधार पर वर्गीकृत हुआ है– ठोस,तरल और गैसीय। उत्पाद को रखने और ढकने वाले सामान उपयोग के बाद अवशिष्ट कोटि में चला आता है। जैसे लोहा, लकड़ी, कागज और कपड़ा आदि ठोस से उत्पाद बनाये जाते हैं, उत्पाद के बाद जो कटा–छटा शेष अंश बच जाता, वह अंश अवशिष्ट कहलाने लगता है। सभ्यता और संस्कृति के विकास–क्रम में युगीन– इतिहास का वर्गीकरण क्रमशः पाषाण–युग,लौह– युग, काष्ठ–युग, ऐलुमिनियम–युग और प्लास्टिक–युग में हुआ। उपभोक्ता–संस्कृति में जबसे 'यूज एण्ड थ्रो' की प्रवृत्ति विकसित हुई,तबसे अवशिष्ट की मात्रा दिनोंदिन बढ़ती गई। खासकर प्लास्टिक–अवशिष्ट तो सुरसा–रुप धारण करने लगा। प्लास्टिक सामान्यतः एक जटिल पेट्रोकेमिकल उत्पाद है। इसके स्वभाविक अपघटन में काफी समय लगता है। यह न तो शीघ्रता से गलता है, न तो सड़ता है। इसे जलाकर नष्ट करने में अत्यंत जहरीली गैस निकलती है, जो वातावरण को प्रदूषित कर देती है। सांस लेने में कठिनाई होने लगती है, दम घुटने की नौबत आ जाती है। इन दिनों औद्योगिक, ऋषि एवं घरेलू उपयोग के साथ–साथ स्वास्थ्य–संकाय में भी प्लास्टिक उत्पाद का प्रयोग तेजी से होने लगा है। उसी मात्रा में अवशिष्ट भी बढ़ने लगा है, जो चिन्तनीय है। चूंकि अवशिष्टों का प्रथम जनन–स्थल घर है, अतः इसके घरेलू–प्रबंधन पर सर्वप्रथम विचार करना है। घरेलू–प्रबंधन में सबसे पहले 'फेंकना' बंद करना होगा उसके बाद तीन 'R' यानी रिड्यूस (Reduce), रियूज (Ruse) और रिसाइकिल (Recycle) प्रक्रिया को व्यवहार में लाना होगा। उक्त तीन 'R' में दो और

'R' यथा रिथॉट (उपयोग हेतु पुर्विचार) और रिजेक्ट को जोड़ने की अनिवार्यता महसूस होने लगी है। इस प्रसंग में आर्थिक बचत और प्राकृतिक संसाधन की सीमित मात्रा के आलोक में रियूज यानी पुनर्पयोग सिद्धान्त को अपनाना श्रेयस्कर होगा। जैसे गोबर से खाद बनाना, अखबार या रद्दी कागज से गत्ता पैकेट तैयार करना और पुराने कपड़ों से गद्दी बनाना आदि। अभी लेखक द्वारा अवशिष्ट के रियूज के तहत एक प्रयोग किया, जो बड़ा उपयोगी और प्रशंसा के योग्य साबित हुआ। एक लीटर दूध के खाली पाँच, जिसे आमूमन घर के बाहर फेंक दिया जाता है, में मिट्टी भरकर एक बीज डालकर पौध उगाई गई। नर्सरी– कार्य हेतु प्लास्टिक नहीं खरीदनी पड़ी। उसी तरह पाँच किलो आटा, चावल–दाल के खाली प्लास्टिक थैला में मिट्टी भरकर गमला का स्थान दिया,जो काफी मजबूत और टिकाऊ निकला साथ ही सौ रुपये की बचत हुई। इस प्रयोग से परिसर भी साफ रहने लगा। प्लास्टिक–अवशिष्ट के घरेलू–प्रबंधन का उत्तम प्रदर्श निकला। मुहल्ला के अन्य लोगों ने भी इसे अपनाया। रसोई–घर और स्नान–घर से निकले व्यवहृत–जल का उपचार कर गृहवाटिका में सिंचन और कार–धुलाई में उपयोग किया जाना चाहिये। घरेलू–अवशिष्ट का जनन अथवा निर्माण हम करते हैं, इसलिये इसका पर्यावरणीय–प्रबंधन करना हमारा पहला दायित्व है। शासन–प्रशासन कब और कहाँ कहता है कि उपयोग/उपभोग के बाद जहाँ–तहाँ फेंक दें। इसे फेंकिये मत। घर में ही अवशिष्ट का निर्धारित वर्गीकरण कर निगम या अन्य साफ–सफाई एजेंसी (सम्भव हो तो अनुरोधपूर्वक बुलाकर) को हस्तगत कराने का कष्ट करें। कहा गया है कि ***'स्वच्छ रहेंगे तो स्वस्थ रहेंगे, वर्ना रोगों के अधीनस्थ रहेंगे।'***

क्रमशः

कर्म योगी कृष्ण

डॉ. अलका यतींद्र यादव
स्वतंत्र लेखन
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

भगवान श्रीकृष्ण का जन्म आज से करीब 3231 वर्ष पहले मथुरा में हुआ था। मनुष्य जन्म में श्रीकृष्ण आध्यात्मिक और लौकिक भाग्य की नई कृति की तरह थे। श्रीकृष्ण, द्वापरयुग में जन्मे थे। हिंदू पुराणों के अनुसार वह इस पृथ्वी पर 125 वर्षों तक रहे।

उनका जीवन संघर्ष मय था लेकिन उन्होंने अपने हर संघर्ष में अपने विवेक, बुद्धि और बेहतर रणनीतिक तरीके से हर समस्या को सुलझाया। श्रीकृष्ण एक सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति थे। चाहे वो महाभारत का काल हो या अपने मामा कंस का संहार, उन्होंने हर काम बड़े ही कुशलता (परफेक्शन) से किया।

भगवान विष्णु के मानव अवतार श्रीकृष्ण दिव्यता से परिपूर्ण थे। उन्होंने पृथ्वी पर जितनी भी लीलाएं की उनसे किसी न किसी विषम परिस्थिति से बाहर आने की सीख मिलती है। उनका जीवन ललित कलाओं जैसे कविता, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला का खजाना था। एक बालक, एक भाई, एक योद्धा, एक शिष्य, एक गुरु, एक चरवाहे, एक दूत,एक मित्र और गोपियों के प्रिय कान्हा के बारे में हम सदियों से चर्चा करते आ रहे हैं। उनके द्वारा द्वापर युग में की गई लीलाओं को सुनकर बड़े हुए हैं। हम ये पौराणिक कहानियां कभी भूल नहीं सकते, क्योंकि यह कहानियां ही हैं जो श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें उन जैसे महान कार्य करने को प्रेरित करती हैं। जीत और हार जिंदगी में होती रहती हैं। श्रीकृष्ण की जिंदगी में ये दोनों ही रहीं। लेकिन उनकी मुस्कान उनके चेहरे पर सदैव रही।

श्रीकृष्ण का पूरा जीवन, असाधारण गतिविधियों भरा हुआ है। उन्होंने पृथ्वी पर रहकर कई असाधारण काम किए। इन सभी लीलाओं का श्रीमद्भागवत्, गंगा संहिता, विष्णु पुराण ब्रह्म में उल्लेख मिलता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण, महाभारत, हरिवंश पर्व और कई अन्य पुराणों में

विस्तार से बताया गया है। श्रीकृष्ण का जन्म बहुत ही असामान्य परिस्थितियों में हुआ (जिसके बारे में सभी अच्छे से जानते हैं)।

द्वापर युग में जन्मे कृष्ण बहुत ही आधुनिक थे। उचित कार्य करने के लिए वह साम–दाम–दंड–भेद हर विधि अपनाते थे। कृष्ण का चरित्र समझना आसान नहीं है। इतना विशाल चरित्र कान्हा ने मानव जीवन लेकर प्रस्तुत किया कि आज भी हम उसे जितना समझने का प्रयास करते हैं वह बड़ा होता जाता है। जानें, कैसे आज की परिस्थितियों में भी कान्हा के चरित्र की कुछ बातें सार्थक हैं। यह तो आप जानते हैं कि श्री कृष्ण का जीवन विपरीत परिस्थितियों से गुजरा है । लेकिन मुश्किलों का सामना करने का उनका अपना ढंग था। मथुरा के कारागृह में जन्म लेते ही गोकुल के लिए भागने से लेकर अंतिम दिनों में यदुकुल के अंतर्कलह तक, श्रीकृष्ण ने तनाव ही झेला, भागमभाग ही की है, लेकिन हम उन्हें पूजते हैं एक मुस्कराती हुई तस्वीर में। श्री कृष्ण के जीवन से यही सीख मिलती है कि परिस्थितियां कितनी भी विपरीत हों,आप मुस्कुराना ना छोड़ें। चेहरे पर चमकती मुस्कुराहट ही आपको कई समस्याओं के समाधान का रास्ता देती है। याद रखिये जीवन हमेशा एक ही लकीर पर नहीं चल सकता। परिस्थितियां तेजी से बदलती हैं, अगर उनमें रहना सीख लिया जाए तो समय का हर पल हमारे साथ चलने को तैयार है। बस हमें यह तय करना होगा कि हमें उस परिस्थिति का सामना कैसे करना है। हम सभी को अपने छोटे बच्चों को कृष्ण बनाना चाहिये, खूब सजाना चाहिये, लेकिन ये भी बताना चाहिये कि बेटा कृष्ण होना मात्र बाँसुरी बजाना, रास रचाना नहीं है बल्कि कृष्ण होना द्रौपदी का रक्षक सुदामा का मित्र रुकमणी का पति और गीता का वो कर्मयोगी योगेश्वर होना है जिसके ज्ञान के आगे समूची दुनिया का ज्ञान आज भी बौना है। यह बताना भी आवश्यक है कि योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण बांसुरी बजाने के साथ–साथ सुदर्शन चक्र चलाना भी जानते थे इसलिए समय पड़ने पर दुष्टों का नाश करने के लिए आपको सुदर्शन चक्र चलाना होगा। जो कृष्ण को समझ लेगा वह कभी अवसाद में नहीं जाएगा। कृष्ण आनंद के देवता है। कुछ छूटने पर भी कैसे खुश रहा जा सकता है, यह कृष्ण से अच्छा कोई सिखा ही नहीं सकता इस सृष्टि के सबसे बड़े मार्गदर्शक, मोटिवेटर हैं छत्तीसगढ़ में श्रीकृष्ण के लोक स्वरूप:–

छत्तीसगढ़ में जन्माष्टमी में श्रीकृष्ण के लोक स्वरूप की कल्पना करके इसे ''आठे कन्हैया'' कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि श्रीकृष्ण के स्वरूप की कल्पना उसके लोक रक्षक के रूप में की गयी है। सभी जानते हैं कि उनका जन्म न केवल कंस की आततायी से मथुरा, गोकुल और वृंदावन वासियों को मुक्ति दिलाने के लिए हुआ था बल्कि पूरी सृष्टि को आसुरी वृत्ति से मुक्ति दिलाने के लिए हुआ था।

साथ ही माता देवकी के गर्भ से जन्म लेने, माता यशोदा को बाललीला दिखाने, हस्तिनापुर के कौरव–पांडवों के युद्ध में लोकलीला उनका मुख्य उद्देश्य था। डॉ. पीसीलाल यादव का मानना है कि जब लोगों की आवाज कंस के सामंती व्यवस्था में कुचली जा रही थी तब लोक भावनाओं की रक्षा करने के लिए श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। आठे कन्हैया लोक संस्थापक श्रीकृष्ण के जनमोत्सव का केवल प्रतीक मात्र नहीं है, अपितु लोक समूह की शक्ति को प्रतिस्थापित करने का पर्व भी है। ■

प्रगटे कंस निकन्दन

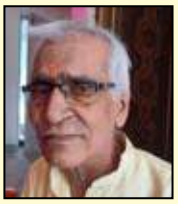

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
स्वतंत्र लेखन
बिहार

देवकी नन्दनम् देवकी नन्दनम् ।
प्रगटे कंस निकन्दन जगत वन्दनम् ।।
देवकी नन्दनम् देवकी.....
कट गईं बेड़ियाँ खुल गए कारा द्वार,
सो गए दुष्ट नीच अधम पहरेदार,
देवकी बसूदेव हैं हर्षित अपार,
जय हो जय हो कृपासिंधु सुखकन्दनम् ।
देवकी नन्दनम् देवकी नन्दनम् ।
देवकी नन्दनम् देवकी.....
बसुदेव पुत्र को लेकर चले जमुना पार,
टोकरी में लिटा कर जगत जगदाधार,
चरण छूने को मचली जमुन आई बाढ़,
तब चरण परस दी भगत वत्सलम् ।
देवकी नन्दनम् देवकी नन्दनम् ।
देवकी नन्दनम् देवकी.....
जमुना सिमटी विनम्र हुए जलधार,
ले किशन को पहुँच गए पिता नन्दद्वार,
राखि कृष्ण ले कन्या गए कारागार,
योगमाया जगत जननी जग वन्दनम् ।
देवकी नन्दनम् देवकी नन्दनम् ।
देवकी नन्दनम् देवकी.....

दोस्ती हमेशा मेरी आध्यात्मिक यात्रा के मूल में रही है।

– हेनरी नोवेन

09 अक्टूबर पर विशेष

विश्व डाक दिवस

सभ्यता संस्कृति एवं विरासत का प्रतिबिम्ब हैं डाक टिकट

कृष्ण कुमार यादव
भारतीय डाक सेवा,
पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

डाक–टिकटों का व्यवस्थित संग्रह अर्थात 'फिलेटली' मानव के लोकप्रिय शौकों में से एक है। 'शौकों का राजा' और 'राजाओं का शौक' कहे जाने वाली इस विधा ने आज सामान्य जनजीवन में भी उतनी ही लोकप्रियता प्राप्त कर ली है। सामान्यतः डाक टिकटों का संग्रह ही फिलेटली माना जाता है पर बदलते वक्त के साथ फिलेटली डाक टिकटों, प्रथम दिवस आवरण, विशेष आवरण, पोस्ट मार्क, डाक स्टेशनरी एवं डाक सेवाओं से सम्बन्धित साहित्य का व्यवस्थित संग्रह एवं अध्ययन बन गया है। रंग–बिरंगे डाक टिकटों में निहित सौन्दर्य जहाँ इसका कलात्मक पक्ष है, वहीं इसका व्यवस्थित अध्ययन इसके वैज्ञानिक पक्ष को प्रदर्शित करता है।

''फिलेटली'' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द 'फिलोस' व 'एटलिया' से हुई। सन् 1864 में 24 वर्षीय फ्रांसीसी व्यक्ति जार्ज हॉर्पिन ने ''फिलेटली'' शब्द का इजाद किया। इससे पूर्व इस विधा को ''टिम्बरोलॉजी'' नाम से जाना जाता था। फ्रेंच भाषा में टिम्बर का अर्थ टिकट होता है। एडवर्ड लुइन्स पेम्बर्टन को 'साइन्टिफिक फिलेटली' का जनक माना जाता है। सामान्यतः डाक टिकट एक छोटा सा कागज का टुकड़ा दिखता है, पर इसका महत्व और कीमत दोनों ही इससे काफी ज्यादा है। डाक टिकट वास्तव में एक नन्हा राजदूत है, जो विभिन्न देशों का भ्रमण करता है एवम् उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति और विरासत से अवगत कराता है। यह किसी भी राष्ट्र के लोगों, उनकी आस्था व दर्शन, ऐतिहासिकता, संस्कृति,

विरासत एवं उनकी आकांक्षाओं व आशाओं का प्रतीक है। यह मन को मोह लेने वाली जीवन शक्ति से भरपूर है।

फिलेटली अर्थात डाक–टिकटों के संग्रह की भी एक रोचक कहानी है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरोप में एक अंग्रेज महिला को अपने श्रृंगार–कक्ष की दीवारों को डाक टिकटों से सजाने की सूझी और इस हेतु उसने सोलह हजार डाक–टिकट परिचितों से एकत्र किए और शेष हेतु सन् 1841 में 'टाइम्स ऑफ लंदन' समाचार पत्र में विज्ञापन देकर पाठकों से इस्तेमाल किए जा चुके डाक टिकटों को भेजने की प्रार्थना की। तब से डाक–टिकटों का संग्रह एक शौक के रूप में परवान चढ़ता गया। दुनिया में डाक टिकटों का प्रथम एलबम 1862 में फ्रांस में जारी किया गया। विश्व में डाक–टिकटों का सबसे बड़ा संग्रह ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के पास रहा है। भारत में भी करीब पचास लाख लोग व्यवस्थित रूप से डाक–टिकटों का संग्रह करते हैं। भारत में डाक टिकट संग्रह को बढ़ावा देने के लिए प्रथम बार सन् 1954 में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उसके पश्चात से अनेक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय प्रदर्शनियों का आयोजन होता रहा है। वस्तुतः इन प्रदर्शनियों के द्वारा जहाँ अनेकों समृद्ध संस्कृतियों वाले भारत राष्ट्र की गौरवशाली परम्परा को डाक टिकटों के द्वारा चित्रित करके विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सन्देशों को प्रसारित किया जाता है, वहीं दूसरी तरफ यह विभिन्न राष्ट्रों के मध्य सद्भावना एवम् मित्रता में उत्साहजनक वृद्धि का परिचायक है। इसी परम्परा में भारतीय डाक विभाग द्वारा 1968 में डाक भवन नई दिल्ली में 'राष्ट्रीय फिलेटली संग्रहालय' की स्थापना की गई और 1969 में मुम्बई में प्रथम फिलेटलिक ब्यूरो की स्थापना की गई। डाक टिकटों के अलावा मिनिएचर शीट, सोवीनियर शीट, स्टैम्प शीटलैट, स्टैम्प बुकलैट, कलैक्टर्स पैक व थीमेटिक पैक के माध्यम से भी डाक टिकट संग्रह को रोचक बनाने का प्रयास किया गया है।

सामान्यतः लोग डाक विभाग द्वारा जारी नियत डाक टिकटों के बारे में ही जानते हैं। ये डाक टिकट विशेष रूप से दिन–प्रतिदिन की डाक–आवश्यकताओं के लिए जारी किए जाते हैं और असीमित अवधि के लिए विक्रय हेतु रखे जाते है। पर इसके अलावा डाक विभाग किसी घटना, संस्थान, विषय–वस्तु, वनस्पति व जीव–जन्तु तथा विभूतियों के स्मरण में भी डाक टिकट भी जारी करता है, जिन्हें स्मारकधविशेष डाक टिकट कहा जाता है। सामान्यतया ये सीमित संख्या में मुद्रित किये जाते हैं और फिलेटलिक ब्यूरो/काउन्टर/प्राधिकृत डाकघरों से सीमित अवधि के लिये ही बेचे जाते हैं। नियत डाक टिकटों के विपरीत ये केवल एक बार मुद्रित किये जाते हैं ताकि पूरे विश्व में चल रही प्रथा के अनुसार संग्रहणीय वस्तु के तौर पर इनका मूल्य सुनिश्चित हो सके। परन्तु ये वर्तमान डाक टिकटों का अतिक्रमण नहीं करते और सामान्यतया इन्हें डाक टिकट संग्राहकों द्वारा अपने अपने संग्रह के लिए खरीदा जाता है। इन स्मारक/विशेष डाक टिकटों के साथ एक 'सूचना विवरणिका'' एवं ''प्रथम दिवस आवरण'' के रूप में एक चित्रात्मक लिफाफा भी जारी किया जाता है। इसके अलावा डाक विभाग विशेष प्रकार की 'सोवयूनीर–शीटस' भी जारी करता है, जिसमें एक ही सीरीज के या बहुधा विभिन्न डिजाइन के डाक टिकटों का संग्रह होता है। डाक टिकट संग्राहक प्रथम दिवस आवरण पर लगे डाक टिकट को उसी दिन एक विशेष मुहर से विरूपित करवाते हैं। इस मुहर पर टिकट के जारी होने की तारीख और स्थान अंकित होता है।

जहाँ नियमित डाक टिकटों की छपाई बार–बार होती है, वहीं स्मारक डाक टिकट सिर्फ एक बार छपते हैं। यही कारण है कि वक्त बीतने के साथ अपनी दुर्लभता के चलते वे काफी मूल्यवान हो जाते हैं। भारत में सन् 1852 में जारी प्रथम डाक टिकट (आधे आने का सिंदे डाक) की कीमत आज करीब ढाई लाख रूपये आंकी जाती है। कभी–कभी कुछ डाक टिकट डिजाइन में गड़बड़ी पाये जाने पर बाजार से वापस ले किये जाते हैं, ऐसे में उन दुर्लभ डाक टिकटों को फिलेटलिस्ट मुँहमांगी रकम पर खरीदने को तैयार होते हैं। विश्व का सबसे मँहगा और दुर्लभतम डाक–टिकट ब्रिटिश गुयाना द्वारा सन् 1856 में जारी किया गया एक सेंट का डाक–टिकट है। 2 सेमी. X 3 सेमी. के आकार वाला यह डाक टिकट मैजेंटा रंग के कागज पर काले रंग में मुद्रित है। इसमें तीन जहाजों की छवि और लैटिन में यह आदर्श वाक्य लिखा है, 'हम देने और बदले में उम्मीद रखते हैं।' इसका प्रचलन एक बार लंदन से टिकटों की शिपमेंट में देरी होने के बाद शुरु हुआ। पोस्टमास्टर ने ब्रिटिश गुयाना में जॉर्जटाउन में रॉयल गैजेट अखबार के मुद्रकों से शिपमेंट के आने तक तीन डाक टिकटों को छापने के लिए कहा– 1–सेंट मेजेंटा, 4–सेंट मेजेंटा और 4–सेंट ब्लू। विश्व में एकमात्र उपलब्ध इस डाक–टिकट को ब्रिटिश गुयाना के डेमैरैरा नामक नगर में सन् 1873 में एक अंग्रेज बालक एल. वॉघान ने रद्दी में पाया और छः शिलिंग मे नील मिककिनॉन नामक संग्रहकर्ता को बेच दिया। फिर यह अनेक डाक टिकट संग्रहकर्ताओं के पास से गुजरते हुए वर्ष 1980 में जॉन डू पोंट के हाथों में आया। सन 1981 में इस डाक–टिकट को न्यूयार्क की रॉबर्ट सैगल ऑक्शन गैलेरीज इंक द्वारा 9,35,000 अमेरिकी डॉलर (लगभग चार करोड़ रूपये) में नीलाम किया गया। पुनः न्यूयॉर्क में सूदबी द्वारा आयोजित नीलामी में एक सेंट का यह डाक टिकट 18 जून 2014 को रिकॉर्ड 9.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर में बिका। यह चौथी बार था जब इस डाक टिकट ने अपनी नीलामी में खुद का ही रिकॉर्ड तोड़ा। यह एकमात्र प्रमुख डाक टिकट है जो ब्रिटिश शाही परिवार के निजी राजसी डाक टिकट संग्रह में नहीं है।

इसी प्रकार भारत के डाक टिकटों में भी सन् 1854 में जारी चार आने वाले लिथोग्राफ में एक शीट पर महारानी विक्टोरिया का सिर टिकटों में उल्टा छप गया, इस त्रुटि के चलते इसकी कीमत आज पाँच लाख रूपये से भी अधिक है। इस प्रकार के कुल चौदह–पन्द्रह त्रुटिपूर्ण डाक टिकट ही अब उपलब्ध हैं। स्वतन्त्रता के बाद सन् 1948 में महात्मा गाँधी पर डेढ़ आना, साढ़े तीन आना, बारह आना और दस रूपये के मूल्यों में जारी डाक टिकटों पर तत्कालीन गर्वनर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने गवर्नमेण्ट हाउस में सरकारी काम में प्रयुक्त करने हेतु ''सर्विस'' शब्द छपवा दिया। इन आलोचनाओं के बाद कि किसी की स्मृति में जारी डाक टिकटों के

ऊपर ''सर्विस'' नहीं छापा जाता, उन टिकटों को तुरन्त नष्ट कर दिया गया। पर इन दो-तीन दिनों में जारी सर्विस छपे चार डाक टिकटों के सेट का मूल्य आज तीन लाख रूपये से अधिक है। एक घटनाक्रम में ब्रिटेन के न्यू ब्रेंजविक राज्य के पोस्टमास्टर जनरल ने डाक टिकट पर स्वयं अपना चित्र छपवा दिया। ब्रिटेन में डाक टिकटों पर सिर्फ वहाँ के राजा और रानी के चित्र छपते हैं, ऐसे में तत्कालीन महारानी विक्टोरिया ने यह तथ्य संज्ञान में आते ही डाक टिकटों की छपाई रूकवा दी पर तब तक पचास डाक टिकट जारी होकर बिक चुके थे। फलस्वरूप दुर्लभता के चलते इन डाक टिकटों की कीमत आज लाखों में है।

कई देशों ने तो डाक टिकटों के क्षेत्र में नित नये अनूठे प्रयोग करने की पहल की है। स्विटजरलैण्ड द्वारा जारी एक डाक-टिकट से चॉकलेट की खुशबू आती है तो भूटान ने त्रिआयामी, उभरे हुये रिलीफ टिकट, इस्पात की पतली पन्नियों, रेशम, प्लास्टिक और सोने की चमकदार पन्नियों वाले डाक टिकट भी जारी किये हैं। यही नहीं, भूटान ने सुगन्धित और बोलने वाले (छोटे रिकार्ड के रूप में) डाक टिकट भी निकालकर अपना सिक्का जमाया है। सन् 1996 में विश्व के प्रथम डाक टिकट ''पेनी ब्लैक'' के सम्मान में भूटान ने 140 न्यू मूल्य वर्ग में 22 कैरेट सोने के घोल के उपयोग वाला डाक टिकट जारी किया था, जो अब दुलर्भ टिकटों की श्रेणी में आता है। भारतीय डाक विभाग ने 13 दिसम्बर 2006 को चंदन की सुगंध वाला एक डाक टिकट (15 रुपए), 7 फरवरी 2007 को गुलाब की सुगंध वाले चार डाक टिकट (5 और 15 रुपए), 26 अप्रैल 2008 को जूही की सुगंध वाले दो डाक टिकट (5 और 15 रुपए) जारी किये हैं, जो कि साल भर तक सुगन्धित रहेंगे। इसी क्रम में 23 अप्रैल, 2017 को कॉफी की सुगंध वाले डाक टिकट (100 रुपए) भी जारी किये गए। वर्ष 2019 में भारतीय इत्र विषय पर ऊद और नारंगी फूल पर आधारित चार सुगंधित स्मारक डाक टिकट (25 रुपए) जारी किये गए। भारतीय इत्र पर जारी डाक टिकट इस श्रेणी में पाँचवाँ सुगन्धित डाक टिकट है। भारत से पहले मात्र चार देशों ने सुगन्धित डाक टिकट जारी किये हैं। इनमें स्विटजरलैण्ड, थाईलैण्ड व न्यूजीलैण्ड ने क्रमशः चाकलेट, गुलाब व जैस्मीन की सुगन्ध वाले डाक टिकट जारी किये हैं तो भूटान ने भी सुगन्धित डाक टिकट जारी किये हैं।

यदि हम डाक टिकटों के इतिहास का अध्ययन करें तो पेशे से अध्यापक सर रोलैण्ड हिल (1795-1879) को डाक टिकटों का जनक कहा जाता है। जिस समय पत्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का शुल्क तय किया गया और वह गंतव्य पर लिखा जाने लगा तो उन्हीं दिनों इंगलैण्ड के एक स्कूल अध्यापक रोलैण्ड हिल ने देखा कि बहुत से पत्र पाने वालों ने पत्रों को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और पत्रों का ढेर लगा हुआ है, जिससे कि सरकारी निधि की क्षति हो रही है। यह सब देख कर उन्होंने सन् 1837 में 'पोस्ट आफिस रिफार्म' नामक पत्र के माध्यम से बिना दूरी के हिसाब से डाक/टिकटों की दरों में एक : पता लाने का सुझाव दिया। उन्होंने चिपकाए जाने वाले 'लेबिल' की बिक्री का सुझाव दिया ताकि लोग पत्र भेजने के पहले उसे खरीदे और पत्र पर चिपका कर अपना पत्र भेजें। इन्हीं के सुझाव पर 6 मई 1840 को विश्व का प्रथम डाक टिकट 'पेनी ब्लैक' ब्रिटेन द्वारा जारी किया गया।

भारत में प्रथमतः डाक टिकट 1 जुलाई 1852 को सिन्ध के मुख्य आयुक्त सर बर्टलेफ्रेरे द्वारा जारी किए गए। आधे आने के इस टिकट को सिर्फ सिंध राज्य हेतु जारी करने के कारण 'सिंदे डाक' कहा गया एवं मात्र बम्बई-कराची मार्ग हेतु इसका प्रयोग होता था। सिंदे डाक को एशिया में जारी प्रथम डाक टिकट एवं विश्व स्तर पर जारी प्रथम सर्कुलर डाक टिकट का स्थान प्राप्त है। 1 अक्टूबर 1854 को पूरे भारत हेतु महारानी विक्टोरिया के चित्र वाले डाक टिकट जारी किये गये। 21 फरवरी 1911 को विश्व की प्रथम एयरमेल सेवा भारत द्वारा इलाहाबाद से नैनी के बीच आरम्भ की गयी। 1926 में इण्डिया सिक्यूरिटी प्रेस नासिक में डाक टिकटों की छपाई आरम्भ होने पर 1931 में प्रथम चित्रात्मक डाक टिकट नई दिल्ली के उद्घाटन पर जारी किया गया। राष्ट्रमंडल देशों मे भारत पहला देश है जिसने सन् 1929 में हवाई डाक टिकट का विशेष सेट जारी किया। 1935 में ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम की रजत जयन्ती के अवसर पर प्रथम स्मारक डाक टिकट जारी किया गया।

भारत की एक लंबी विरासत, इतिहास और समृद्ध सामाजिक- सांस्कृतिक विविधता है। स्वतन्त्रता पश्चात 21 नवम्बर 1947 को प्रथम भारतीय डाक टिकट साढ़े तीन आने का ''जय हिन्द'' जारी किया गया। आजादी के बाद, भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी, साहित्य, शिक्षा, कला, संस्कृति, खेल, वाणिज्य उद्योग, जैव विविधता, अंतर्राष्ट्रीय राजनयिक सम्बन्ध एवं जनजीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं के क्षेत्र में असंख्य शानदार उपलब्धियां हासिल की हैं। ऐसे में, डाक विभाग ने आधुनिक राष्ट्र के रूप में विकसित हुए भारत की अनूठी संस्कृति और समय-समय पर हासिल विभिन्न उपलब्धियों के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करते हुए समय-समय पर कई डाक टिकट जारी किए हैं। ये डाक टिकट सिर्फ देश के अंदर ही नहीं बल्कि एक नन्हे ब्रांड एंबेसडर की तरह पूरी दुनिया में घूमकर भारत की समृद्ध संस्कृति, इतिहास, महान व्यक्तित्व, जैव विविधता और अन्य महत्वूर्ण पहलुओं का प्रचार-प्रसार करते हैं। भारत में प्रति वर्ष डाक विभाग लगभग 60 स्मारक डाक टिकट जारी करता है। तमाम महान विभूतियों और उनकी उपलब्धियों पर डाक टिकट जारी कर इतिहास के पन्नों में उनके योगदान को सुरक्षित किया जाता है। डाक टिकटों की दुनिया में अब ''माई स्टैम्प'' या ''पर्सनालाईज्ड स्टैम्प'' का भी दौर है, जहाँ कोई भी व्यक्ति एक निश्चित शुल्क देकर डाक टिकट की शीट पर अपनी और प्रियजनों की तस्वीर लगवा सकता है।

डाक टिकटों की दुनिया बेहद ही निराली है। यह किसी भी राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति एवं विरासत का प्रतिबिम्ब हैं। व्यक्तित्व परिमार्जन के साथ-साथ यह ज्ञान के भण्डार में भी वृद्धि करता है। यही कारण है कि इसे युवाओं से जोड़ने हेतु भारत सरकार द्वारा दीन दयाल स्पर्श छात्रवृत्ति योजना भी लागू की गई है। डाक टिकटों और पत्र लेखन को शिक्षा प्रणाली से जोड़कर युवा पीढ़ी को उनकी विरासत से रूबरू कराया जा रहा है। आजादी का अमृत

महोत्सव के अंतर्गत '75 लाख पोस्टकार्ड अभियान' में जिस तरह से विद्यार्थियों ने 'स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक' एवं '2047 में भारत के लिए मेरा दृष्टिकोण' विषयों पर प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर अपने मन की बात साझा की, उसकी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी काफी तारीफ की। 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत डाक विभाग ने अहर्निशं सेवामहे भाव से स्वतंत्रता आंदोलन के तमाम अकीर्तित नायकों को चिन्हित करके उनके नाम पर डाक टिकट और विशेष आवरण जारी किए ताकि इतिहास में उनका गरिमामयी स्थान सुनिश्चित किया जा सके। निश्चितत: वर्षों से डाक टिकट महत्वपूर्ण घटनाओं के विश्वव्यापी प्रसार, महान विभूतियों को सम्मानित करने एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करने हेतु कार्य कर रहे हैं। विभिन्न राष्ट्रों के बीच मैत्री की सेतु तैयार करने के साथ–साथ परस्पर एक दूसरे को समझने में भी डाक टिकटों ने सहायता प्रदान की है और आज भी इस दिशा में यह एक मील का पत्थर है।

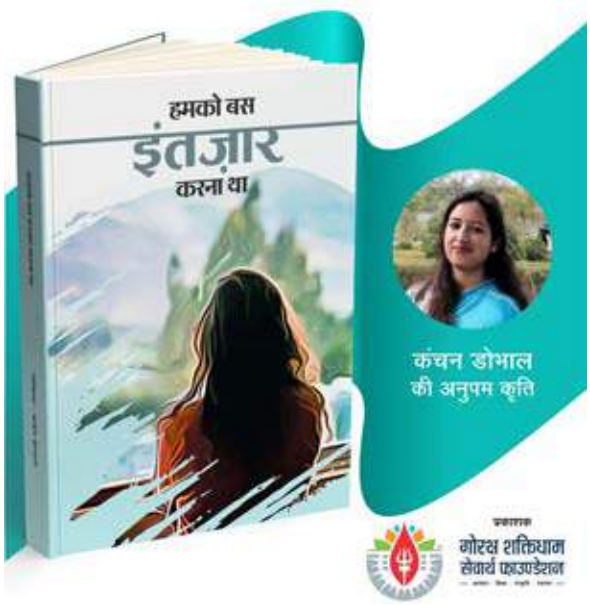

Flipkart amazon पर उपलब्ध

आध्यात्मिकता अंदर से आती है। जो बाहर की सुनता है बिखर जाता है, जो अपने अंदर की सुनता है संवर जाता है।

कुंडलिया

बेटी कभी न बोझ

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जे.एम.सी. महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

करना मत तुम भेद अब, बेटा–बेटी एक।
बेटी प्रति यदि हेयता, वह बंदा नहिं नेक।।
वह बंदा नहिं नेक, करे दुर्गुण को पोषित।
बेटी हो मायूस, व्यर्थ ही होती शोषित।।
दूषित हो संसार, पड़ेगा हमको भरना।
संतानों में भेद, बुरा होता है करना।।

बेटा कुल का नूर है, तो बेटी है लाज।
बेटा है संगीत तो, बेटी लगती साज।।
बेटी कभी न बोझ, बढ़ाती दो कुल आगे।
उससे डरकर दूर, सदा अँधियारा भागे।।
जहाँ पल रहा भेद, वहाँ तो मौसम हेटा।
नहिं किंचित उत्थान, जहाँ बस भाता बेटा।।

गाओ प्रियवर गीत तुम, समरसता के आज।
सुता और सुत एक हैं, जाने सकल समाज।।
जाने सकल समाज, बराबर दोनों मानो।
बेटी कभी न बोझ, बात यह चोखी जानो।।
संतानों से नेह, बराबर उर में लाओ।
फिर सब कुछ जयकार, अमन के नगमे गाओ।।
जाने कैसी भिन्नता, मान रहे हैं लोग।
बेटा–बेटी भेद का, पाले बैठे रोग।।
पाले बैठे रोग, बेटियाँ होतीं आहत।
बेटी कभी न बोझ, करो नहिं खुद को तुम क्षत।
कहता सच मैं आज, भले कोई नहिं माने।
बेटा–बेटी एक, सकल यह युग अब जाने।।

अँधियारा छाने लगा, भरी दुपहरी आज।
सामाजिक अपराध का, करते हम सब काज।।
करते हम सब काज, भेद संतति में देखें।
बेटी को तो बोझ, मूर्ख ही केवल लेखें।।
दोनों एक समान, सदा कुल का उजियारा।
मिलकर करते दूर, आज घर का अँधियारा।।

शक्ति आराधना का पर्व नवरात्रि

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

'या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै: नमस्तस्यै: नमो नम:।'

नवरात्रि का अर्थ है नौ रात्रियां यानी (रातें)। इन्हींनौ रात्रियों व दस दिनों में पूरे भारत मे अलग अलग तरह से शक्ति आराधना की जाती है। नवरात्रि का पर्व हमारे देश में वैदिक काल से भी पहले से मनाया जाता है। इसकी मुख्य पुस्तक 'श्री दुर्गा सप्तशती' ऋग्वेद का अंश मानी जाती है। ऋग्वेद में सभी देवी देवताओं का आवाहन, पूजन व साधना पद्धतियां बताई गयी हैं। इसी क्रम में दुर्गा सप्तशती के मंत्रों के जप हवन पूजन द्वारा साधु सन्तव श्रद्धालु सभी शक्ति की आराधना करते हैं। नवरात्रि वर्ष में दो बार आते हैं। प्रथम चौत्र मास के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से नवमी तिथि तक। इसी समय हिन्दू नव वर्ष व विक्रम संवत भी प्रारम्भ होता है। दूसरा नवरात्रि अश्विन यानी अक्टूबर माह में पितृ पक्ष के बाद प्रारम्भ होता है। इसे हम शारदीय नवरात्रि भी कहते है, क्योंकि इसी नवरात्रि से शरद ऋतु का आगमन भी होता है। ऐसा माना जाता है कि सर्व प्रथम श्री राम ने लंका युद्ध में रावण का वध करने के लिए चंडीदेवी का हवन पूजन एकसौ आठ नील कमल से किया था, और देवी ने स्वयं प्रकट हो कर उन्हेंविजय श्री का आशीर्वाद दिया था। इसी लिए इसे विजय पर्व या विजया दशमी भी कहते हैं। इस पर्व से जुड़ी एक अन्य कथा के अनुसार आठवें मनु व सूर्य के पुत्र राजा सुरथ का राज्य शत्रुओं ने नष्ट कर दिया था। तब वे समाधि नाम के वैश्य के साथ मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम में गए, उन्हें अपनी विपदा सुनाई। तब ऋषि मारकण्डेय ने उन्हें नवदुर्गा की उत्पत्ति, आराधना व शक्ति सिद्धि का मार्ग बताया। जिसका संक्षिप्त सार ये है कि नव रात्रि की नौ रात्रियों में हम मुख्यत: दुर्गा के तीन रूपों महालक्ष्मी, महाकाली व महासरस्वती की पूजा अर्चना करते हैं। इस वर्ष ये नवरात्रि 15 अक्टूबर से 23 ता तक है इसलिये 15 ता को कलश स्थापना

का विधान है। दुर्गा का अर्थ है दुर्ग के समान कठोर, शक्तिशाली व रहस्यमयी, एवम शरणागत को अटूट सुरक्षा देने वाली –

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी,
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी।

(दुर्गा के 32 नामों के स्रोत से श्रीदुर्गासप्तशती)

नवरात्रि का ये उत्सव भारत के विभिन्न भागों में अलग अलग ढंग से मनाया जाता है। गुजरात में नवरात्रों में डांडिया व गरबा नृत्य पूरी रात चलता है। बंगाल में मुख्यतः शारदीय नवरात्रि में महिषासुर मर्दिनी की मूर्ति स्थापित कर सिंदूर खेला नृत्य व विशेष आरती द्वारा मनाया जाता है। उत्तर भारत में नवरात्रि कलश स्थापन, व्रत उपवास व पुरोहितों द्वारा हवन पूजन कर के अष्टमी व नवमी को कन्या पूजन के साथ मनाया जाता है। इसमें सात या नौ कन्याओं को वस्त्रों व आभूषणों से सजा कर उन्हें स्वादिष्ट भोजन कराया जाता है। जिसमें हलुआ पूरी खीर व चने होते हैं।

कंगना कोई पहनाए कोई गेंदों के हार, मुकुट कोई पहनाए कोई फूलन करे सिंगार।' नव दुर्गा के अलग अलग नाम व रूप हैं। प्रथम शैलपुत्री, द्वितीय ब्रह्मचारिणी, तृतीय चंद्रघंटा, चतुर्थ कुष्मांडा,पंचम स्कन्धमाता, षष्ठम कात्यायनी, सप्तम कालरात्रि, अष्टम महागौरी व नवमं सिद्धिदात्री।

भारत के प्राचीन ऋषियों ने दिन की अपेक्षा रात्रि को अधिक महत्व दिया। इसी कारण होलिका दहन, शिव रात्रि, व दीपावली, नवरात्रि जैसे उत्सव रात्रि में ही मनाने की परंपरा है। लेकिन इसका वैज्ञानिक तथ्य ये है कि दिन में सूर्य की किरणें आवाज की तरंगों व रेडियो एक्टिविटी को आगे बढ़ने से रोक देती है। उसी प्रकार मन्त्रों के जाप की विचार तरंगों में भी रुकावट पड़ती है। इसी कारण ऋषि मुनियों ने इस पूजा के लिए रात्रि से अधिक महत्व दिन का बताया है ।उदाहरण के लिए जो आवाज दिन में दूर तक नहीँ जाती वही रात्रि में देर तक व दूर तक गूंजती है।

एक धार्मिक मान्यता के अनुसार इन्हीं नौ दिनों में माता दुर्गा धरती पर आती हैं, क्यों की धरती उनका मायका है। शक्ति के धरा पर आने की खुशी में पूरे देश मे उत्सव मनाया जाता है। नवरात्रों में व्रत का आध्यात्मिक महत्व ये है कि पहले तीन दिन के व्रत से सतोगुण का शमन होता है। जिससे सत्व में वृद्धि से शरीर हल्का व ऊर्जावान हो जाता है। दूसरे तीन दिन व्रत से रजोगुण की निवृत्ति होती है। जिससे अंतःकरण की शक्तियां जाग्रत हो कर उर्ध्वगामी होती है। अंतिम तीन दिन में उपवास के द्वारा तमस पर विजय प्राप्त की जाती है। इसीलिए नवरात्रों को विजय पर्व भी कहा जाता है। अपने अन्तस् की व बाहरी बुराइयों को मिटा कर ही विजय पर्व मनाया जा सकता है।

नवरात्रों की नौ देवियां नारी जीवन की विभिन्न अवस्थाओं को दर्शाती हैं। जैसे जन्म से बचपन तक नारी शैलपुत्री स्वरूपा होती है। फिर वह किशोरी ब्रह्मचारिणी का रूप लेती है। फिर वह चंद्रघंटा यानी पूर्ण युवती हो चुकती है। उसकी कांति व तेज चन्द्रमा के समान शीतल व आनंदमय होते हैं। अनेक शक्तियों, योग्यता, व विद्वता से युक्त हो कर वही कुष्मांडा स्वरूप हो जाती है।

स्कन्धमाता स्वरूप में वही नारी माँ के समान ममतामयी व बलशाली रूप धारण करती है। छान्दोग्य श्रुति के अनुसार भगवती की शक्ति से उतपन्न कुमार का नाम स्कंध हुआ और वे स्कन्धमाता कहलाई कात्यायन ऋषि की पुत्री कात्यायनी हुई जो सर्व कार्य सिद्धा थीं। वस्तुतः साधारण नारी भी अपनी सन्तान व परिवार के सभी कार्य सिद्ध करती है। सप्तम देवी कालरात्रि हैं जो सभी विघ्नों व विघ्न कर्ताओं का विनाश करती हैं। यहाँ तथ्य ये है कि पति व परिवार की राह में आने वाले विघ्नों व विघ्न कर्ताओं का प्रत्येक स्त्री कालरात्रि के समान ही विनाश करना चाहती है ।

देवी का आठवां स्वरूप महागौरी का है जिसकी आराधना अष्टमी तिथि को की जाती है। महागौरी देवी अपने गौर वर्ण व वात्सल्यमयी स्वरूप के कारण सभी के लिए सुग्राह्य व सुलभ है। अब प्रौढ़त्व की दहलीज पा कर ज्यादातर नारी महागौरी स्वरूपा हो जाती है। ईर्ष्या द्वेष छल कपट इन सबसे ऊपर उठ कर वह जीवन में सभी का भला ही करती है। शिवत्व की अधिकता ही नारी को महागौरी बनाती है –

सँहार असुरों का यूँ किया, खेलती ज्यूँ खेल कोई।
माँ तेरी भक्ति के रंग से, शत्रुता तिरोहित हो गयी।

नवी देवी सिद्धि दात्री हैं,यानी जीवन के अंतिम पड़ाव पर आ कर सभी स्त्रियां सिद्धि दात्री स्वरूपा हो जाती हैं अपने पराये के भेदभाव के बिना सभी को अभीष्ट प्रदान करनेवाली नारी सिद्धिदात्री ही है।

विश्वेश्वरि तुमविश्व का आधार हो,
विश्वरूपा तुम विश्व पालनहार हो।'

प्रिय पाठकों नौ दिन व्रत उपवास करके ही शक्ति आराधना का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता है ।जिस तरह माता दुर्गा ने संसार से आसुरी वृत्तियों व बुरी शक्तियों को मिटा कर सबका कल्याण किया है, ठीक वैसे ही हमेंभी अपनी आत्मिक व आध्यात्मिक शक्तियों को जाग्रत करना चाहिए। नवरात्रों में कन्या पूजन की परंपरा ये सन्देश देती है कि नारी शक्ति स्वरूपा है, नारी का सदैव व सर्वत्र सम्मान होना चाहिए। अगर हम अपने ही घर की बहू बेटियों को सम्मान नहीं देते तो कन्या पूजन की परंपरा सिर्फ लकीर पीटने के समान है। क्योंकि प्रत्येक नारी में दुर्गा का कोई न कोई रूप अवश्य निहित होता है। दुर्गा सप्तशती में नारी जीवन की हर समस्या का समाधान निहित है। बुद्धि विवेक साहस शौर्य व धैर्य जैसे गुणों का विकास शक्ति आराधना के इस पर्व से होता है। हमें औरों की अपेक्षा स्वयं को विवेकशील व परिष्कृत करना चाहिए –

'मीरा सा मन सीता सा तप, मैया दे दोनों अधिकार।'

अध्याय दशम दुर्गासप्तशती में जब शुम्भ का दूत देवी के सम्मुख शुम्भ से विवाह का प्रस्ताव रखता है तब वे किस चतुराई सेजवाब देती हैं –

किम करोमि यद ना लोचिता पूरा, यो मेजयति संग्रामे, यो मे दर्पम व्यपोहति। सा मे भर्ता भविष्यति।'

अर्थात–पराजित जो मुझे संग्राम में करे, अभिमान मेरा खन्ड खंड करे। बलवान मुझसे अधिक रहे, वह एक स्वामी मेरा रहे। देवी का ये प्रत्युत्तर सन्देश है, समाधान है उन तमाम युवतियों के लिए जो छेड़खानी या बलात्कार का शिकार हो रहीं हैं। आज समय है कि सभी नारियां अपनी आंतरिक शक्तियों को जाग्रत करें और विषम स्थितियों में निर्भय हो कर विवेकपूर्ण ढंग से समस्या सुलझाएं

भारत में देवी के इक्यावन शक्तिपीठ हैं जिन्हें सिद्ध पीठ भी कहा जाता है। नवरात्रों में इन शक्तिपीठों का दर्शन व पूजन करने से भी सभी प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते हैं – **देवी के इक्यावन पीठाधार, करूँ प्रणाम सौ सौ बार। सुखी हो सबका घर संसार, मिले सबको मैया का प्यार।**

> **याद रखें महान प्रेम और महान उपलब्धियों में महान जोखिम भी उठाने पड़ते हैं।**
>
> *– दलाई लामा*

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?

क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज – कलम उठाते हैं?
क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनांए आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2023

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेंजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह ई पत्रिका पूर्णतः निः शुल्क है। अपनी रचनाएँ ई–मेलः **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई-पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

प्रेरणादायी प्रस्तुतीकरण के विशिष्ट मानदंड

संतुष्टि और उपयोगिता का सकारात्मक प्रतिफल

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

निष्पक्ष मन:स्थिति का बोध: वर्तमान आधुनिक जीवन की आपाधापी में स्वयं के स्वरूप को प्रस्तुत करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन गया है। आज जब व्यक्ति के द्वारा कुछ प्रकट करने की स्थिति निर्मित होती है तब सामान्यत: अच्छाई को व्यक्त करने का प्रयास किया जाता है। यहाँ प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या स्वयं के सबल पक्षों का स्पष्टीकरण ही किसी व्यक्ति की वास्तविक पहचान होती है? इस प्रकार यथार्थ की स्थिति को हम जानते हैं और मूल भावना लगभग यह भाव स्थापित करने में असफल हो जाती है जिसका उद्देश्य अन्तत: स्वयं को सही सिद्ध करना होता है। स्वयं के सम्बन्ध में केवल नकारात्मक विचारधारा का प्रस्तुतीकरण किसी भी रूप में समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। यह तर्क दिया जा सकता है कि अच्छाई अथवा बुराई को सम्प्रेषित करने से बेहतर होगा कि हम जो कुछ भी हैं केवल उस स्वरूप को ही प्रकट किया जाए। व्यक्तिगत् जीवन के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए अभिव्यक्ति की वास्तविकता को सत्य के स्वरूप में व्यक्त कर देना जिससे सामने वाले व्यक्ति या समूह को किसी प्रकार का भ्रम न रह जाए। किसी व्यक्ति या व्यवस्था द्वारा सत्य के प्रकटीकरण की स्थिति के पश्चात् मन:स्थिति में बदलाव उत्पन्न होना स्वभाविक प्रक्रिया है। प्राय: व्यक्तिगत् अनुभूति के स्तर पर यह अहसास होता है कि व्यक्ति द्वारा स्वयं की स्पष्ट विवेचना करने पर नियमित व्यवहार के वास्तविक सम्बन्ध बदल जाया करते हैं। विरोधाभाषी स्थितियों से सम्बन्ध स्थापित होने के पश्चात् किसी परिस्थिति का प्रभाव व्यक्तिगत् जीवन पर नहीं पड़ना सशक्त मन:स्थिति का परिणाम होता है। जब व्यक्तिगत् स्थिति का प्रस्तुतीकरण प्रेरणा का कारण बन जाए और उसका आभाष परिवर्तन के सिलसिले में होने लगे तो यह सुखद पृष्ठभूमि की परिणिति का स्वरूप हो सकता है। स्वयं का प्रकटीकरण जब दूसरे पक्ष के लिए संतुष्टि एवं उपयोगिता का कारक बनने लगे तो यह निष्पक्षता का आधार सामाजिक स्वीकारोक्ति का कारण बन जाया करता है। जीवन में परिणाम के प्रति सकारात्मक मनोदशा का बन जाना हमारे आशावाद की पक्षधरता का प्रतिफल है जो व्यक्ति को उसकी सात्विक मन:स्थिति तक पहुँचाने में मदद्गार साबित होता है।

उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण की भावना: अभिव्यक्ति की स्थितियों के अन्तर्गत् जब उत्कृष्टता का समावेश किया जाता है तब सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण में गुणवत्ता की अपेक्षा किया जाना

स्वाभाविक है। सामान्यतः व्यक्तिगत् तौर पर यह स्वीकार किया जाता है कि स्वयं को प्रकट करने का आशय है आन्तरिक रूप से अपने प्रति जुड़ाव की अनुभूति का स्पष्ट साक्षात्कार होना। प्रस्तुतीकरण की गहराई इस बात का प्रमाण होती है जिसमें विषय वस्तु के साथ अध्ययनशीलता का अनुभव हो जाता है। उत्कृष्टता के प्रति निष्ठा की भावना का विकसित स्वरूप साधारण स्थितियों को विशिष्ट प्रस्तुतीकरण की अवस्था में सहजता से परिवर्तित करने में सक्षम होता हैं। परस्पर मानवीय सम्बन्धों की विवेचना के संदर्भ में जितने भी मनोवैज्ञानिक अध्ययन हुए हैं प्रायः उनमें भावनात्मक लगाव की स्थिति को मुख्य रूप से स्वीकार किया गया है। प्रस्तुतीकरण की व्यापकता को समझने पर यह ज्ञात हो जाता है कि अभिव्यक्ति की व्यावहारिकता केवल बाह्य स्वरूप की दृष्टि नहीं है बल्कि अन्तर्मन की स्थिति का प्रकटीकरण है। स्वप्रेरित मनःस्थिति का भावनात्मक पक्ष प्रायः दूसरों को प्रेरणादायी अनुभूति तक ले जाने में सक्षम हुआ करता है। प्रस्तुतीकरण के मामले में यह सुनिश्चित करना अत्यन्त कठिन हो जाता है कि जो कुछ व्यक्त किया गया, उसका स्वरूप उत्कृष्टता के स्तर पर कितना खरा उतरता है? जब वास्तविक अवधारणा के अनुसार पुष्टि करने की स्थिति निर्मित होती है तब अकादमिक विधि को अपनाते हुए अभिव्यक्ति को पूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। समग्रता के साथ प्रस्तुतीकरण उस समय प्रेरणा का कारण बन जाया करता है जब सम्पूर्ण परिदृश्य के अनुछुये पहलुओं को मर्यादा के अनुसार विधिवत तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।

आन्तरिक संतुष्टता का स्तरः प्रस्तुतीकरण का आधारभूत पक्ष आन्तरिक संतुष्टता की अनुभूति है जिसमें अभिव्यक्ति के पूर्व स्वयं की प्रतिपुष्टि का आँकलन किया जाना चाहिए। समग्रता के साथ किया गया प्रस्तुतीकरण एकाँगी परिवेश तक सीमित न रहकर विविध परिदृश्य को प्रकट करने में परिपूर्ण होता है। संतुष्टता के पैमाने में सबसे सशक्त माध्यम स्वयं के संदर्भ एवं प्रसंग से जुड़ा होता है, जिसमें मूल्याँकन की पर्याप्त गुँजाईश होती है। व्यावहारिक दृष्टि से अवलोकन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि प्रस्तुतीकरण व्यक्तिगत् मानसिक अवस्था के साथ उससे जुड़ी मनःस्थिति पर निर्भर करता है। प्रस्तुतीकरण का यथार्थ यह अभिव्यक्त करने में सक्षम होता है जिसके अन्तर्गत् विभिन्न घटनाओं का वर्णन और उसका प्रभाव सम्मिलित रूप से परिलक्षित होते हैं। वैचारिक पृष्ठभूमि से सम्बद्ध चिन्तन को आज प्रस्तुतीकरण के सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार के रूप में स्वीकार किया जाता है। व्यक्तिगत् जीवन से संतुष्टि के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि व्यक्ति विचारगत् भाव से कहाँ तक संतुष्ट हो सका है। संतुष्टि की व्यावहारिकता को विश्लेषित करते हुए मनोवैज्ञानिकों ने आत्म अनुभूति से पूर्व सामाजिक सुरक्षा एवं आधारभूत आवश्यकता को महत्व प्रदान किया है। जीवन की चिन्तनशील प्रक्रिया में विचार पक्ष को अधिकाधिक सम्मान प्राप्त हुआ है जिसे मानव की बौद्धिक सक्षमता के रूप से स्वीकार किया गया है। व्यक्ति के स्तर को संतुष्टता के साथ अनुभव करने से यह ज्ञात हो जाता है कि व्यक्तिगत् जीवन और वैचारिक पृष्ठभूमि के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित हो गया है जो मानवीय गरिमा का वास्तविक प्रस्तुतीकरण है।

सामाजिक उपयोगिता की महत्ताः विभिन्न मनःस्थितियों का प्रस्तुतीकरण सामाजिक उपयोगिता की महत्ता को ध्यान में रखकर किया जाए तो निश्चित ही स्वीकारोक्ति का स्तर बढ़ जाएगा। जब तथ्यों एवं कथ्यों की विवेचनाओं का स्तर अभिव्यक्ति के चरम भाव में रहता है तब प्रायः सामाजिक अनुशीलता की उपेक्षा हो जाया करती है। व्यक्तिगत् अनुभवों का स्वरूप किसी भी विधि से अपने व्यक्त भावों के विरोधाभाष को संभालते हुए क्षमा याचना की अपेक्षा से प्रस्तुतीकरण करने में सफलता हासिल कर लिया करते हैं। प्रस्तुतीकरण के सम्बन्ध में यह तर्क दिया जाता है कि कई बार त्वरित एवं बेबाक् टिप्पणियों की आवश्यकता होती है उस स्थिति में गहन मनन-चिन्तन का अभाव विशेषीकृत भाषा और उसकी उपयोगिता की ओर अग्रसर हो पाना संभव नहीं होता है। अभिव्यक्ति के आशावाद की ओर मुखरित होने पर यह दृष्टिगोचर होता है कि जो कुछ व्यक्त किया जाए वह सामाजिक उपयोगिता की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए। व्यक्तिगत् अथवा सामूहिक दृष्टिकोंण को प्रासंगिक बनाने के लिए प्रस्तुतीकरण के अन्तर्गत् सामाजिक उपयोगिता की महत्ता को स्वीकार किया गया है। जीवन के विविध पक्षों को दृष्टिगत् रखते हुए यह बात इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि पठन-पाठन के साथ मनन-चिन्तन और वर्णन की गतिविधियाँ बौद्धिक विलास का पर्याय बनकर न रह जाएँ। सामान्य तौर पर अच्छा व्यक्त कर देना और उसके लिए सकारात्मक प्रतिपुष्टि प्राप्त कर लेने की होड़ ने प्रस्तुतीकरण की सामाजिक उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। वर्तमान परिदृश्य के आँकड़ों पर दृष्टि डाली जाए तो ज्ञात हो जाएगा कि अधिकाँश प्रस्तुतीकरण प्रभावित करने और होने की मंशा से अभिप्रेरित हैं। प्रस्तुतीकरण की यथार्थता का आशय यह कदापि नहीं है कि आनंद की अनुभूतियों से मुक्त होकर कठोर अनुशासित अभिव्यक्ति को आत्मसात कर लिया जाए लो केवल सामाजिक उपयोगिता और उसकी महत्ता पर ही बल देती हो।

गुणात्मक प्रतिफल का लक्ष्यः सामान्यतः व्यक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त किये जाने वाले समस्त मनोभाव गुणात्मक प्रतिफल का लक्ष्य लेकर निर्धारित किये जाते हैं। प्रस्तुतीकरण की मनःस्थिति निर्मित होते ही सकारात्मक दिशा की ओर अग्रसर होने की लालसा उत्पन्न होना उद्देश्य प्राप्ति का प्रमाण होता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के अन्तर्गत् व्यक्तिगत् जीवन की वर्तमान स्थितियों का मूल्याँकन यह बताता है कि व्यक्तिगत् स्तर पर कार्य करते हुए स्वयं के प्रस्तुतीकरण की चिंता किस प्रकार से दिलो-दिमाग पर हावी है। प्रबन्धकीय तकनीकों के माध्यम से ''उद्देश्यों के द्वारा प्रबन्धन'' को आज के नवीनतम् संदर्भों में कार्य की लक्ष्य पूर्णता एवं गुणात्मकता हेतु विकसित कर लिया गया है। जब हम प्रस्तुतीकरण के अन्तर्गत् प्रेरणादायी स्थितियों का समावेश करने की बात करते हैं तब अभिव्यक्ति की साधारण प्रस्तुती पर विशिष्टता का दबाव बढ़ जाना एक स्वभाविक प्रक्रिया हो जाती है। सामाजिक परिदृश्य में जो कुछ प्रस्तुत किया जा रहा है उसमें परिवर्तन की सत्ता को धीरे-धीरे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता जा रहा है। नवीनता की पृष्ठभूमि को

ध्यान में रखकर संतुष्टता के साथ उपयोगिता का सामन्जस्य स्थापित करना वर्तमान युग की आवश्यकता बन गया है। आज प्रतिस्पर्धा के युग में साधारण मनःस्थितियों से कार्य सम्पन्नता की बात करते हुए गतिशील रहने की अपेक्षा करना उचित नहीं है। प्रस्तुतीकरण के सम्बन्ध में गुणात्मकता की पैरवी करना वास्तविक रूप से सकारात्मक प्रतिफल की परिणिति होती है। समग्रता को केन्द्र बिन्दु मानकर परिणाम के साथ लक्ष्य की प्राप्ति हेतु यत्नूपर्वक प्रयत्न करना चाहिए जिससे प्रेरणादायी अभिव्यक्ति को अनुभूति के स्तर पर प्राप्त किया जा सके।

चुनौतीपूर्ण उत्तरदायित्व की स्वीकारोक्तिः स्वयं को सामाजिक संदर्भो के मध्य जब प्रस्तुत करने की स्थितियाँ निर्मित होती हैं तब चुनौतिपूर्ण उत्तरदायित्व की स्वीकारोक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा होता है। प्रेरणादायी प्रस्तुतीकरण के विविध आयामों का अध्ययन इस बात का प्रमाण है कि व्यक्ति को संतुष्टि और उपयोगिता के अन्तर्गत् सकारात्मक प्रतिफल के लिए अपनी शक्ति का विनियोजन करना पड़ता है। अनुभूति के स्तर की विवेचनायें मनःस्थिति की निष्पक्षता को प्रकट करने में सक्षम होती हैं जिससे सशक्त अभिव्यक्ति का प्रस्तुतीकरण संभव हो पाता है। व्यक्तिगत् मूल्याँकन की समग्रता इस बात के लिए सदैव तत्पर रहती है कि प्रस्तुतीकरण की स्थिति उत्पन्न होने पर उत्कृष्टता की भावना का समावेश अवश्य होना चाहिए। प्रस्तुतीकरण करते समय भले ही बाह्य पक्ष को प्रभावित करने के लिए सम्पूर्ण बल लगा दिया जाए लेकिन आन्तरिक संतुष्टता के स्तर को कभी भी नकारा नहीं जाना चाहिए। अभिव्यक्ति की विभिन्न शैलियों को अपनाने के बावजूद भी सामाजिक उपयोगिता की महत्ता को स्वीकार करते हुए प्रस्तुतीकरण की सम्पन्नता होना चाहिए। प्रस्तुतीकरण और प्रतिपुष्टि के मध्य सकारात्मक सम्बन्धों की स्थिति तभी निर्मित हो सकती है जब गुणात्मक प्रतिफल का लक्ष्य बनाकर अभिव्यक्ति की पूर्णता सम्पन्न की जाये। आज अभिव्यक्ति के अन्तर्गत् वर्तमान स्थितियों की आलोचनात्मक विवेचना करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि प्रस्तुतीकरण के व्यावहारिक स्तर को क्रियान्वित करने में कितनी चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। प्रस्तुतीकरण के अन्तर्गत् विद्यमान चुनौतीपूर्ण उत्तरदायित्व की स्वीकारोक्ति को संभालने की शक्ति व्यक्तिगत् अभिव्यक्ति में सम्मिलित होना चाहिए। जब व्यक्ति स्वयं के द्वारा प्रकट स्वरूपों का सूक्ष्मता से अध्ययन करता है तब उसे यह स्पष्ट होता है कि उसके व्यक्त भावों को अन्ततः किस रूप में स्वीकार किया गया है। प्रस्तुतीकरण की व्यापकता को इस वास्तविक प्रसंग में आत्मसात् किया जाना चाहिए जिसमें जीवन के सर्वांगींण विकास की बात को महत्व प्रदान किया गया है। जीवन में व्यक्त शारीरिक भाव–भंगिमाओं से लेकर मौखिक एवं लिखित मनःस्थितियों के लेखे–जोखे को जब व्यक्तिगत् व्यवहार के स्तर पर मूल्याँकन किया जाता है तब प्रस्तुतीकरण की व्यापकता स्पष्ट हो जाती है। अतः अभिव्यक्ति की प्रासंगिकता को चुनौतिपूर्ण उत्तरदायित्व के रूप में स्वीकार करते हुए संतुष्टि एवं उपयोगिता के मानदण्डों को सकारात्मक प्रतिफल से सम्बद्ध करना होगा तभी प्रेरणादायी प्रस्तुतीकरण का उद्देश्य संभव हो सकेगा।

श्रीमती शोभा रानी तिवारी
इंदौर, मध्य प्रदेश

भीड़ लघुकथा

'मन्नू' ने कहा... 'मम्मी हम रावण देखने जाएंगे'। तभी राजू ने मम्मी से पूछा...'हम हर वर्ष रावण का पुतला जलाते हैं, लेकिन वह हर बार और अधिक शक्तिशाली होकर प्रगट हो जाता है आखिर क्यों मम्मी'? 'रावण मरता क्यों नहीं'?

'मम्मी ने बताया बेटा.. रावण बुराई का प्रतीक है', जो आज तक हर इंसान के मन में चोरी, डकैती, कालाबाजारी, भ्रष्टाचारी के रूप में विद्यमान है'। तभी मुन्नी ने आवाज दी... 'भैया चलो ना जल्दी से'.. 'ठीक है मुन्नी' जब तीनों जाने लगे तो मम्मी ने कहा... 'बेटा वहां भीड़ होगी .. तुम तीनों एक–दूसरे का हाथ पकड़े रहना, वर्ना भीड़ में खो जाओगे तो मुश्किल हो जाएगी'।

'जी मम्मी' कहकर तीनों चले गए।

वहां रावण का पुतला देखा.... जो बड़ी–बड़ी आंखो से डरा रहा था। बड़े–बड़े दांत दिखाकर चिढ़ा रहा था। काली मूंछें पर ताव देकर कहा रहा था, कि तुम लोग मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते हो। वहां राम और लक्ष्मण के वेश में दो बालक आए थे। जब राम ने बाण चलाया..तो रावण जलने लगा। तभी बम की आवाज से मुन्नी डर गई, और एक चिंगारी छिटककर भीड़ में आ गिरी। लोग इधर– उधर भागने लगे... तभी राजू, मन्नू और मुन्नी का हाथ छूट गया, वे अलग–अलग हो गए, अब राजू क्या करें?, वह तो घबरा गया।

कुछ देर बाद मन्नू तो मिल गया, लेकिन मुन्नी नहीं मिल रही थी। राजू ने भीड़ कम होने का इंतजार किया, जब भीड़ कम हुई तो, मन्नू की निगाह मुन्नी पर पड़ी, वह एक कोने में बैठी रो रही थी, और भैया– भैया कहकर आवाज लगा रही थी। राजू और मन्नू दोनों दौड़कर मुन्नी के पास पहुंचे, और उसे गले से लगा लिया।

घर जाकर सारी बातें मम्मी को सुनाई और संकल्प किया कि अब हम भीड़ में कभी नहीं जाएंगे।

विजयोत्सव का पर्व विजयादशमी

अनुकूलता की उलझन और अहम् के अंतर्द्वंद से उबरने का साहसिक प्रयास

सुजाता प्रसाद
लेखिका,
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
मोटिवेशनल ओरेटर
नई दिल्ली

दशहरा का त्योहार भारतीय संस्कृति में वीरता की आराधना और शौर्य की उपासना का प्रतीक है। यह पर्व आश्विन शुक्ल की दशमी तिथि को मनाया जाता है। भगवान श्री राम ने इसी दिन रावण का वध किया था। माँ दुर्गा ने इसी दिन असुर महिषासुर का वध किया था। नौ दिनों तक शक्ति की उपासना के बाद आशीर्वाद प्राप्त कर भगवान श्री राम ने रावण का वध किया और नौ दिनों तक युद्ध करते हुए मां भगवती दुर्गा ने महिषासुर का वध किया। दशहरा भगवान श्री राम की विजय के उपलक्ष्य में मनाया जाता है और मां दुर्गा के पूजन महोत्सव के रूप में। इसलिए इस दशमी को विजयादशमी के नाम से भी जाना जाता है। विजयादशमी शक्ति पूजा का पर्व और शस्त्र पूजन की तिथि है।

'दश हरति इति दशहरा'। दशहरा एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है दस को हरने वाली तिथि। दशहरा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शब्द संयोजन दश + हरा से हुयी है, जिसका अर्थ भगवान राम द्वारा रावण के दस सिरों को काटने व उसके पश्चात रावण की मृत्यु रूप में राक्षस राज के आंतक की समाप्ति से है। यही कारण है कि इस दिन को विजयदशमी अर्थात अन्याय पर न्याय की विजय के रूप में भी मनाया जाता है।

दशहरा पर्व से पहले हर वर्ष शारदीय नवरात्रि आती है। कहा जाता है कि शारदीय नवरात्र के समय मातृस्वरूपिणी नौ देवियों का अवतरण होता है। ये देवियां प्रथम शैलपुत्री, द्वितीय ब्रह्मचारिणी, तृतीय चंद्रघंटा, चतुर्थ कूष्मांडा, पंचम स्कंदमाता, षष्ठम कात्यायनी, सप्तम कालरात्रि, अष्टम महागौरी एवं नवम सिद्धिदात्री रूप में नवधान्य सहित पृथ्वी पर अवतरित होती हैं। इसलिए इस समय मां दुर्गा की लगातार नौ दिनों तक पूजा होती है। नवधान्य का अर्थ है नौ अनाज जो समृद्धि और अच्छे स्वास्थ्य के प्रतीक माने जाते हैं। ये अनाज हैं – गेहूं, चावल, तुअर दाल, चना, मूंग, सफेद फलियां, काले तिल, काली दाल और कुलथी दाल। सनातन धर्म में नवधान्य की बहुत महत्ता है। ये पवित्र अनाज विभिन्न पूजा अनुष्ठानों के लिए आवश्यक वस्तुओं में से एक हैं। नवधान्य का आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व तो है ही, यह हमारे स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है।

दशहरा का विशेष दिवस शास्त्रों में अक्षय तिथि के रूप में वर्णित है, इसलिए दशहरा के पावन दिन नए कार्य का शुभारंभ किया जाता है। कहा जाता है इस दिन जो कार्य आरम्भ किया जाता है उसमें विजय अवश्य मिलती है। जैसे इस दिन लोग अपने बच्चों की विद्या आरम्भ करवाते हैं, नए उद्योग की शुरुआत करते हैं, आयुध पूजन (शस्त्र, औजार की पूजा) करते हैं, भूमि पूजन एवं गृह प्रवेश करना शुभ माना जाता है, बीज बोने की भी परंपरा है आदि आदि।

भगवान श्री राम के समय से ही दशहरा विजय प्रस्थान का प्रतीक दिवस भी बन गया, क्योंकि इसी दिन भगवान श्री राम रावण से युद्ध करने गए थे और विजयी हुए थे।

भारत विविधताओं का देश है, यहां की संस्कृति इतनी समृद्ध कि देशवासियों के सहयोग से इसका संरक्षण किया जा सका है। उत्सवों और त्योहारों को मनाने में भी इस विविधता के दर्शन होते हैं। भारत में विभिन्न प्रदेशों में दशहरा मनाने की अपनी अपनी परंपरा है, जिसे सभी श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा काफी लोकप्रिय है। यह एक सप्ताह तक मनाई जाती है। इस पर्व पर आसपास के बने पहाड़ी मंदिरों से भगवान रघुनाथ जी की मूर्तियाँ एक जुलूस के रूप में लाकर कुल्लू के मैदान में रखी जाती हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम-धाम से झाँकी निकाल कर पूजन करते हैं। श्रद्धालु नृत्य-संगीत के द्वारा अपना उल्लास प्रकट करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है।

कर्नाटक में मैसूर का दशहरा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित है वाडियार राजाओं के काल से आरंभ इस दशहरे को अभी भी शाही अंदाज में मनाया जाता है और लगातार दस दिन तक चलने वाले इस उत्सव में राजाओं के स्वर्ण सिंहासनों का प्रदर्शन किया जाता है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीप मालिकाओं से दुलहन की तरह सजाया जाता है। सुसज्जित तेरह हाथियों की शाही शोभायात्रा इस दशहरे की शान है। रावण दहन का आयोजन यहां नहीं किया जाता है।

आंध्र प्रदेश के तिरुपति बालाजी मंदिर में शारदीय नवरात्र को ब्रह्मोत्सवम् के रूप में मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इन नौ दिनों के दौरान सात पर्वतों के राजा अलग-अलग बारह वाहनों की सवारी करते हैं तथा हर दिन एक नया अवतार लेते हैं। इस मनोरम दृश्य का मंचन किया जाता है फिर इसके बाद भगवान के सुदर्शन चक्र की पुश्करणी में डुबकी लगाई जाती है जिसे चक्रस्नान कहते हैं। इसके साथ आंध्र प्रदेश में दशहरा सम्पन्न हो जाता है।

केरल में दशहरे की धूम धाम दुर्गा अष्टमी से पूजा के साथ शुरू होती है। मां सरस्वती की प्रतिमा सुसज्जित कर उनके आस पास पवित्र पुस्तकें रखी जाती हैं और उस स्थान को अस्त्रों से सजाया जाता है। उत्सव का अंत विजयदशमी की पूजा के साथ संपन्न होता है।

बिहार, बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है। यहाँ देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों में विराजमान किया जाता है। त्योहार के दौरान शहर में जगह-जगह स्टाल मिठाइयों से भरे रहते हैं। चारों ओर उत्सव का माहौल रहता है। यहाँ षष्ठी के दिन दुर्गा देवी के आमंत्रण एवं प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन किया जाता है। उसके पश्चात सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी के दिन प्रातः और सायंकाल मां दुर्गा की पूजा की जाती है। दशहरा वाले दिन विसर्जन की यात्रा बहुत शोभनीय, दर्शनीय और भावुक कर देने वाली होती है।

पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस दौरान यहाँ आपस में पारंपरिक मिठाई और उपहारों का आदान-प्रदान किया जाता है। रावण दहन के आयोजन होते हैं, व मैदानों में मेले लगते हैं।

तमिलनाडु में मुरगन मंदिर में होने वाली नवरात्र की गतिविधयाँ प्रसिद्ध हैं। दशहरा नौ दिनों तक चलता है जिसमें पहले तीन दिन धन और समृद्धि की देवी मां लक्ष्मी का पूजन होता है, अगले तीन दिन कला और विद्या की देवी मां सरस्वती की अर्चना की जाती है और अंतिम दिन शक्ति की देवी मां दुर्गा स्तुति की जाती है।

गुजरात में दशहरा के दौरान गरबा व डांडिया रास की झूम रहती है। मिट्टी के घड़े में दीयों की रोशनी से प्रज्वलित गरबो के इर्द-गिर्द गरबा करती महिलायें इस नृत्य के माध्यम से देवी का आह्वान करती हैं। मिट्टी के सुशोभित रंगीन घड़े देवी का प्रतीक माना जाते हैं। गरबा के बाद डांडिया रास का पारंपरिक नृत्य किया जाता है। पुरुष एवं स्त्रियाँ दो छोटे छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए गोल गोल घूम कर नृत्य करते हैं।

कश्मीर में नवरात्रि के पर्व को श्रद्धा से मनाया जाता है। परिवार के सारे बड़े सदस्य नौ दिनों तक सिर्फ पानी पीकर उपवास करते हैं। अत्यंत पुरानी परंपरा के अनुसार नौ दिनों तक वहां के लोग माता खीर भवानी के दर्शन करने के लिए जाते हैं। यह मंदिर एक झील के बीचों बीच बना हुआ है।

कहते हैं कि जब नवरात्र के अंतिम दिन भगवान श्री राम ने माँ दुर्गा की उपासना की थी तब मां ने उन्हें युद्ध में विजय प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया था। इसके अगले ही दिन दशमी को भगवान श्री राम ने रावण का अंत कर उस पर विजय पायी, तभी से हर्षोल्लास से विजय पर्व मनाने की परंपरा की शुरुआत हुई। आज भी प्रतीकात्मक रूप में रावण के पुतले का दहन कर अन्याय पर न्याय के विजय का शंखनाद किया जाता है।

विजयोत्सव का यह पर्व विजयादशमी असत्य पर सत्य की विजय का पर्व है। भारतीय संस्कृति पुरातन काल से ही वीरता व शौर्य की उपासक रही है। दशहरा का पर्व हमें दस प्रकार के अवगुण काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। व्यक्ति विशेष एवं समाज में वीरता का संचार हो इस मंगलकामना के साथ दशहरा का पर्व मनाया जाता है।

सामाजिक संपर्कों का महत्त्व

भावना दामले
स्वतंत्र लेखन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज के साथ ही उसे रहना है। स्वस्थ सामाजिक संबंध उसके जीवन का आधार है। स्वस्थ सामाजिक संबन्धों तथा शान्तिपूर्वक जीने के लिए आपस में संपर्क होना जरूरी है। आपसी संपर्क नही होगा तो मानव अकेला रह जायेगा फिर समाज का कोई महत्व ही नही रहेगा। वर्तमान समय में सामाजिक संपर्क कम होते जा रहे हैं। इसके साथ ही पारिवारिक संपर्कों में भी कमी आ गई है। किसी भी समाज में बदलाव या परिवर्तन की प्रक्रिया जल्दी नही होती है। यह धीरे–धीरे होती रहती है। इसके बहुत से कारण हो सकते हैं।

नौकरी अथवा व्यवसाय की व्यस्तता। जीविकोपार्जन के लिए होने वाला आवश्यक स्थानांतर। बाहरी चमक दमक से प्रभावित होना। सबसे बड़ा कारण आभासी दुनिया का अधिक से अधिक उपयोग। इसका आवश्यकता से ज्यादा पड़ने वाला प्रभाव तथा दुष्परिणाम। आभासी दुनिया से मिलने वाले आभासी सुख में ही संतुष्ट रहना और उस आनन्द को सर्वोच्च आनन्द मानने की भूल करना। उपकरण हमारे लिए है, हम उपकरण के लिए नही, पर कभी – कभी इससे उलटा होता है। उपकरण हम पर हावी हो जाते हैं। हम स्वामी है, उपकरण हमारे सेवक है स पर देखने में यह आता है कि उपकरण स्वामी बनते जा रहे हैं और हम सेवक की भूमिका निभा रहे हैं। हम सभी मानते हैं कि मोबाईल तथा अन्य साधन उपयोगी है और इससे बहुत सारे कार्य आसानी से हो जाते हैं, पर जहाँ तक आपसी संपर्क की बात होती हैं। उसकी शुरुवात सभी को करनी चाहिए।

आपस में मेलजोल रखना, एकत्रित होना तथा सुख दुख में साथ होना बहुत जरूरी है। इसकी पहल सभी को साथ होकर करनी चाहिए। आपसी मेल जोल तथा संपर्क का अभाव बहुत सारे सामाजिक नुकसानों का कारण बनता है। कभी कभी यह भी देखने में आता है कि कुछ लोगों का अपने मुहल्ले के लोगों से भी परिचय नही होता स बच्चे अपने रिश्तेदारों तथा सगे – सम्बन्धी यों को भी नही पहचानते क्योंकि संपर्क का अभाव होता है।

आज सभी को एक–दूसरे की जरूरत पड़ सकती है। कठिनाइयों में किसी का पीठ पर सांत्वना भरा हाथ सुकून देता है। आशा की नई उम्मीद भर सकता है स मोबाईल या अन्य माध्यमों द्वारा यह सम्भव नही है। पारिवारिक तथा सामाजिक संपर्क बनाने तथा बढ़ाने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। संपर्क करने की पहल खुद से कर सकते हैं। सामने वाले की राह न देखें। सम्पर्क करते समय केवल अपनी ही बात न कहे, उसकी भी सुने। आपसी बात चित के समय केवल अपने स्वार्थ या फायदे की बात न सोंचे स्वस्थ सामाजिक संबन्धों के लिए भी आपस में मिलें।

विवाह तथा अन्य आयोजनों में सम्भव हो तो अवश्य शामिल हो तथा बच्चों को भी शामिल करें और भावी पीढ़ी को इसका महत्व समझाये स अपनी कॉलोनी तथा पडोसियों से उचित संबंध रखें। समय आने पर ये काम आते हैं। याद रखिए इन रिश्तों का संबंध दोस्ती की तरह होता है। 'इस हाथ लेना, उस हाथ देना' है। जितना आप दोस्ती की कदर करेंगे, उतना ही सामने वाला आपको अहमियत देगा।

ईमानदार लकड़हारे की कहानी

एक गाँव में एक लकड़हारा रहता था। वह बहुत गरीब था। वह जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाता था। उन लकड़ियों को वह बाजार में बेचता। उसी से उसका गुजारा होता था। हर रोज की तरह उस दिन भी वो लकड़हारा जंगल में लकड़ियाँ काट रहा था। जिस पेड़ से वह लकडियाँ काट रहा था। वह पेड़ नदी के किनारे था। लकड़ीयों को काटते हुए, अचानक लकड़हारे के हाथ से कुल्हाड़ी छूट गयी। हाथ से छूटकर कुल्हाड़ी उस नदी में जा गिरी।

वो नदी बहुत गहरी थी। इसलिए लकड़हारा उस नदी में जा नहीं सकता था। वो कुल्हाड़ी नदी में गिर जाने के कारण वह बहुत दुखी था। उसी दुख में वह नदी के किनारे बैठ कर रोने लगा। इतने में, नदी में से एक देवदूत बाहर आया। उसने उस लकड़हारे से उसकी परेशानी का कारण पूछा। तो उसने सारी बात उस देवदूत को बता दी। लकड़हारे की बात को सुनकर वो देवदूत नदी के अन्दर चला गया। कुछ क्षण बाद जब वो बापस आया। तब उसके हाथ में एक सोने की कुल्हाड़ी थी। उसने कहा– 'लकड़हारे, यह लो अपनी कुल्हाड़ी। जो नदी में गिर गई थी।'

लकड़हारे ने उस कुल्हाड़ी को देखा और कहा–'यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है। मेरी कुल्हाड़ी तो लोहे की थी।' देवदूत ने नदी में फिर डुबकी लगाई। इस बार वह एक चाँदी की कुल्हाड़ी लेकर आया। देवदूत ने फिर लकड़हारे से कहा–'यह लो अपनी कुल्हाड़ी।' लकड़हारा फिर से हाथ जोड़कर बोला– 'महाराज! यहा भी मेरी कुल्हाड़ी नहीं है। मेरी कुल्हाड़ी तो लोहे की बनी हुई थी।' देवदूत ने नदी में फिर डुबकी लगाई। इस बार वह एक लोहे की कुल्हाड़ी लेकर आया। लकड़हारे ने जब अपनी लोहे की कुल्हाड़ी देखी। तो वह बहुत खुश होकर देवदूत से बोला– यही है मेरी कुल्हाड़ी। आपका बहुतबहुत धन्यवाद! आपने मेरी कुल्हाड़ी इस नदी से लाकर दी। इसके बिना तो मैं कुछ काम भी नहीं कर सकता था। मेरे पास दूसरी कुल्हाड़ी लाने के पैसे भी नहीं थे। आपका बहुत–बहुत शुक्रिया। देवदूत उस लकड़हारे की सच्चाई और इमानदारी से बहुत खुश हुआ। उसने उसे लोहे के साथ–साथ सोने और चाँदी की दोनों कुल्हाड़ी भी लकड़हारे को दे दीं।

कहानी से सीख – हमें कभी लालच नहीं करना चाहिये। लालच इन्सान को सदैव गलत रास्ते पर ले जाता है।

लंदन मेरी दृष्टि में

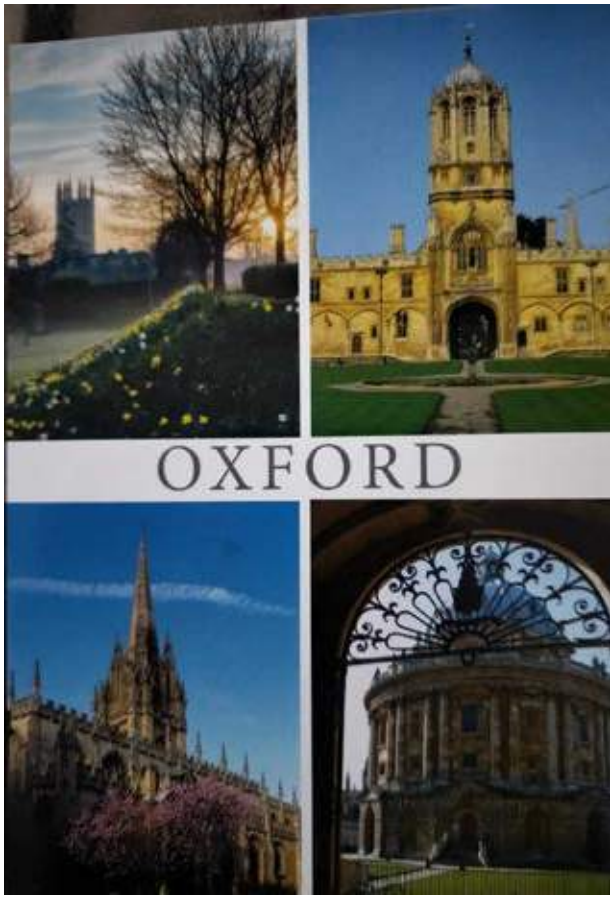

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

आपने अक्सर लोगो को कहते सुना होगा कि –
पर्वताः दुरतः रम्या।
(पर्वत दूर से ही रमणीय लगते है)
आम भाषा मे –दूर के ढोल सुहावने।

अक्सर आपने लोगो को पाश्चात्य संस्कृति संस्कृति, रहन सहन, पहनावा, खानपान आदि के विरोध में बात करते सुना होगा। क्योंकि पश्चिमी देशों के प्रति एक गलत धारणा लोगो के मन मे घर कर गयी है। मेरा मेरा मानना है हर व्यक्ति, हर परिवार, देश मे, कुछ न कुछ तो ऐसा विलक्षण होता है जो उसे औरों से भिन्न दर्शाता है।

2023 अगस्त में हमने अपनी पुत्री के पास लंदन जाने का प्रोग्राम बनाया। कुछ देशों में जाने का भी प्रोग्राम बन गया। कुल मिलाकर पूरे एक महीने का प्रोग्राम बनाया गया । लंदन प्रवास के दौरान मैंने धीरे धीरे वह के वातावरण, खानपान, वहाँ की संस्कृति, लोग, शिक्षा, शिक्षण संस्थान, धार्मिक मान्यताओं की जानकारी लेनी शुरू की। दिन पर दिन जैसे जैसे वहाँ के लोगो से परिचय हुआ मैने सभी को शिष्ट पाया।

मुझे वहाँ के वातावरण ने बेहद प्रभावित किया एकदम प्रदूषण रहित स्वच्छ नीला आसमान, सुदूर फैली हरीतिमा, हल्की से हवा में ठंडक मौसम को और भी खुशनुमा बना रही थी कुल मिलाकर सब कुछ मन को अति प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त था।

स्वच्छता – वहां की साफ सुथरी सड़कें, असंख्य पार्क, न्यूनतम ट्रैफिक मुझे आश्चर्य चकित कर रहा था। सिटी की बात छोड़ दीजिए। पार्को में भी मैंने देखा कि जिसके भी साथ

पालतू पशु है उसके हाथ मे प्लास्टिक चढ़ी है। समझ नही पा रही थी कि ऐसा क्यों है। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि जहाँ जहाँ उनका अबोध पालतू कुत्ता विष्ठा करता उसकी विष्ठा को तुरंत साफ करना मालिक की ड्यूटी है। सभी ओर से अपने देश को साफ सुथरा रखना नागरिकों की सामूहिक जिम्मेदारी है। और न मानने पर कड़े दंड व जुर्माने का प्रावधान है। दुबई की तरह स्वच्छ्ता व अपराध के विषय मे नियम बहुत सख्त है। क्योंकि भय बिन प्रीत न होय। कहीं भी गंदगी या पान की पीक देखने को नही मिली।

ज्ञान का प्रसिद्ध केंद्र : विश्व प्रसिद्ध ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, केम्ब्रिज विश्वविद्यालय इंग्लैंड में ही स्थित है मेरी रुचि को देखते हुए यहां के प्रसिद्ध ऑक्सफोर्ड सिटी जाने का प्रोग्राम बनाया। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ऑक्सफोर्डशायर इंग्लैंड में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा स्वायत्त संस्थान है। जो कि विश्व के महान विश्वविद्यालयों में गिना जाता है यह लंदन से 80 किलोमीटर उतर पश्चिम थेम्स नदी के ऊपरी मार्ग पर स्थित है। ऑक्सफोर्डशायर में स्थित इसको ऑक्सफोर्ड सिटी के नाम से ही जाना जाता है इसके अंतर्गत 39 विद्यालय आते है। पूरा शहर ही कॉलेज से भरा है। वे भी इतने पास पास कि एक कॉलेज एक दम बाद दूसरा कॉलेज शुरू हो जाता है। थोड़ी दूर पर विश्वप्रसिद्ध लाइब्रेरी, म्यूजियम आदि स्थित है। ऑक्सफोर्ड विश्व विद्यालय ने विश्व को महान हस्तियां दी। यही से ही ब्रिटिश प्रधानमंत्री मारग्रेट थैचर ने विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की एडम स्मिथ महान अर्थशास्त्री व दार्शनिक बेलिओल कॉलेज के छात्र थे। टोनी ब्लेयर पूर्व ब्रिटिश प्रधानमंत्री सेन्टजॉन्स कॉलेज के छात्र रहे। भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने ऑक्सफोर्ड से ही शिक्षा ली। बिल क्लिंटन अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति बी ऑक्सफोर्ड के यूनिवर्सिटी कॉलेज के छात्र थे। सबसे गर्व की बात है कि डॉ. राधा कृष्णन 1936 से 1952 तक ऑक्सफोर्ड विश्विद्यालय के पहले भारतीय प्रोफेसर रहे। उसके बाद वे उपराष्ट्रपति बने और फिर 1962 से 1967 तक भारत के दूसरे राष्ट्रपति बने। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का इतिहास जानकर मन हर्ष से भर गया कि जिस स्थान पर इतनी महान विभूतियों ने शिक्षा पाई उस स्थान को करीब से देखने का अवसर मिला ।

ऑक्सफोर्ड सिटी पहुँच कर पाया कि ऑक्सफोर्ड विश्व विद्यालय के अंतर्गत आने वाले 39 महलनुमा कॉलेज है। ऑक्सफोर्ड विश्व विधालय में प्राचीनतम यूनिवर्सिटी कॉलेज, बेलिओल कॉलिज है। बेलिओल कॉलिज, ट्रिनिटी कॉलेज, क्वीन कॉलेज, मेट्रन, सोमेरविले, टेम्पलटन बहुत ही पास पास इस सिटी में स्थित है एक कॉलिज से निकलते ही दूसरा कॉलेज आ जाता था। एक कॉलेज की बाउन्ड्री समाप्त होते ही दूसरा कॉलेज शुरू हो जाता था। हर थोड़ी दूर पर हरे भरे वृक्षो से सुसज्जित कॉलेज के परिसर देखकर मन प्रसन्न हो रहा था। हर कॉलेज की भव्य पुरातन आज भी शान से खड़ी थी जो कि आज भी तत्कालीन सुदृढ़ भवन स्थापत्य कला की मानो गवाही सी दे रही थी, इन कॉलेज में प्रतिवर्ष लाखों विद्यार्थी अपना भविष्य बनाने आते है। यहां विज्ञान, कला, भाषा, वाणिज्य, गणित मैनेजमेंट विदेश भाषा और भी अनेको प्रोफेशनल कोर्स चुनने का विद्यार्थियों को अवसर मिलता है।

निः शुल्क स्वास्थ्य सेवा : प्रसिद्ध शिक्षण संस्थानों के अलावा वह मैंने पाया सभी नागरिकों के इलाज के लिए सरकारी अस्पताल में मुफ्त उच्च कोटि की स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध है। हो

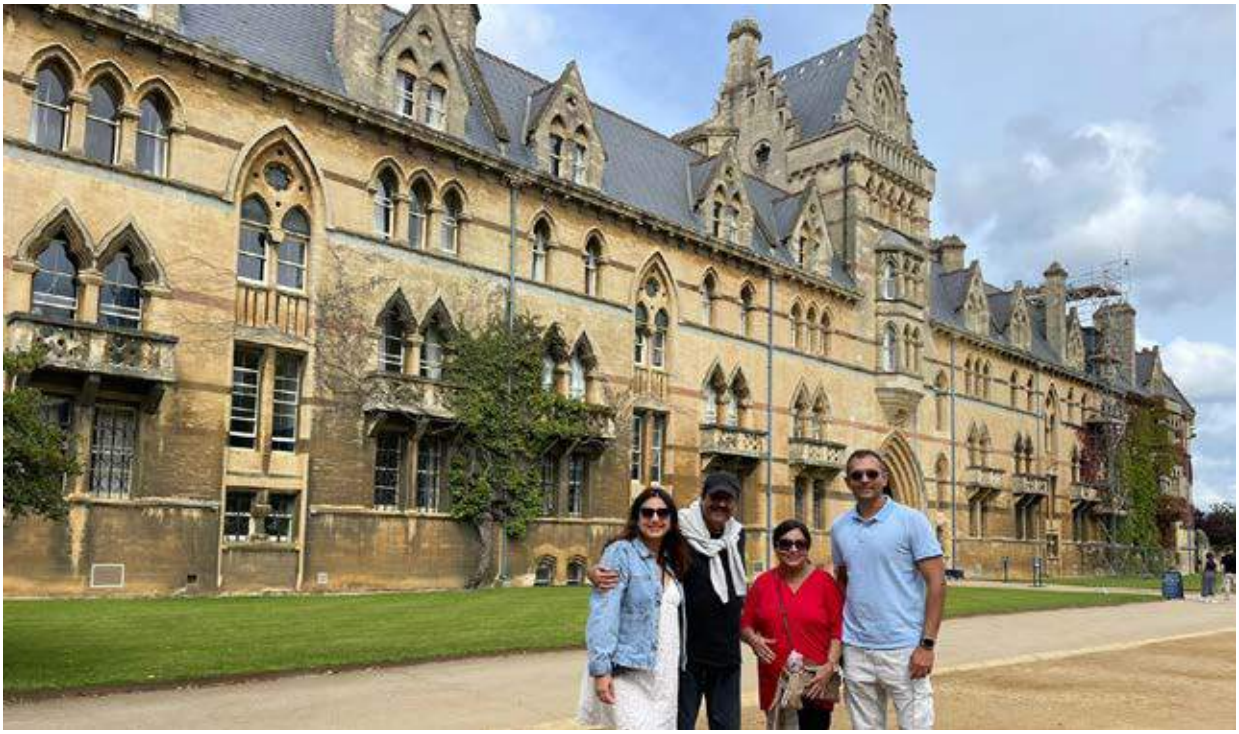

सकता है कि मुझे इतना विस्तार से पता भी नही चलता। एक दिन रात्रि में पड़ोसी की तबियत बिगड़ गयी। रात्रि में 10 मिनट के अंदर ही एम्बुलेंस में दो डॉक्टर 2 असिस्टेंट आये। सभी टेस्ट अपने साथ लाई मशीनों से उन्होंने घर पर ही सारे टेस्ट निकाल दिए। रिपोर्ट देखकर हॉस्पिटल ले जाकर भर्ती किया। इतनी त्वरित मेडिकल सेवा देखकर मैं चकित रह गयी। सरकार की ओर से सभी का फ्री हेल्थ इंशोरेन्स पेंशन, सभी उपलब्ध है।

प्रदूषण पर नियंत्रण : प्रदूषण रोकने के लिए वहां की सरकार ने पूरे शहर में यात्रा के लिए एयर कंडिशन बस, मेट्रो, लगजरी टैक्सी, ट्रैन आदि की उत्तम व्यवस्था की है पार्किंग बहुत महंगी कर दी है। गाड़ी खरीदने की शर्तें व नियम कड़े है। इसी लिए जिनके पास गाड़ी है वे भी सरकारी यातायात के साधन इस्तेमाल करते है। इसी लिए सड़के खाली और प्रदूषण का न्यूनतम स्तर है। प्रदूषण का स्तर कम करने के लिए वहाँ सरकार द्वारा बहुत दूर तक फैले घने वृक्षो से युक्त पार्क बनाये गए है एक तो वहाँ की इतनी कम जनसंख्या ऊपर से दूर दूर तक फैली हरियाली, साथ ही नाममात्र का ट्रैफिक, कुल मिलाकर सभी प्रदूषण के स्तर को न्यूनतम करने में सक्षम थे।

वसु काल उपादत्ते काले चायं विमुन्चते।
सम सर्वेषु भुतेषु प्रतपन सूर्यवद विभु।

भाव–जिस प्रकार सूर्य आठ मास तक जल को वाष्पित रूप में ग्रहण करता है और वर्षा ऋतु में वापस पृथिवी पर ही लौट देता है उसी प्रकार राजा पृथु नागरिकों से कर अवश्य ग्रहण करेगा परंतु आवश्यकता अनुसार पुनः लोकहित में सहस्त्रो गुना करके वापस कर देगा।

इसी प्रकार लंदन में भी मैंने देखा कि वहाँ पर भी इनकम टैक्स अवश्य लिया जाता है परंतु जनसंख्या बहुत कम होने के कारण सरकार ने लोगो को अनेको सुविधाएं प्रदान की है।

1 मुफ्त स्वस्थ सेवा, 2 मुफ्त स्वस्थ बीमा, 3 वृद्धावस्था पेंशन ताकि सभी वृद्ध जन जीवन के अंतिम पड़ाव की यात्रा भी गरिमापूर्ण तरीके से कर सके ।

4 बच्चों की मुफ्त शिक्षा

5 अधिकांश स्थानों पर सीनियर सिटीजन की फ्री एंट्री ।

दर्शनीय स्थल : लंदन में अनेको दर्शनीय स्थल है जैसे – बिग बैंग, हेनरी पैलेस। ओल्डेस्ट चर्च, रिचमंड, ओपेरा शो। इन सभी स्थल भ्रमण का हमने भरपूर आनंद लिया।

ईश्वर की कृपा से अनेको देशों : रोम (इटली), पेरिस, युनाइटेड किंगडम, एम्स्टर्डम (हॉलैंड), चेक रिपब्लिक, वेनिस (ईटली), वेटिकन सिटी, अमेरिका, सिंगापुर, मलेशिया, दुबई आबूधाबी, नेपाल, भूटान, स्कॉटलैंड, ऑस्ट्रिया आदि अनेको देशों की यात्रा करने का मुझे अवसर मिला वहां की संस्कृति, खानपान, दर्शनीय स्थलों की देखने का अवसर मिला। फिर भी मैं गर्व से यही कहूंगी –

भाति मे भारतम
भूतले भाति मे नारतम भारतम।
मुझे भारत प्रिय लगता है।
सम्पूर्ण पृथ्वी पर भारत जैसा कोई देश नही।

मेड़ता की मीरा

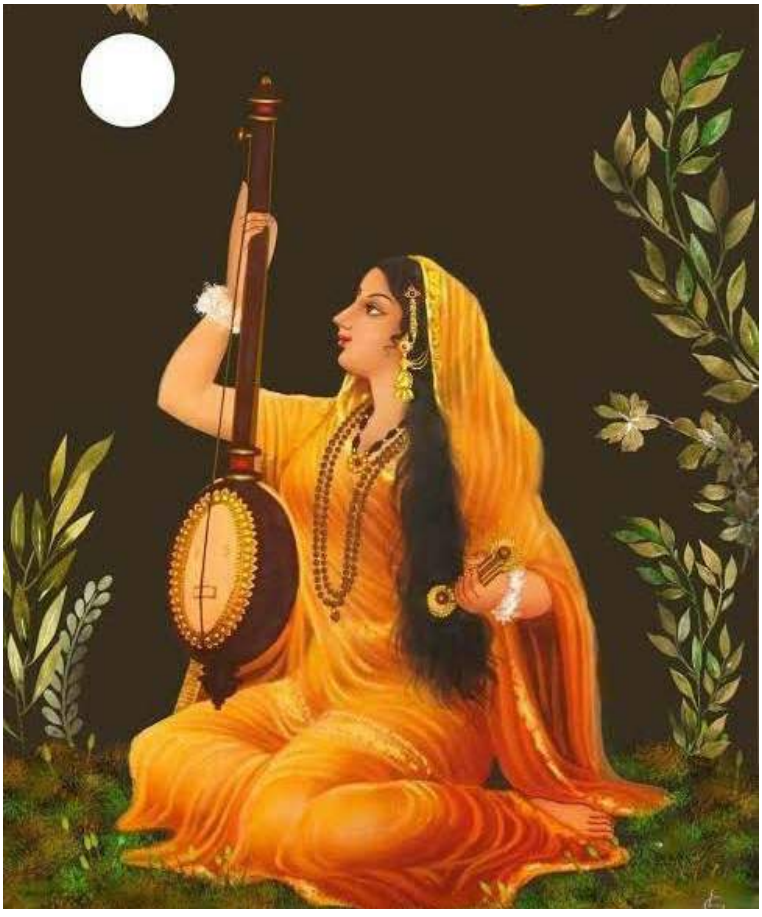

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

राजस्थान के मानचित्र की हृदस्थली में बसा जिला नागौर में एक पुरातन शहर मेड़ता है जिसे मीरा नगरी भी कहतें हैं। मेडता रोड जंक्शन से दिल्ली, हावड़ा, लखनऊ, जयपुर, बीकानेर, कोटा, जोधपुर की ओर जाने वाली रेलवे लाइन से 14.50 किलोमीटर की दूरी पर 26.5 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा 70.05 डिग्री पूर्वी देशांतर पर स्थित है।

मेड़ता नगर की रचना करीब 2025 वर्ष पूर्व 'मानधाता नामक नृपति' ने सत्ययुग में 'मानधातृपुर' नाम से की थी। मेड़ता प्रथम मान्धातृपुर फिर मेदिनीपुर बाद में मेड़न्तक, मेरुतक, महारेता, मीरता तथा अन्त में मेड़ता के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 725–40 ईसवी के शासक नागभट्ट प्रथम की राजधानी मेड़ता थी। बादशाह शेरशाह सूरी, महान सम्राट अकबर एवं देशी–विदेशी राजा महाराजाओं का यह युद्ध क्षेत्र भी रहा है तो भक्ति रस की धारा में समस्त उत्तरी भारत को आप्लवित कर देने वाली विश्वप्रसिद्ध भक्तिमणि मीरा की क्रीडास्थली भी रहा है।

मीराबाई का जन्म जोधपुर नगर के संस्थापक राव जोधाजी राठौर के कुल में हुआ था। राव जोधाजी की 14वीं रानी सोनगरी चंपा कंवर से दूदा एवं बरसिंह का जन्म हुआ। राव जोधा ने इन दोनों पुत्रों को संवत 1546 में मेड़ता की जागीर सौंपी। बड़े होने के नाते दूदा मेड़ता परगने के राव दूदा कहलाए। इन्होंने मेड़ता को स्वतंत्र राज्य का स्वरूप देकर मेड़ता शहर का पुनः निर्माण करवाया। मौजूदा दूदा सागर, जिसके निकट बलदेव राम पशु मेला लगता है, इन्होंने ही खुदवाया था तथा राजभवन आदि का निर्माण करवाया था।

राव दूदाजी द्वारा निर्मित चारभुजा का मंदिर, जिसमें गिरधर गोपाल की मूर्ति विद्यमान है जिसकी आराधना मीराबाई किया करती थी। इसी मूर्ति के समक्ष बैठकर मीराबाई अपने

बाल्यकाल में उसका श्रृंगार कर गिरधर गोपाल में लीन होकर गाया करती थीं और मूर्ति को साक्षात रुप से भोग लगाकर ही जलपान ग्रहण करती थीं।

राव दूदाजी के द्वितीय पुत्र रतनसिंहजी कड़की (पाली) में राजभवन का निर्माण करवाकर निवास कर रहे थे। तब इसी राजभवन में रतनसिंहजी की पत्नी वीर कंवरी ने आसोज (आश्विन या क्वार मास) शुक्ल पूर्णिमा संवत 1560 के दिन शुभमुहूर्त में मीराबाई को जन्म दिया। मीराबाई का मुख माहिर (सूर्य) के समान चमक रहा था इसलिए नामकरण 'महिरा बाई' किया गया जो अपभ्रंश होकर मीराबाई हो गया।

मीराबाई का जन्म कुड़की ग्राम में हुआ था जो उस समय मेड़ता राज्य में शामिल था। मेड़ता भी पूर्व में राजस्थान का एक छोटा राज्य ही था। संपूर्ण विश्व मेड़ता को मीरा की जन्मस्थली मानता है। गीतों और भजनों में भी 'मीरा मेड़तणी' गाकर संबोधित किया जाता है। 'म्हे तो गोविंद द्वारा गुण गास्या म्हारी माय' आध्यात्मिक जीवन को यथार्थता की ऊंचाइयों को स्पर्श करने वाली भक्त शिरोमणि मीराबाई की मेड़ता क्रीडास्थली है। यहां पलकर मीराबाई बड़ी हुई थी। राव दूदा के ज्येष्ठ पुत्र और मेड़ता के स्वामी वीरमदेव ने अपने कनिष्ठ भ्राता रतन सिंह की एकमात्र पुत्री मीरा का लालन-पोषण अपने ज्येष्ठ पुत्र जयमल के साथ अपने पिता राव दूदा के सानिध्य में किया था।

विक्रम संवत 1773 में मीरा का विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के ज्येष्ठ युवराज भोजराज के साथ हुआ। मीरा के पिता रतन सिंह को कुड़की की जागीर उनके जन्म के पश्चात विक्रम संवत 1572 में प्राप्त हुई थी। वह स्वयं 'मीरा' की 'परची' के उद्धरणों द्वारा यह प्रमाणित होता है। बाबर के विरुद्ध महाराजा सांगा द्वारा लड़े गए प्रसिद्ध युद्ध में रतन सिंह वीरगति को प्राप्त हो गए।

यह महासमण विक्रम संवत 1584 में हुआ था। भोजराज द्वारा प्रश्रय दी गई मीरा को उनके मृत्यु उपरांत महाराजा विक्रमादित्य द्वारा मीरा प्रताड़ित की गई। वह अपने भक्तभाव में लगी रही तथा चित्तौड़ के द्वितीय जौहर शाके पूर्व ही वहां से चली आई। विक्रम संवत 1593 (ईसवी सन् 1536) में राव मालादेव द्वारा मीरा के बड़े पिता वीरमदेव को मेड़ता से निष्कासित करने पर ही मीरा को भी अलग कर दिया।

मीरा की याद को चिरस्थाई करने के लिए प्रतिवर्ष करीब लाखों दर्शनार्थी गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र आदि राज्यों से यहां पहुंचते हैं। यात्रियों की सुख- सुविधा के लिए दो धर्मशालाएं, गेस्ट हाउस एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन की कई होटलें बनी हुई है। भारत की प्रथम रेल बस मेड़ता रोड एवं मेड़ता सिटी के बीच दिन में 10 बार यात्रियों को लेकर आती है और 10 बार वापस जाती है।

मीरा मूलतः एक कवयित्री थी। उसकी भक्ति सगुण थी। वह लोक जागरण की कवयित्री भी थी। पहली बार उसने नारी स्वतंत्रता की अलख जगाई थी। वह नारीमुक्ति की प्रथम नेत्री थीं। विद्रोहिणी थीं। लोक प्रतिबद्धता थी। क्रुर सामन्ती परिस्थितियों में मीरा ने सामंत विरोधी क्रांति का बीज रोपा था। उस परंपरा को विकसित करने के लिए मेड़ता के प्रसिद्ध चारभुजा मंदिर में प्रतिवर्ष मीरा जयंती महोत्सव मनाया जाता है। पिछले 75 वर्षों से यह क्रम जारी है। इस अवसर पर अखंड हरिकीर्तन के अतिरिक्त विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होता है। इस अखंड कीर्तन एवं उत्सव में कई भजन कीर्तन दल भाग लेते हैं। श्रवण शुक्ल एकादशी पर आकाशवाणी के कलाकारों द्वारा 'भक्ति निशा' कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। इसके साथ ही दर्शन प्रदर्शनी का भी आयोजन होता है।

अंतिम दिन हवन एवं मीरा के आराध्य देव गिरधर गोपाल की शोभायात्रा शहर के मुख्य मार्ग से निकाली जाती है। इस महोत्सव में देशी पर्यटकों के अलावा विदेशी सैलानी भी आते हैं। ■

लघुकथा

रखवाली

दया शर्मा
स्वतंत्र लेखन
शिलांग, मेघालय

'अम्मा, आज तो आप बहुत खुश नजर आरही हैं। क्या बात है।' रितु ने दादी माँ के कमरे में घुसते ही कहा । 'रितु तुम्हें नही मालूम क्या। मेरी जेठानी यानि तुम्हारी बड़ी दादी माँ के पोते की शादी है सो हम सब शादी में शामिल होने के लिए दिल्ली जा रहे हैं। वहाँ हम सब बहुत मजा करने वाले हैं।' अम्मा ने अपनी खुशी जाहिर की। 'अम्मा जो जो कपड़े लेकर जाने हैं बक्से में सब ठीक कर लो।' वही तो कर रही हूँ रितु बेटा। अच्छा तू बता शादी वाले दिन सलवार कमीज डालूँ या साड़ी? 'अम्मा ने बहुत उत्सुकता से रितु से पूछा।' अम्मा आपको तो दोनों ही पोशाक जँचती हैं। कोई भी रख लो। अच्छा अम्मा मैं भी अपने कपड़े ठीक कर आऊँ।' जैसे ही रितु कमरे से बाहर जाने के लिए मुड़ी तभी उसे मम्मी-पापा कमरे में आते दिखे। रितु भी वहीं रुक गई । आते ही पापा अम्मा से बोले, 'माँ आपको तो पता ही है कि ताई जी के पोते की शादी है सो हम सब कल सुबह दो चार दिन के लिए शादी में शामिल होने के लिए निकल जाएंगे। घर में आपकी जरूरत का सारा समान रखवा दिया है। शान्ता बाई झाड़ू पोचा कपड़ा बर्तन सब कर जायेगी। बस आप बाहर कहीं मत जाना। आज. कल सुना है चोरियां भी बहुत हो रही हैं। अच्छा माँ तो अभी हम चलते हैं कल सुबह जल्दी निकलना भी है। यह कहकर रितु के मम्मी-पापा दोनों कमरे से बाहर निकल गये। रितु मूक खड़ी दादी को देख रही थी और दादी रितु को।

राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल

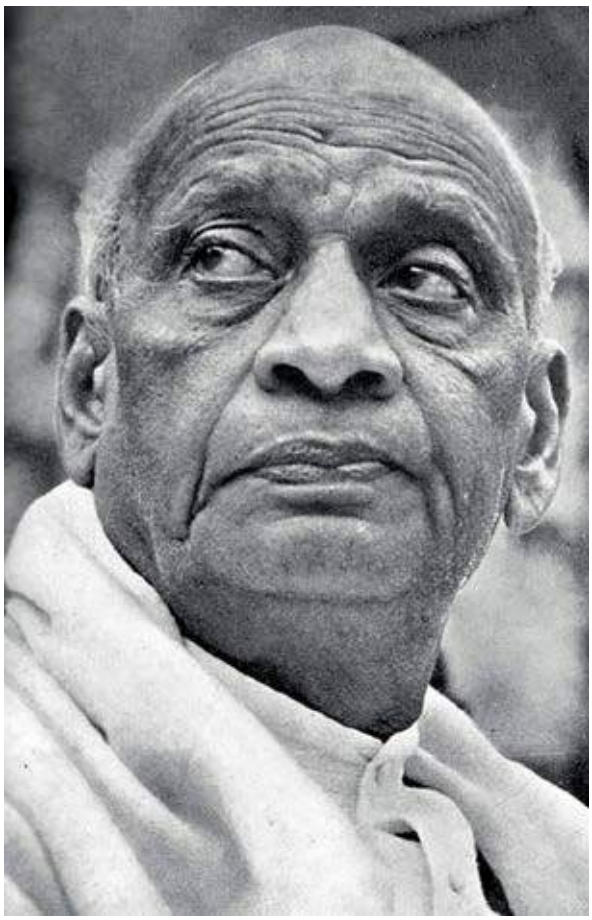

श्रीमती शांति तिवारी
जगदलपुर, जिला (बस्तर)
छत्तीसगढ़

अंग्रेजों ने 1942 में भारत छोड़ने का मन बना लिया था और इसके साथ ही कुछ भारतीय रियासतें अपने पुराने समय को स्मरण कर प्रफुल्लित थी कि अब उन्हें वही पुराना वैभव मिलेगा जिसमें उनका अपना स्वतंत्र राज्य था और उनकी इच्छा ही सर्वोपरि हुआ करती थी, उनका ही शासन चलता था। ऐसे कठिन समय में 30 अक्टूबर 1875 को जन्मे देश के प्रथम गृहमंत्री के साथ ही प्रथम उप प्रधानमंत्री एवं अत्यंत दृढ़ इच्छा शक्ति वाले जिस राष्ट्र पुरुष ने 565 देसी रियासतों सहित कश्मीर को भारतीय संघ में सम्मिलित कर सशक्त भारतवर्ष की नींव रखी, आइये उनके बारे में कुछ जानते हैं।

1947 के बाद का यह वह समय था जब देश एक और तो सांप्रदायिक सौहार्द को तरस रहा था दूसरी ओर हैदराबाद, जूनागढ़, जम्मू–काश्मीर, भोपाल जैसे कुछ राज्य एक स्वतंत्र राष्ट्र बनने का स्वप्न संजो चुके थे।

ऐसे समय में बरदौली कांड से सरदार की उपाधि पा चुके, लौह पुरुष के नाम से प्रसिद्ध पाने वाले सरदार वल्लभभाई पटेल ने इन सभी राज्यों को भारत में मिलने का बीड़ा उठाया। जूनागढ़ और भोपाल को तो उन्होंने मिला लिया, किंतु हैदराबाद में निजाम की जिद के कारण जनता की राय मांगी गई जिसमें 97: जनता ने भारत में विलय की स्वीकृति दे दी। परिस्थिति यहां तक बनी कि आर्य–समाज के आंदोलन के बाद हैदराबाद के निजाम ने हैदराबाद छोड़ दिया।

जम्मू–काश्मीर के राजा हरिसिंह भी अपना स्वतंत्र देश चाहते थे। दूसरी और पाकिस्तान की आंख भी जम्मू–काश्मीर पर थी। 22 अक्टूबर 1947 को काश्मीर में पाकिस्तान की शह पर कबीलाई हमला हुआ। कबीलाई कश्मीर में निरंतर आगे बढ़ते जा रहे थे। करो या मरो

की इस कठिन बेला में राजा हरिसिंह ने सरदार पटेल को काश्मीर बचाने का संदेश भेजा। पटेल ने इसी शर्त पर 27 अक्टूबर को सेना भेजी जब राजा हरिसिंह ने काश्मीर के भारत में विलय की शर्त को स्वीकार किया। भारत और पाकिस्तान की सेना के मध्य युद्ध हो रहा था भारतीय सेना निरंतर आगे बढ़ रही थी कि देश के प्रधानमंत्री ने अचानक रेडियो पर एक तरफ युद्ध विराम की घोषणा कर दी और काश्मीर विवाद सुलझाने का दायित्व संयुक्त राष्ट्र संघ को दे दिया। पाकिस्तान तब से अब तक काश्मीर में जनमत संग्रह की मांग करता रहा है। तत्कालीन परिस्थितियों के कारण वहां संविधान की धारा 370 लगाई गई। धारा 370 के इस प्रावधान में सरदार पटेल ने यह प्रावधान रखवाया की सरकार जब चाहे धारा 370 को समाप्त कर सकती है, जिसे लगभग 70 सालों के बाद अब खत्म किया गया।

काश्मीर अब भारतीय गणराज्य का एक अंग है, वहां कोई भी भारतीय निवास कर सकता है। युद्ध–विशेषज्ञों का मानना है कि यदि उस समय युद्ध विराम नहीं किया गया होता तो हमारी सेना लाहौर और कराची तक पर कब्जा कर लेती, क्योंकि युद्ध विशेषज्ञों के मतानुसार विजय प्राप्त कर रही सेना कभी युद्ध विराम के पक्ष में नहीं रहती। परिणाम स्वरुप हम आज तक पाक अधिकृत काश्मीर को पाकिस्तान से मुक्त नहीं कर पाए हैं।

यूरोप में द्वितीय विश्वयुद्ध 1939 से 1945 तक चला। इस युद्ध में भारतीय सेना ने अंग्रेजों की सहायता की थी। वर्ष 1942 से ही अंग्रेजों को यह आभास हो गया था कि वह लंबे समय तक भारत को अपने अधीन नहीं रहे रख पाएंगे। 1947 में अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा, किंतु यहां भी मोहम्मद अली जिन्ना के माध्यम से अलग मुस्लिम राष्ट्र की मांग करवा कर जाने से पहले अंग्रेजों ने हमारे देश के तीन टुकड़े कर दिए भारत का संविधान बनाने के लिए बनी संविधान सभा ने भारत का संविधान 26 नवंबर 1949 को प्रस्तुत किया जिसे 26 जनवरी 1950 को देश में लागू किया गया। इस संबंध में बनी कार्य समिति का बहुमत देश की अखंडता को बचाए रखने वाले लोह पुरुष के रूप में विख्यात हो चुके सरदार वल्लभभाई पटेल को देश का प्रधानमंत्री बनाए जाने के पक्ष में था किंतु यह क्यों संभव नहीं हो पाया इस पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है, और शायद भविष्य में भी इस पर लिखा जाता रहेगा किंतु दिनांक 15 दिसंबर 1950 को अनंत में विलीन होने के पूर्व देश की एकता और अखंडता के लिए समर्पित अपने आगाध प्रेम और समर्पण–भाव से पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने वाले लौह–पुरुष का यह देश चिर–ऋणि रहेगा।

चरित्र एक सर्वोच्च संपदा

– योगी शिवनन्दन नाथ

मनुष्य की आंतरिक शक्तियों के विकास में सर्वाधिक भूमिका सच्चरित्रता की होती है। संसार में चरित्रवान व्यक्ति अप्रतिष्ठा, तिरस्कार, अथवा किसी भी प्रकार की भय की शंका से मुक्त विचरण करता है। ऐसे व्यक्ति की आत्मा सच्चरित्रता के बल सेआत्मविश्वास से परिपूर्ण होती है। निर्धन एवं साधन हीन होते हुए भी वह धनवानो के मध्य समुचित सम्मान प्राप्त करता है।

धन एवं विद्या के बिना मनुष्य निर्वाह कर सकता है किंतु चरित्रहीन होने पर वह समाज में सदैव हेय एवं घृणित ही बना रहता है। स्वार्थ सिद्धि के लिए वे जीवन में कुछ भी कर सकते हैं, किसी भी स्तर तक गिर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति के द्वारा किए गए सत्कर्म भी समाज में संदेह का विषय होते हैं।

उच्च चरित्र को जीवन में अपनाए रहने की महत्ता को जो समझते हैं, वे आत्मिक संतुष्टि, लोक सम्मान के साथ–साथ दैवीय अनुग्रह के भी पात्र होते हैं। महापुरुषों के पास सबसे बड़ी पूंजी उनके चरित्र की ही होती है, जिनके आधार पर वह अपने जीवन में निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ते रहते हैं। मनुष्य के जीवन में चरित्र की महत्ता धन–वैभव से कहीं अधिक बढ़कर है।

कहा भी गया है–

वृत्ति यत्नेन संरक्षेत् वित्तमेति च याति च ।

अक्षीणो वित्ततरू क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतरू ।। *– महाभारत*

चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए, धन तो आता–जाता रहता है। धन –हीन व्यक्ति, हीन नहीं होता, किंतु चरित्र –हीन हो जाने पर पूर्णत नष्ट हो जाता है।

लोभ पाप का बाप हैं

डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)
संरक्षक शाकाहार परिषद्
भोपाल

दस लक्षण धर्म में पहले दिन उत्तम क्षमा भाव रखते हुए अपने भावो में निर्मलता लाते हुए अपनी मान कषाय को त्यागते हुए मार्दव धर्म को अंगीकार करते हुए अपने भावो में सरलता का भाव लाना हैं। क्रोध, मान, माया रुपी कषायों से मुक्त होते हुए हमें अब जो लोभ रुपी कषाय हैं उससे मुक्त होने के लिए शौच धर्म को अंगीकार करना हैं, अपनाना हैं।

उत्तम शौच धर्म

प्रकर्ष प्राप्त लोभाननिवृत्तिः।

प्रकर्षप्राप्त लोभ का त्याग करना शौच हैं। चित्त से जो परस्त्री और परधन की अभिलाषा ना करता हुआ षट्काय के जीवों की हिंसा से रहित होता हैं, इसे ही दुर्भेद्य अभ्यन्तर कलुषता को दूर ओर करने वाला उत्तम शौच धर्म कहा जाता हैं, इससे भिन्न दूसरा शौच धर्म नहीं हैं। आत्यंतिक लोभ की निवृत्ति शौच हैं व शुचि का भाव वा कर्म उत्तम शौच हैं। धनादि वस्तुओं में "ये मेरे हैं "ऐसी अभिलाषा बुद्धि ही सर्व संकटों में मनुष्य को गिराती हैं। इस ममत्व को हृदय से दूर करना ही लाघव (शौच) धर्म हैं। लघु का भाव लाघव हैं, व्रतों में अतिचार नहीं लगाना इसी का नाम शौच हैं, प्रकर्षता को प्राप्त लोभ को दूर करना ही शौच हैं। समस्त पदार्थों में तथा अपने सुखादि में पूर्ण संतोष धारण करना शौच धर्म हैं।

प्रकार : लोभ चार प्रकार का होता हैं 1. जीवित का लोभ, 2. आरोग्य का लोभ, 3. पंचेन्द्रिय का लोभ, 4. भोगोपभोग का लोभ

ये चारो ही लोभ दो –दो प्रकार के होते हैं। स्वजीवन लोभ– परजीवन लोभ ,स्वारोग्य लोभ –पर आरोग्य लोभ, स्वइन्द्रिय लोभ –पर इन्द्रिय लोभ ,स्व उपभोग लोभ –पर उपभोग लोभ। अपने जीवन आदि की आकाँक्षां रूप चार प्रकार के लोभ की निवृत्ति लक्षण वाला शौच भी चार प्रकार का जानना।

जो इन्द्रियों को जीतने वाले निर्लोभी हैं ,उन्ही के मोक्ष प्राप्त कराने वाले परमोत्कृष्ट शौचधर्म की प्राप्ति होती हैं, जिनका हृदय कामवासना में लगा हुआ हैं उनको शौच धर्म की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती हैं।

जो इन्द्रियों को जीतने वाले निर्लोभी हैं, उन्ही के मोक्ष प्राप्त कराने वाले परमोत्कृष्ट शौच धर्म की प्राप्ति होती हैं, जिनके हृदय कामवासना में लगा हुआ हैं उनको शौच धर्म की प्राप्ति कभी नहीं होती हैं। जो इन्द्रियासक्ति से रहित हैं, समस्त पदार्थो से निःस्पृह हैं, समस्त जीवों की दया पालन करते हैं, इस प्रकार मन को निष्पाप बनाकर लोभ रूपी शत्रु का नाश करने वाले मुनिराज के शौचधर्म होता हैं। जो परम मुनि इच्छाओं को रोककर और वैराग्य रूप विचारों से युक्त होकर आचरण करता हैं उसके शौच धर्म होता हैं। जो समभाव और संतोष रूपी जल से तृष्णा और लोभ रूपी मल के समूह को धोता हैं तथा भोजन की गृध्धि नहीं करता उसके शौच धर्म होता हैं।

लोभ करने पर पुण्य रहित मनुष्य को द्रव्य नहीं मिलता हैं और लोभ नहीं करने पर भी पुण्यवान को धन की प्राप्ति होती हैं। इसलिए धन की प्राप्ति में आसक्ति कारण नहीं, परन्तु पुण्य ही कारण हैं। ऐसा विचार कर लोभ का त्याग करना चाहिए। इस त्रैलोक्य में मेने अनंत बार धन प्राप्त किया हैं, अतः अनंतबार ग्रहण कर त्यागे हुए धन की विषय में आश्चर्यचकित होना व्यर्थ हैं। इस लोक और परलोक में यह लोभ अनेक दोषों को उतपन्न करता हैं, ऐसा समझकर लोभ कषाय पर विजय प्राप्त करना चाहिए। शुचि आचार वाले के गुण और लोभ के दोषों का विचार करके शौच धर्म धारण करना चाहिए।

शौच धर्म के गुण –

- शुचि आचार वाले निर्लोभी व्यक्ति इस लोक में सर्व लोग सम्मान करते हैं। विश्वास आदि उसका आश्रय करते हैं।
- निर्लोभी को तीनों लोकों में उत्तपन्न होने वाली महालक्ष्मी प्राप्त होती हैं।
- उसका यश तीन लोक में फैल जाता हैं और मोक्षलक्ष्मी स्वयं उसको वरण कर लेती हैं।
- निर्लोभी के शरीर पर मुकुटादि होने पर भी पापबंध नहीं होता।
- संतुष्ट मनुष्य चाहे दरिद्र हो तो भी उसको समाधान वृत्ति प्राप्त होती हैं।
- संतोष वृत्ति से ही समाधान वृत्ति रहती हैं, द्रव्य के आधीन नहीं रहती।

लोभ के दोष –

- लोभी को दरिद्रता, घोर दुःख एवं अनेक बार दुर्गतियाँ प्राप्त होती हैं।
- लोभी के महापाप, निंद्य अशुभ ध्यान होता हैं एवं अशुभ कर्मो का बंध होता हैं।
- लोभ से मुझे यह मिलेगा ,वह मिलेगा आदि आशा वृद्धिगत होती हैं।
- लोभ के कारण मनुष्य महापाप करता हैं एवं बंधुओं की भी उपेक्षा कर देता हैं।
- तृण के लोभ में भी पाप उत्तपन्न होता हैं तो सारयुक्त वस्तु के लोभ से पाप नहीं होगा ?
- परिग्रह के जितने दोष हैं वे सब लोभी के होते हैं।
- लोभी के त्रैलोक्य की सम्पत्ति मिलने पर संतोष नहीं होता।
- जैसे –जैसे शरीर को सुख देने वाली वस्तु प्राप्त होती हैं उसका लोभ बढ़ता ही जाता हैं।
- लोभ से ही मैथुन, हिंसा आदि सभी पाप करता हैं।

जो विवेक– विकल प्राणी मनुष्य भव में लोभ का कषाय की प्रबलता के कारण अपने स्वार्थ– साधन के लिए दूसरों की श्रमसाध्य सम्पत्ति को चुराते हैं वे भी मरकर जब त्रियंच गति में पदार्पण करते हैं तो बहेलिये आदि मृगयाविहारी लोग पहले तो उनके शरीरों को अपने जालों में फंसाकर अच्छी तरह बाँध लेते हैं और बाद में मार–मार कर उनके मांस से अपनी भूख को शांत करते हैं।

जिस प्रकार लोह पिंड के संसर्ग से अज्ञानी लोगों से पूज्य देवता रूप में प्रसिद्ध अग्नि घन के घातों से पीटी जाती हैं उसी प्रकार लोभादि कषाय से परिणत परमात्मा की भावना से रहित (मिथ्यादृष्टि) जीव नरकादि गतियों में महान दुखों को भोगता हैं।

पवित्र स्वभाव को छूकर जो पर्याय स्वयं पवित्र हो जाय, उस पर्यायका नाम ही शौचधर्म हैं।

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देह सों।
शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में।।
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा–पास महा दुखदानी, सुख पावै संतोषी प्रानी।।
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभाव तै।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि दोष स्वभावतैं।।
ऊपर अमल मल भरयो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुण थैली, शौच – गुण साधु लहै ।।

इस प्रकार हम लोभ के क्या क्या अनर्थ नहीं करते। आज धन, वैभव के लिए हम कितना छलकपट करते हैं पर जिसके पुण्य का होता हैं उसी को मिलता हैं। पर हर मनुष्य पूरे विश्व का अधिपति बनना चाहता हैं। जीवन में सरलता के साथ रहना ही शौच धर्म हैं। ही प्रभु सबके जीवन में शौच धर्म प्राप्त हो। ■

आपके विचार ही हर चीज का प्राथमिक कारण हैं।

–रोंडा बर्न

यात्रा वृत्तांत

माँ पीतांबरा पीठ (दतिया) दर्शन

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
अध्यक्ष – बृजलोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी (न्यास)
आगरा, उत्तर प्रदेश

पिछले कुछ महीनों से जीवन में अशांति ने आ घेरा है। मैं शांति प्राप्ति के लिए अक्सर धार्मिक साहित्य का अध्ययन तो हमेशा से ही करता रहा हूं और आज भी करता हूं। मैंने सनातन–वैदिक साहित्य के अलावा अन्य धर्मों के साहित्य का भी खूब अध्ययन किया है, इसलिए मैं इंसानियत से बड़ा कोई धर्म नहीं मानता। मैं शुद्ध–सरल, प्रेमपूर्ण शान्ति प्रिय जीवन जीने की हमेशा कोशिश करता हूं। परंतु कभी–कभी ऐसा समय आ जाता है, जब घोर अशांति मुझे आ घेरती है। पिछले काफी दिनों से आस–पड़ोस के विधर्मियों ने बहुत परेशान किया। इस बीच मुझे अपनी शांति, प्रेम, भाईचारे को खूंटी पर टांगने के लिए मजबूर होना पड़ा। विधर्मियों को उन्हीं की भाषा में समझाना पड़ा। उक्त घटनाक्रम के कारण मन कुछ – कुछ अशांत था, इसलिए एक धार्मिक यात्रा की योजना बनाई।

मैं सपत्नीक 24 अगस्त 2023 को आगरा छावनी से दोपहर को वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी मेमू एक्सप्रेस से अपनी धार्मिक यात्रा के लिए मध्य प्रदेश के दतिया शहर के सफर पर निकल पड़ा। रेलगाड़ी में भीड़भाड़ कम ही थी, इसलिए सफर आसान और आनंदमय हो गया था। प्रकृति के सुंदर नजारों का लुफ्त उठाते हुए हमारी यात्रा हो रही थी। करीब 8 बजे हम दतिया शहर पहुंच गये। अंधेरा हो चुका था। हमने स्टेशन से बाहर निकलकर ऑटो की तलाश की, एक ऑटो वाले भाई साहब ने जानकारी दी कि 5 मिनट की दूरी पर आपको

रात्रि विश्राम के लिए होटल या धर्मशाला मिल जायेगी। हम पैदल ही चल पड़े... स्टेशन रोड पर श्री गोविंद धर्मशाला दिखी। मैं बात करने अंदर चला गया और बात बन गई। कमरा संख्या 11 खाली था और अंतिम कमरा बचा था। सुबह 10 बजे तक हम कमरे के मालिक बन गये। हाथ,पैर, मुंह धोकर हम निकल पड़े भोजन की तलाश में। ठीक धर्मशाला के सामने एक शुद्ध शाकाहारी ढाबे पर भोजन किया। और वापिस अपने कमरे में आ गये। सुबह 5 बजे नींद से जाग गए। दैनिक क्रियाओं से फ्री होकर हम तैयार हो गये मां पीतांबरा के सुंदर दर्शन करने के लिए। सुबह 7 बजे हमने धर्मशाला छोड़ दी और एक ई रिक्शा पकड़कर माँ पीतांबरा के श्रीचरणों की ओर निकल पड़े।

कुछ ही समय में मां के धाम हम पहुंच गये, भीड़भाड़ कम थी। गिने–चुने भक्त ही नजर आ रहे थे। प्रसाद व पूजा सामग्री लेकर हम पंक्ति में लग गये। पीले परिधान में मां पीतांबरा के दर्शन करके आत्मा को एक असीम शांति प्राप्त हुई। धाम के अंदर हम काफी समय तक घूमते रहे। धाम की सुंदरता व भव्यता को देखकर मन गदगद हो गया। श्री पीतांबरा पीठ का इतिहास प्राचीन है। माँ धूमावती की सुंदर छवि भक्तों का हृदय प्रफुल्लित कर देती है। पौराणिक कथाओं व मान्यताओं के अनुसार इस पीठ में अधिकतर राजनीति से जुड़े लोग आते हैं। वैसे सामान्य भक्त भी अनगिनत आते हैं। यह पीठ एक ध्यान स्थान (तपस्थली) के तौर पर अधिक प्रचलित है। यहां स्थित श्री वनखंडेश्वर शिवलिंग को महाभारत काल के समकालीन माना जाता है। पीतांबरा पीठ की स्थापना एक सिद्ध संत स्वामी महाराज जी ने 1935 ई. में दतिया के राजा शत्रु जीत सिंह बुंदेला के सहयोग से की थी। माना जाता है कि कभी पीठ के स्थान पर शमशान हुआ करता था। पीठ का राष्ट्र भक्ति व राष्ट्र सेवा से जुड़े कई किस्से प्रचलित हैं। श्री मां पीतांबरा जी को पीला रंग बहुत पसंद है। राजसत्ता सुख प्राप्ति के लिए भक्तों का हमेशा तांता लगा रहता है।

श्री पीतांबरा माई के दर्शन करके हम निकल पड़े बस स्टैंड की तरफ। वहां से हमने श्री बालाजी धाम उनाव के लिए बस पकड़ ली। दतिया के ग्रामीणक्षेत्र के दर्शन करते हुए हम सफर का आनंद ले रहे थे। बरसात का मौसम होने के कारण चहुंओर हरियाली ही हरियाली थी। धान के खेत अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। ग्रामीण जीवन के दर्शन करते हुए हम कब उनाव पहुंच गये पता ही नहीं चला। श्री बालाजी की पूजा अर्चना की और धाम के दर्शन किये। यहां की मान्यता है कि यहां आने से हर तरह का चर्म रोग ठीक हो जाता है। श्री बालाजी धाम उनाव का इतिहास इस प्रकार है – दतिया शहर से 17 किमी दूर स्थित है । यह एक बहुत पुराना मंदिर है। इसे उनाव बालाजी सूर्य मंदिर के नाम से जाना जाता है। यहां दूर–दूर से श्रद्धालु आते हैं। यह धाम 400 वर्ष पुराने इतिहास के लिए जाना जाता है। कहा जाता है कि मंदिर प्रागैतिहासिक काल का है। पहुंज नदी के किनारे पर आकर्षक और सुरम्य पहाड़ियों में स्थित इस सूर्य मंदिर पर सूर्योदय की पहली किरण सीधे मंदिर के गर्भागृह में स्थित मूर्ति पर पड़ती है । यहां आषाढ़ शुक्ल एकादशी को रथ यात्रा का भव्य आयोजन किया जाता है। प्रत्येक रविवार को मेला भी लगता है।

दर्शन करके हम भोजन की तलाश करते हुए उनाव शहर की गलियों में आ गये। एक हलवाई की दुकान पर नाश्ता किया और चढ़ गए बस में, 1 घंटे बाद हम दतिया बस स्टैंड पर थे। वहां से ऑटो रिक्शा में बैठकर सीधे पहुंच गए रेलवे स्टेशन। दोपहर को आगरा की ट्रेन पकड़ी और भीड़भाड़ का लुफ्त उठाते हुए हम शाम को अपने गृह जनपद आगरा के आगरा कैंट पर पहुंच गये। हमारी यह धार्मिक यात्रा पूर्णतः सफल रही। इस यात्रा से हृदय को असीम शांति की प्राप्ति हुई।

गीत

– **भीम सिंह नेगी**
बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश

भारत मेरे चर्चे तेरे
हो रहे संसार में
चंदा मामा डूब गया है
आज तेरे प्यार में

भारत ने इतिहास रचा तो
दुनिया हुई हैरान
ऐसा करिश्मा कर दिखाया
हँस पड़ा आसमान
दुनिया किस्से सुनाने लगी
आज भारत शान में
चंदा मामा डूब गया है
आज तेरे प्यार में

दुश्मन थर–थर काँप उठा है
ताकत देख हमारी
हैरान परेशान हो गयी
देखो दुनिया सारी
भारत अब विश्व गुरु बनेगा
पढ़ लो समाचार में
चंदा मामा डूब गया है
आज तेरे प्यार में

भारत मेरे चर्चे तेरे
हो रहे संसार में
चंदा मामा डूब गया है
आज तेरे प्यार में–2

मधुबाला शांडिल्य
गोंड्डा, झारखंड

बहकते कदम

कदमों का बहकना किसी उम्र पर निर्भर नहीं करता। इसके जिम्मेदार स्वयं कहीं ना कहीं अपने घर वाले ही होते हैं। काम की व्यस्तता में मां बाप इतने मशरुफ है कि आज वो अपने बच्चे को भरपूर मात्रा में समय देना तो बहुत दूर की बात है मिल बैठ कर कुछ पल ही साथ बीता ले, बच्चे के मन की बात समझ लें यही बहुत है। मध्यम वर्गीय परिवार में तो मां बाप के पास अगर समय मिल भी जाए तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वो बच्चों के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल सकते या फिर यूं कहें कि वो खुद चलना नहीं चाहते। वो बच्चों को समझना ही नहीं चाहते। बस हर वक्त अपनी मनमर्जी थोपते रहते हैं।बच्चा क्या सोचता है क्या चाहता है, मां बाप को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता। इन्हें तो बस इनकी मर्जी चाहिए। और समझदार परिवारों के पास शायद वक्त नहीं है .....

पति पत्नी के रिश्ते में भी आज कल बस नाम मात्र के ही रिश्ते की कद्र रह गई है। काम की व्यस्तता कहीं ना कहीं इनके निजी जीवन पर भरपूर मात्रा में अपना असर दिखा रही है। घर के अंदर पति और पत्नी ज्यादातर मुद्दों पर आपस में सुलझने के बजाय उलझते नजर आते हैं। जो कि अपने आप में एक बेहद दुखद स्थिति है। छोटी सी छोटी बातों पर बड़े से बड़े झगड़े बड़े ही आसानी से हो जाते हैं। और प्यार और शांति घर से बाहर की औरतों के साथ बांटते हैं। ठीक इसी तरह पत्नियां भी अपना सुकून घर से बाहर ढूंढती हैं। इन दोनों के रिश्ते में दूरियां कब घर कर जाती है इन्हें पता ही नहीं चलता और जब तक कुछ समझ पाये तब तक पुरी दुनिया उजड़ चुकी होती है। यही हाल परिवार के हर सदस्य के साथ होता है। वो कब एक दूसरे से दूर हो जाते हैं उन्हें कुछ पता ही नहीं चलता। इतनी देर में समय अपना खेल खत्म कर आगे निकल चुकी होती है।और हर रिश्ते बिखर कर चकनाचूर हो जाते हैं और रिश्तों की तलाश हम दुसरों के आगोश में ढूंढ़ते हैं।

घर के अंदर अपने हर रिश्ते को बेपनाह प्यार, मुहब्बत और समय दीजिए। उन्हें एहसास दिलाइए की आप उनके लिए कितने खास हैं वो आपके लिए कितने खास हैं। एक दूसरे का साथ ही सर्वोपरि है। जिन्हें घर के अंदर प्यार मिलता है उनके कदम बाहर कभी नहीं लड़खड़ाते। रिश्ता कोई भी हो, बस खास होना चाहिए। एक दूसरे के दिलों पर राज होना चाहिए।

अगर ऐसा होता है तो यकीन मानिए कोई भी गलत कदम उठाने से पहले आप हजार बार पहले अपनों के लिए सोचेंगे ना की पहले अपने लिए। प्यार भरा एहसास ही हर रिश्ते की डोर है। एहसास जितना गहरा होगा रिस्ते की डोर उतनी ही मजबूत होगी। ये आप पर निर्भर करता है की आप रिस्ते की डोर को मजबुती से थामें रखते हैं या फिर उसे बिखरने को छोड़ देते हैं। कोशिश करें हर एहसास मजबूती से जुड़ा हो। ताकि रिश्ते शिद्दत से निभाए जा सकें।